मैथिली

साहित्य

फकीरमोहन सेनापति

मायाधर मानसिंह

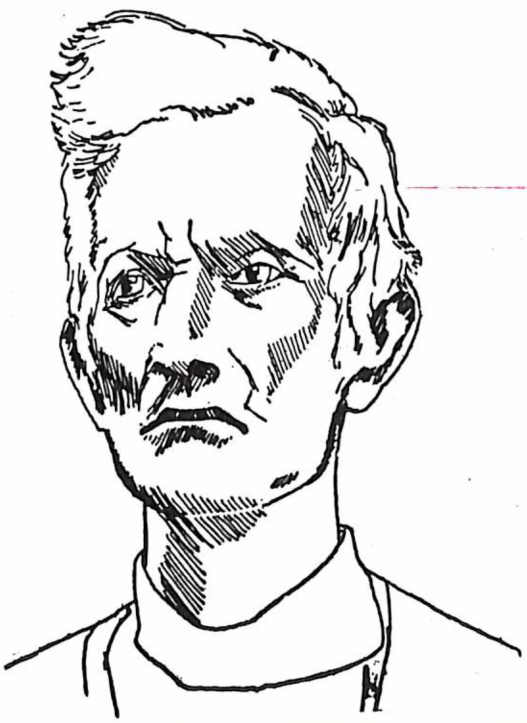

MT
891.451 092
Se 55 M

भारतीय

MT
891.451092
Se 55 M

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपम राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनकालोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिवद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

फकीरमोहन सेनापति

लेखक
मायाधर मानसिंह

अनुवादक
योगानन्द झा

साहित्य अकादेमी

Fakirmohan Senapati : Maithili translation by Yoganand Jha of Mayadhar Mansinha's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (2000), Rs. 25.

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 2000

Library IIAS, Shimla
MT 891.451 092 Se 55 M
00117123

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

शारदा सिनेमा बिल्डिंग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा भवन, चौथा तल, 23 ए/44 डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
सेण्ट्रल कॉलेज कैम्पस, डॉ. वी. आर. अम्बेदकर वीथि, बैंगलोर 560 001
सी. आई. टी. कैम्पस, तारामणी, चेन्नई 600 113

MT
891.451 092
SC 55 M

मूल्य : पचीस टाका

117123
9.12.04
SHIMLA

ISBN 81-260-1010-X

Website : http://www.sahitya-akademi.org

टाइपसेटिंग : पैरागान एण्टरप्राइसेज, नयी दिल्ली 110 002
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली 110 032

विषय–सूची

पुरोवचन

1. मल्लिकाक्षपुरक मल्ललोकनि 9
2. निरसल नेना 11
3. विद्यानुरागी वाल श्रमिक 14
4. शिक्षक, लेखक ओ प्रचारक 19
5. मातृभाषाक संरक्षक 26
6. कुशल प्रशासक 29
7. स्वदेशी सेनाक नायक 38
8. पारिवारिक जीवनक दुःख आ सुख 44
9. महत्त्रयी 48
10. महान कथाकारक नवोत्थान 58
11. विश्वसनीय जीवन-दर्पण 62
12. आह्लादक आधुनिकता 74
13. यथार्थ भारतीय चरित्रक अभ्युदय 79
14. मेघओन जीवनसन्ध्या 85

पुरोवचन

उड़ियो भाषामे एखनधरि फकीरमोहन सेनापतिक कोनो सार्थक जीवनी नहि अछि। श्रेष्ठ जीवनीक तँ कथे कोन ? वरू, अंशे रूपमे सत्य मुदा एकर कारण संभवतः हुनका द्वारा अपन भाषामे रचित अति विशिष्ट आत्मचरित अछि, जे आन लेखकक द्वारा एहि दिशामे प्रयास करबाक दृष्टिञे निषेधात्मक रहल। परन्तु एहि असन्दिग्ध प्रतिभाक जीवनकथासँ जे किछु उजागर होइत अछि तकरा हुनका अथवा जाहि व्यक्ति ओ वस्तुक सम्बन्धमे ओ लिखने छथि, तकरो सम्बन्धमे पूर्ण नहि मानि लेल जयवाक चाही।

सर्वोपरि तथ्य तँ ई अछि जे आत्मचरित चाहे कतवो रोचक किएक नहि हो, योजनावद्ध ढंगसँ लिखल जीवनीक सदृश सम्पूर्ण आयामकेँ चित्रांकित नहि कऽ सकैत अछि आ ने पाठकेकेँ अपेक्षित सूचना दऽ पवैत अछि। तेँ अंग्रेजीमे लिखित ई पुस्तिका फकीरमोहनक साहित्यिक ओ मानवीय व्यक्तित्वकेँ यथासंभव वस्तुनिष्ठतापूर्वक प्रस्तुत करवाक एक गोट विनम्र आ पथप्रवर्त्तक प्रयास थिक। एहिमे फकीरमोहन तथा अन्य लेखकलोकनिक उपलब्ध सामग्रीक उपयोग कयल गेल अछि। साहित्य अकादेमी एहि हेतु धन्यवादक पात्र अछि।

वालासोरक फकीरमोहन साहित्य परिषद द्वारा 1956 मे प्रकाशित स्मारिका फकीरमोहनक व्यक्तित्वक वहुमूल्य भागकेँ आलोकित करैत अछि। एहिमे ओहि महान उपन्यासकारकेँ व्यक्तिगत रूपेँ जननिहार लोकसभक संस्मरण संकलित अछि। मुदा जँ कोनो एकहिटा व्यक्तिकेँ उड़ियामे सेनापतिक अध्ययनक विषयमे अधिकारी ओ प्रशंसनीय मानल जाय तँ हम विना कोनो तारतम्यक डा. नटवर सामन्त रायकेँ इंगित करव। प्रस्तुत पुस्तिकाक पृष्टसभ डा. सामन्त रायक अध्ययन-अनुशीलन ओ उपरिलिखित स्मारिकाक विशेष रूपेँ ऋृणी अछि।

उड़ियाक प्रकाशन गृह मेसर्स कटक स्टूडेंट्स स्टोरक संचालक श्रीअनन्तमिश्र सेहो अतिशय धन्यवादक पात्र छथि। ओ फकीरमोहनक नीक जकाँ संकलित-सम्पादित ग्रन्थ सभक प्रकाशनेटा नहि कयलनि अछि, अपितु फकीरमोहनक आत्मचरितक असंक्षिप्त-असम्पादित रूपकेँ सेहो प्रकाशमे अनलनि अछि, जकरा फकीरमोहनक पुत्र मोहिनी मोहन गंभीरतापूर्वक सोचने विचारने विना पाडि.-छकरि देने छलाह। हम व्यक्तिगत रूपेँ श्रीअनन्तमिश्र तथा कटकक दोसर प्रकाशन गृह मेसर्स ग्रन्थ मन्दिरक संचालक श्री श्रीधरमहापात्रकेँ धन्यवाद दैत छियनि जे फकीरमोहनसँ सम्वद्ध अपन समस्त प्रकाशन हमरा तखन उपलब्ध करौने छलाह, जखन हम एहि असाधारण मानवक छोट सन वृत्तान्त लिखव आरम्भ कयने छलहुँ।

मायाधर मानसिंह

अध्याय 1

मल्लिकाक्षपुरक मल्ललोकनि

फकीरमोहन उड़ीसाक पाइक खंडायत समुदायमे उत्पन्न भेल छलाह। ई समुदाय अदौसँ स्वतंत्र हिन्दू राजालोकनिक अधीन सैन्यकर्म करबाक कारणेँ अपनाकेँ प्रशंसनीय बुझैत छल। एहि समुदायमे एखनो किछु प्राचीन गौरवपूर्ण उपनाम सभ प्रचलित अछि, जेना-मल्ल (पहलमान), सिंह (वनराज), भुजबल (शक्ति सम्पन्न हाथवला), बलिअरसिंह (वलगरलोकनिक बीच सिंह सन), शत्रुसाल (दुश्मनक हेतु काँट) आ दलवहेड़ा (सेनानायक) आदि।

सेनापतिलोकनि

फकीरमोहन सेनापतिक पुरखालोकनि मूलतः केवल मल्ले छलाह। ई लोकनि कटक जिलाक केन्द्रपाड़ा क्षेत्रसँ बालासोर शहरक बाहरी भागमे स्थित मल्लिकाक्षपुर ग्राम चल गेलाह। एतऽ ईलोकनि कोना सेनापतियो कहबऽ लगलाह, से कथा अत्यन्त रोचक अछि। फकीरमोहनक पाँचम पुस्त मे एक गोटे छलाह हनुमल्ल। केन्द्रपाड़ामे हिनका एक गोट पैघ जागीर छलनि। मुदा दुर्भाग्यवश कोनो उत्पातक कारणेँ ई अपन सम्पत्तिसँ वञ्चित भऽ गेलाह आ एकटा साधारण सैनिकक अवसादपूर्ण अवस्थाकेँ प्राप्त कयलनि। शिवाजीक पितामह ओ पिताकेँ जाहि तरहेँ अहमदनगर ओ बीजापुरक मुसलमान बादशाहलोकनिक चाकरी करऽ पड़ल छलनि, ताही तरहेँ हनुमल्लोकेँ अपन पारिवारिक प्रतिष्ठा ओ स्तरीयताक पुनःप्राप्तिक एकमात्र आशा तत्काल सिंहासनासीन मराठालोकनिक चाकरी पकड़ि लेबामे बूझि पड़लनि। अपन विशुद्ध वैयक्तिक गुणक कारणेँ ओ शनैः शनैः उच्चतम पदकेँ प्राप्त कऽ लेलनि। उड़ीसाक मराठा गवर्नर प्रसन्न भऽ हनुमल्ल पर ततेक विश्वास करऽ लगलनि जे हुनका बंगाल ओ उड़ीसाक सीमा प्रदेशमे स्थित व्यूहरचनाक दृष्टिऽे महत्वपूर्ण दुर्गक सम्पूर्ण कार्यभार दऽ देलकनि। संगहि ओ हिनका सेनापतिक मनोमुग्धकारी सम्मानसँ सेहो विभूषित कऽ देलकनि। एहि तरहेँ हनुमल्ल ओ परवर्त्ती पीढ़ीक मल्लिकाक्षपुरक मल्ललोकनि सेनापति कहबऽ लगलाह। तथापि समस्त पारिवारिक-धार्मिक संस्कारमे ईलोकनि एखनो प्राचीन आ मूले उपनामक व्यवहार करैत छथि।

फकीरमोहनक वावी

1803मे वृटिश द्वारा मराठालोकनिसँ उड़ीसाक प्रशासन अपन हाथमे लेवासँ किछुए पूर्व हनुमल्लक पौत्र कुशमल्लक असामयिक मृत्यु भऽ गेल छलनि। ई अपना पाछाँ तरुणी विधवा पत्नी ओ दुइ गोट छोट-छोट वालककेँ छोड़ि गेल छलाह।

फकीरमोहन पर एहि अल्पवयस्का विधवा कुचिला देइक अत्यन्त गंभीर प्रभाव पड़ल छल। फकीरमोहनक सम्पूर्ण रचना-संसारमे एकगोट निःस्वार्थ ओ सेवापरायणा देवीक रूपमे हिनक गहन चित्रांकन भेल अछि। तथापि अपन आत्मचरितमे फकीरमोहन लिखने छथि जे ई एही अल्पवयस्का विधवा कुचिला देइक अतिशय सरल स्वभाव छल जकर कारणेँ एक वेर पुनः मल्ललोकनि वालासोर जिलाक अपन वृहत्तर पैतृक भू-सम्पदासँ वञ्चित भऽ गेल छलाह।

कुचिलादेइक दुइ गोंट वपटूअर सन्तान पुरुषोत्तम आ लक्ष्मणचरणमे छोट भाइ लक्ष्मणचरणकेँ जनवरी 1843मे उत्पन्न फकीरमोहन सन अपूर्व वुद्धिमान व्यक्तिक पिता होयवाक गौरव प्राप्त भेलनि। मुदा भाग्यक मारल लक्ष्मणचरण अल्पायुयेमे पुरीक तीर्थाटन कऽ घर घुरैत काल हैजाक शिकार भऽ गेल छलाह। ओहि दुःखद घटनाक समय फकीरमोहन केवल एक वर्ष पाँच मासक छलाह। फकीरमोहनक तरुणी माता तुलसीदेइ पर वज्राघात भेल छलनि। ओ एहि दुःखमात्रसँ सेज धऽ लेलनि तथा भगवत्कृपासँ एके वर्षक उपरान्त मृत्यु भऽ जयवाक कारणेँ वैधव्यक दीर्घ यातनासँ मुक्ति पावि लेलनि। आव एहि अभागल नेनाक एकमात्र आशाक केन्द्र तथा शरणस्थली ओकर वावी कुचिलादेइ छलथिन जे स्वयं निःसहाय विधवा छलीह ।

अध्याय 2

निरसल नेना

अपन विस्तृत लगानमुक्त जागीर समाप्त भऽ गेलाक वाद मल्लिकाक्षपुरक समृद्ध ओ सामन्तवादी मल्ललोकनि रातारातो अत्यन्त निर्धन जनसामान्यमे परिणत भऽ गेल छलाह। हमरालोकनिकेँ ई ज्ञात नहि अछि जे दुइ गोट अनाथ ओ अवोध मल्ललोकनिकेँ विधवा कुचिलादेइ कोना पोसलनि। मुदा ई अनुमान कयल जा सकैछ जे ओ पवित्रात्मा महिला जीवनक नैतिक दायित्वकेँ सहजहिँ निमाहैत चल गेलीह। ओ दूनू वालककेँ पोसवो कयलनि आ युवावस्था प्राप्त होइत देरी दूनूक विआहो करा देलथिन। अपन दैन्यपूर्ण जीवनक दीर्घ कालावधिमे संभवतः कमसँ कम किछुओ काल धरिक लेल एहि वृद्धा महिलाक छाती सूप सन भऽ गेल होयतनि, जखन ई अपन दूनू लम्व-धड़ंग आ हृष्टपुष्ट जवान पौत्रलोकनिकेँ परदेशमे नीक कमाइ करैत देखने होयतीह तथा घरमे दूनू तरुणी पोतपुतोहु पर हुकूमति चलैत होयतनि। मुदा ई वुझना जाइत अछि जे ई महान महिला अपन दीर्घ जीवनमे एहनो छोट सन सुख वेसी दिन धरि नहि भोगि सकलीह। पहिनहि जेना उल्लेख कयल गेल अछि, हिनक छोट पुत्र तथा ओकर पत्नीक तुरत तुरत कालकवलित भऽ जयवाक कारणेँ एहि दीन विधवाक दुःखक भारी वोझ वढ़िते गेलनि। लगैत अछि जेना अपन दोसर पुत्रक निरन्तर रुग्ण रहऽवला सन्तानसँ अत्यन्त स्नेहक कारणेँ ई ओहनो प्रचण्ड आघातकेँ सहि सकलीह। फकीरमोहन सेनापति वैह रुग्ण ओ अभागल वालक छलाह जे परवर्त्तीकालमे सम्पूर्ण राष्ट्रीय साहित्यकेँ पुनरूज्जीवित कयने छलाह।

सेवापरायणा देवी

फकीरमोहन अपन सरल ओ निरक्षरा वावीक पवित्र ओ सौम्य स्मृतिक परोक्ष रूपसँ अपन काव्य ओ उपन्यासमे तथा प्रत्यक्ष रूपसँ अपन आत्मचरितमे तीक्ष्ण ओ विशद् अभिव्यक्तिक संग अपरिमित प्रशस्तिगान कयलनि अछि। ई प्रशस्तिगान सभ कोनो पाठककेँ अभिभूत कऽ लैत अछि तथा सत्यापित करैछ जे नारी जातिक श्रेष्ठता वस्तुतः कोन गुण सभमे वास करैछ। ओ कहैत छथि :

"अपन माता-पिताक मृत्युक वाद सात-आठ साल धरि हम अतिजीर्ण दस्त, पेचिस तथा वबासीर सदृश दुःखद रोग सभसँ ग्रस्त रहलहुँ। एहि अवधिमे व्यवहारतः हम सदिखन खाटे पर पड़ल रहवाक हेतु बाध्य रही। मुदा हमरा मोन अछि जे वावी हमरा लगमे दिनराति वैसल रहथि। दिन पर दिन, सप्ताह पर सप्ताह, मास पर मास आ एते धरि जे वर्ष पर वर्षो बितैत चल गेल। मुदा भूख ओ निन्नकेँ पूर्णतः विसरि कऽ हमर आदरणीया वावी हमर खाटक कातमे दिन-राति करीव-करीव पूर्णतः जागिये कऽ वैसल रहथि। एहन लगैत छल जेना एक दिससँ हमर वावी आ दोसर दिससँ यमराज हमरा प्राप्त करवाक हेतु अत्यन्त गंभीर संघर्ष कऽ रहल छथि। आ अन्तमे हमर वावी सैह जीति गेलीह। हमर रोग क्रमशः शमित होइत चल गेल।

व्रजमोहनसँ फकीरमोहन

"हमर रुग्णावस्थाक दीर्घ अवधिमे वावी ओहि समस्त देवी-देवता सभकेँ जनिक मान्यता संसारमे छल, हमर प्राणरक्षाक हेतु गोहरवैत रहैत छलीह। ओहि समयमे वालासोरमे दुइ गोट पीर-बावा छलाह। हुनका दूनूक लग आर्त्त मनुष्यक मनोरथ पूर करवाक गुप्त शक्ति होयबाक मान्यता छल। वालासोरक चारूकातक हिन्दू देवी-देवता सभसँ निराश भऽ अन्तमे वावी अपन आत्माक समस्त भावनाक संग ओहि दूनू मृत मुस्लिम संतक कथित करुणाशीलताक शरण धयलनि। ओ ओहि दूनू दयालु पीर लग सत्त कैलनि जे जँ हमर बच्चाक दुःख छुटि जायत तँ हम एकरा अहाँ सभक चाकर अर्थात फकीर बना देव। हमर मूल नाम व्रजमोहन छल। मुदा रोगमुक्त भेलाक वाद ओहि मुस्लिम पीरलोकनिक कृतज्ञताक कारणेँ हमर वावी हमर पुनःनामकरण अर्द्धमुस्लिम शैलीमे फकीरमोहन कऽ देलनि।

"हम स्वस्थ भऽ गेलहुँ। मुदा वावीक मातृवत्सल हृदय एतेक साहस नहि जुटा सकल जे हमरा पूर्णतः ओहि पीरलोकनिकेँ समर्पित कऽ देल जाइत। विकल्पक रूप मे ओ हमरा प्रत्येक वर्ष महान मुस्लिम पावनि मोहर्रमक अवसर पर कमसँ कम आठ दिनुक हेतु फकीर बना दैत छलीह। ओहि आठ दिन धरि ओ हमरा विशुद्ध मुस्लिम फकीरक रूप मे सजवैत छलीह। विचित्र परिधान, दरवेशी टोपी, रंगीन ठेंङा तथा एक दिस लटकैत रंगीन वकुच्चाक संग हमर चेहरा पथलखरीसँ पोतल रहैत छल। खूव सबेरे हम घर छोड़ि दैत रही आ भरि दिन वालासोरक गल्ली-कुच्चीमे ओहि देहाती वस्त्रकेँ धारण कयने भीख मँगैत रही। संध्याकाल घर घुरि आवी। भीखमे जे चाउर भेटय से वावी बेचि लेल करथि आ ओही पाईसँ पीरवावाकेँ पातड़ि दऽ देल करथि।"

अनपेक्षित नेना

फकीरमोहनक पिता लक्ष्मणचरण सेनापतिक मुइलाक वाद हुनक पित्ती पुरुषोत्तम स्वभावतः मल्ल परिवारक कमासुत तथा प्रधान व्यक्ति भऽ गेलाह। मुदा ओ आ कि हुनक पत्नी कहियो एहि विचारकेँ पल्लवित नहि होमऽ देलनि जे हुनक रुग्ण भातिज सेहो हुनकालोकनिक कमाइक भागीदार वनि सकय। ओहि अनिच्छित वोझक प्रति घृणापूर्ण भावकेँ सेहो छपित रखवाक प्रयास ओलोकनि कहियो नहि कयलनि।

एहन विषम परिस्थितिमे बालक फकीरमोहनक हेतु ई संभव नहि छल जे ओ नियमित शिक्षा ग्रहण कऽ सकथि। दीर्घ रुग्णताक प्रतापेँ नौ वर्षक आयुसँ पूर्व ओ वर्णमाला पर्यन्त नहि सीखि सकल छलाह, सेहो प्राचीन पद्धतिक विद्यालयमे जतऽ शिक्षण-शुल्कक एकटा अंश व्यक्तिगत सेवाक द्वारा चुकाओल जाइत छलैक। जखन आन-आन विद्यार्थी सभ प्रसन्नतापूर्वक अपन-अपन घर दिस विदा होइत छल, नेना फकीरमोहनकेँ शिक्षक महोदयक भानस वनयवामे, वासन मँजबामे तथा आन अनेको प्रकारक अनकट्ठल काज सभमे सहायता करवाक हेतु रुकि जाय पड़ैत छलैक। तैओ ओकर निर्दय पित्ती प्रसन्न नहि रहथि। तकर कारण ई छलैक जे जाहि तरहेँ हुनक अपन धिया-पुता ओ आन-आन विद्यार्थीकेँ जखन-तखन ठोकाइ होइत रहैत छलैक, तेना हुनक भातिजक संगे नहि होइत छलनि। तेँ ओ फकीरमोहनक हेतु देय अत्यल्पो शुल्क देवासँ नकारि देलथिन। हुनक तर्क ई छलनि जे छात्रक पीठकेँ वेंतसँ ओध-वाध कयने बिना वास्तविक शिक्षा संभव नहि।

अन्तमे अपन वकियौता शुल्क ओसूलवाक हेतु शिक्षक महोदयकेँ फकीरमोहनक इर्ष्यालु पित्तीक तर्ककेँ मानऽ पड़लनि। एक दिन फकीरमोहनक पित्ती जखन विद्यालये पर छलाह, तखने शिक्षक महोदय फकीरमोहनक पीठ पर अकारणे निर्दयतापूर्वक अनगिनत वेंत वरिसा देलथिन। दीन बालक पीड़ासँ चिचिआय लागल आ अपन जीवनक एकमात्र शरणस्थल बावी लग पड़ायल। क्षुब्ध वृद्धा हवेलीसँ दौगैत सोझे शिक्षक लग अयलीह आ अत्यन्त कटु ओ मर्मवेधी शब्दावलीमे हुनका कहलथिन- 'कहू तऽ गुरूजी, अहाँकेँ अपना धिया-पुता नहि अछि की ? एहन नेनाकेँ बिना कोनो कारणेँ अहाँ केँ कोना पीटल गेल ? '

बाबीक प्रतिरोधक अछैतो, बेचारे शिक्षक महोदयकेँ अनेक बेर अध्यापन सम्बन्धी एहि अनुशासनिक कार्रवाइक तमाशा करऽ पड़ैत छलनि, जाहिसँ ओहि हृदयहीन पित्तीसँ बाकी शिक्षण-शुल्क ओसूलल जा सकैत।

तथापि बालक फकीरमोहनकेँ शिक्षाक प्रति तेहन अदम्य उत्साह छलनि जे एहि तरहक विचित्र अनुभवक बादो ओ संध्याकालमे किछु समय निकालि एकटा दोसर शिक्षक लग फारसी सिखबाक हेतु जाय लगलाह। अपन परवर्त्ती जीवनमे एहि शिक्षाक माध्यमे व्यावहारिक पटुताक ओ नीक जकाँ परिचय देलनि।

अवांछित भतीजाक छोटो सन शैक्षणिक सफलता ईर्ष्यालु पित्ती ओ पितिआइनकेँ ततेक फाजिल बुझना गेलनि, जे इहो बेसी दिन धरि नहि चलि सकल। परिणामतः ओ सभ अपन धियापुताकेँ तँ क्रिस्चियन मशीनरी द्वारा संचालित प्रतिष्ठित आधुनिक प्रकृतिक प्राथमिक विद्यालयमे स्थानान्तरित करा देलनि मुदा फकीरमोहनक आरंभिक शिक्षास्तरहिमे हुनक पठन-पाठनेकेँ पूर्णतः बन्द करा देल गेलनि। दशाधिक वर्षक होइत होइत फकीरमोहनकेँ बालासोरक जहाजघाटमे गोदी मजदूरक रूपमे रखवा देल गेलनि।

अध्याय 3

विद्यानुरागी बाल श्रमिक

जाहि समयमे जॉव चार्नक हुगलीक बाम तट पर भीतक घर सभक निर्माण करौने छलाह, जे वादमे कलकत्ताक साम्राज्यवादी नगरक रूपमे विकसित होइत चल गेल छल, ताहिसँ वहुत पूर्वहिसँ वालासोरमे वृटिशलोकनिक अति व्यस्त आयात-निर्यात केन्द्र छल।

वन्दरगाह-नगर वालासोरक सौभाग्यपूर्ण स्थिति फकीरमोहनक आत्मचरितमे वर्णित दन्तकथा सभमे सदा-सर्वदाक हेतु जीवन्त अछि, कारण ओ एकटा श्रमिकक रूपमे नगरक जहाजघाट सभकेँ नीक जकाँ जनैत छलाह। संगहि ओ ओड़िया साहित्यक एहन अद्वितीय लेखक भेलाह जे प्राचीन समुद्रतटीय गौरवसँ आह्लादित ओड़ियालोकनिकेँ परवर्त्तीकालमे समुद्रयात्रा ओ समुद्री व्यापारक तेज हवा ओ लहरिक उग्रता तथा समुद्री जलक झंकारसँ पूर्ण वास्तविक कथा सभसँ परिचित करौलनि। एहन कथा सभक उत्स हुनक बालासोरमे वीतल वालमजूरीक समय छल। अपन आत्मचरितमे ओ वन्दरगाहमे जे किछु देखलनि तकरा वर्णित करैत एहि तरहेँ कहने छथि:

"हमर वाल्यावस्थामे वालासोर अत्यन्त समृद्ध यातायात केन्द्र छल। पाँच सँ छओ सए संख्या धरि जहाजक एतऽ आवागमन रहैत छल। एहिमे अधिकांश उड़ीसाक नोन उघैत छल तथा अन्य जहाज सभ रंगून, मद्रास, कोलम्वो तथा हिन्द महासागरक विभिन्न द्वीप सभक दिस विभिन्न प्रकारक उपभोक्ता सामग्री लऽ जाइत छल। ओ समय पालवला जहाजक छल। वाष्पशक्तिसँ चलऽवला जहाज ओहि समय धरि अनभिज्ञाते छल। जहाजक आकृतिक अनुरूप विभिन्न आकार ओ प्रकारक छओटा सँ लऽ कऽ वारहटा धरि पालक आवश्यकता होइत छलैक। किछु पाल तिकोन, किछु चौखूट आ किछु अनियमितो आकृतिक होइत छल। वांछित नापसँ नम्हर पाल भऽ गेने जहाजकेँ अन्हड़-विहाड़िमे पलटी खयवाक डर रहैत छलैक जखन कि छोट भऽ गेने जहाज चलिये नहि पवैत छल। नवसिक्खूलोकनिकेँ एहि नापीमे गलती भइये जाइत छलनि।

"हमर पिता आ पित्ती दूनू गोटे जहाजक ठिकेदारीसँ अपन जीविका चलवैत छलाह। जहाजक व्यापारी सामान्यतः ठिकेदारेक माध्यमसँ पालक कपड़ा कीनैत छलाह। हमर वाल्यावस्थामे हमरा घर पर सैकड़ो दर्जी आ कटाइ कैनिहार पाल वनयवाक एकमात्र काजमे लागल रहैत छल। ई पूर्णतः लाभप्रद व्यापार छल।"

क्षारीय हीरा

मुदा जाहि समयमे फकीरमोहन वालश्रमिकक रूपमे वालासोर वन्दरगाह गेल छलाह, ताहि समय धरि एकर अवसानकाल आवि गेल छलैक। हुनक पित्ती हुनका आवकारी (नोन) विभागमे लगवा देलथिन। आव ओ वन्दरगाहक सौभाग्यकेँ स्पष्टरूपेँ समाप्तप्राय होइत देखि सकैत छलाह।

जीवनक अन्तिम अवधिमे फकीरमोहन वेसीकाल आन्तरिक पीड़ासँ भरल दीर्घ ओ गँहीर निसाँस लेवऽ लगैत छलाह। वन्दरगाह वन्द भऽ जयवाक परिणामस्वरूप हुनक अपन जनमथानक कहियोक अति सम्पन्न शहरक अवनतिगामी दुःखद परिवर्त्तनक कारणें ई पीड़ा हुनका सालैत रहलनि। अपन आत्मचरितमे ओ कहने छथि :

"वालासोर भारते नहि प्रत्युत यूरोप धरि वन्दरगाह तथा व्यावसायिक केन्द्रक रूपमे विख्यात छल। वंगालमे वसवासँ पूर्व डच, डेनिस, फ्रांसीसी तथा वृटिश व्यापारीलोकनि वालासोरमे अपन व्यावसायिक केन्द्र खोलने छलाह। मुदा भाग्य वदलैत छैक। उत्थान ओ पतन जीवनक नियम थिक। वालासोर एहि नियमकेँ पूर्णतः सिद्ध करैत अछि। जे समुद्र तट अनन्त कालसँ हजारक हजार लोकक भीड़सँ गुंजायमान रहैत छल, दुर्भाग्यसँ आव मृत्यु जकाँ शान्त ओ निर्जीव भऽ गेल अछि। ओहिठाम सघन जंगल भऽ गेल छैक आ कोनो मनुष्य आव ओतऽ नहि जाइत अछि। नदीक पेट आव वालु आ पाँकसँ ऊँच भऽ गेल अछि। समृद्ध व्यापारी ओ जहाजक मालिकलोकनि लुप्त भऽ गेल छथि। वालासोरक आन्तरिक ओ वाह्य व्यापार पूर्णतः वाहरी लोकसभक हाथमे आवि गेल अछि।"

वालासोर वन्दरगाहसँ चाउर ओ कपड़ाक तुलनामे सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्यातक वस्तु नोन छल। फकीरमोहन लिखने छथि, "वालासोरमे जे समृद्धि अयलैक से वस्तुतः नोनेक कारणेँ। उत्तरी वालासोरमे सुवर्णरेखा नदीक मुहथरिसँ लऽ कऽ दक्षिणी वालासोरक धामरा स्थित महानदी धरिक सम्पूर्ण तटवर्त्ती क्षेत्रमे नोनक अत्यधिक उत्पादन होइत छल। ताहि दिन वंगालक ग्रामीण इलाका केवल वालासोरेक नोनसँ परिचित छल। नोन पर आधारित सरकारी आवकारी विभाग वालासोरक नागरिक लोकनिक जीवनयापनक आधारभूत साधन छल।"

नोन पर सरकारी एकाधिकार

मुदा नोनक निर्यातक एहि सांत्वना पुरस्कारो सदृश लाभकेँ ई वन्दरगाह अधिक दिन धरि नहि भोगि सकल। फकीरमोहन आत्यन्तिक दुःखक संग लिखने छथि : "नोनक निर्माणक निषेध तथा सम्पूर्ण सम्बद्ध विभागकेँ वन्द कऽ देल जयवाक आदेश शीघ्रे आवि जायव, वालासोरेटा नहि अपितु सम्पूर्ण उड़ीसाक लेल दुर्भाग्यपूर्ण छल। उड़ीसाक लक्ष्मी अपन मूल निवास छोड़ि इंगलैंडक लीभरपूल तथा अन्य स्थान दिस प्रस्थान कऽ गेली।"

राष्ट्रभक्त फकीरमोहन अपन शहर, जिला ओ सम्पूर्णतामे उड़ीसा प्रान्तक हेतु एहि दुर्घटनाकेँ कहियो विसरि नहि सकलाह। 1907ई.क अन्तिम मास सभमे जखन हुनक अवस्था चौसठि वर्षक भऽ गेल छलनि, ओ वालासोरमे नोन-उत्पादनसँ सम्बद्ध अत्यन्त यथार्थपरक ओ मार्मिक लेख प्रकाशित करौलनि। एहिमे खास कऽ ई निर्दिष्ट कयल गेल छलैक जे नोन उत्पादनक लोपसँ जनसामान्यकेँ कतेक आर्थिक क्षति भेल छलैक आ एकर चालू रहने कतेक समृद्धि संभावित छलैक। लगभग पचास साल पूर्व महात्मा गान्धीक नेतृत्वमे नोन भारतीय स्वतंत्रता संग्राममे मानवाधिकारक प्रतीक वनि गेल छल। फकीरमोहन भारतमे देसी नोन वनयवाक पद्धतिकेँ पुनः प्रचलित करवाक हेतु एकान्त आवाज उठौनिहार एकमेव व्यक्ति छलाह। ओ लिखने छथि :

"पहिने हमर देशवासीलोकनि माटि(नोन)क विनिमयसँ वाहरसँ सोना प्राप्त कऽ लैत छलाह। मुदा आव ओ अपन सोनाकेँ पश्चिमी कूड़ा-करकटसँ वदलैत छथि। जेना कि हम पहिने उल्लेख कऽ चुकल छी, असगरे वालासोर जिला नओ लाख मन नोनक उत्पादन करैत छल। जत्रो ई प्रक्रिया लागू रहैत तँ एखन धरि उत्पादनक राशि अत्यन्त रूढ़ो आकलनक अनुसार वीस लाख मन भऽ गेल रहैत। एहिसँ जिलाकेँ वेसी नहि तँ कमसँ कम दस लाख रूपैया प्रतिवर्ष अवश्ये अवितैक। कल्पना करू जे खास कऽ समुद्रीयात्रा पर आधारित उड़ीसाक केओटलोकनि जँ नौचालनक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिमे प्रवीण भऽ गेल रहितथि तँ हुनका लोकनिकेँ कतेक लाभ भेटितनि।

"सम्प्रति बालासोर केवल वाह्य रूपेँ समृद्ध अछि। एहि समृद्धिक प्रदर्शनक पाछाँ हमरालोकनिक समस्त आर्थिक पक्ष पर परदेशीलोकनिक नियंत्रण अछि। व्यापारिएसव नहि अपितु विभिन्न सरकारी विभागक अधिकारीलोकनि सेहो दोसरे प्रदेशक छथि। उड़ियालोकनि रेलवे विभागक कोनो नोकरीक सपनो नहि देखि सकैत छथि, यद्यपि रेल हुनक धरती पर हांइत चलैत अछि। उड़ियालोकनिक जीवनयापनक एकमात्र मूल साधन कृपि अछि। मुदा सभक लेल पर्याप्त कृपि योग्य भूमि छैक कहाँ ? हे भगवान ! अहाँ सरकारक कल्याणकारी हृदयमे किएक ने विराजित भऽ जाइत छी आ वालासोरमे पूर्वहि जकाँ देशी नोनक उत्पादनकेँ पुनः प्रचलित करयवाक प्रेरणा किएक ने दैत छी ?"

ज्ञानक अविश्रांत अनुसन्धाता

एहि समस्त युगान्तरकारी परिवर्त्तनक पाछू लागल, हमरालोकनिक स्पष्टतः अतिसाधारण, नीक वस्त्रहुसँ हीन आ दुखिताह वालश्रमिक शनैः शनैः मुदा निरन्तर श्रमपूर्वक ओहि समस्त स्रोतसँ ज्ञानार्जनमे लागल रहलाह जतऽ धरि हुनक निरुत्साह हाथ पहुँचि सकलनि। हुनक पित्ती जखन हुनका नोन विभागमे लेखक-प्रमाणकक ओहिठाम काज सिखवाक लेल रखवौलथिन, तखन हुनका विभिन्न शिक्षकलोकनिसँ वंगला, फारसी ओ संस्कृतक अंश पढ़वाक समय भेटऽ लगलनि। ज्ञानक ई भूख हुनका जीवन भरि जाग्रत रहलनि।

आन्ध्रप्रदेशक वर्त्तमान श्रीकाकुलम् जिलाक टेकाली नामक स्थानमे हिनका किछू समय धरि रहवाक अवसर भेटल छलनि। एहि अवधिमे ओ तत्पर भऽ तेलुगू भाषाक ज्ञान प्राप्त करवाक हेतु पंडितलोकनिक सहायता प्राप्त करवाक व्यवस्था कयने छलाह। तावत्धरि हिनक अवस्था पचास वर्षसँ वेसी भऽ गेल छलनि। अंग्रेजी भाषा पर हिनक अधिकार हिनक समस्त बौद्धिक साहस मध्य प्रतीकात्मक कहल जा सकैछ। तेइस वर्षक अवस्था धरि ओ एहि भापाक एको गोट शब्द पर्यन्त नहि जनैत छलाह। एहि समय धरि ई पूर्वहिसँ वालासोरक मिशन स्कूलक प्रधान पंडित छलाह। अंग्रेजीसँ सर्वथा अनजान स्थानीय पंडित होइतहुँ वालासोर शहरक गनल-गूथल लोकमे हिनक गणना होइत छलनि। अपन जन्मजात प्रतिभाक कारणेँ ई विदेशीलोकनिक सेहो सम्मानक पात्र छलाह। मुदा एक बेर कोनो यूरोपीय अधिकारीक चपरासी द्वारा अवमानित भेला पर ई शीघ्रे राजकीय भाषा अंग्रेजी सीखव शुरू कऽ देलनि।

कोनो प्रकारक ज्ञानक पिच्छड़मय पथ पर एहि प्रतिभाशाली पथिककेँ अपन मार्ग प्रशस्त करवाक हेतु आंरभिक निर्देशसँ अधिकक कोनो आवश्यकता नहि होइत छलनि। अपन आत्मचरितमे ओ लिखने छथि जे केवल अपन परिश्रमक वल पर, एकटा शव्दकोप मात्रक निर्देशनमे ओ ***अरेवियन नाइट्स, रोविन्सन क्रूसो,*** लाल विहारी डेक ***वंगाल पीजैन्ट लाइफ,*** अंग्रेजी ***वाइविल*** इत्यादि ग्रन्थक अध्ययन कयने छलाह। अंग्रेजीक नाम पर ओ यैह सव पढ़ने छलाह। तथापि एहि सीमित स्वाध्याय मात्रसँ अर्जित एहि भाषाक जे ज्ञान ओ पओलनि से ततेक पूर्ण छलनि जे हिनक सम्पूर्ण दीर्घ सरकारी ओ गैरसरकारी वृत्तिमे समय पर संग दैत रहलनि।

विद्यालयमे दोसर वेरुक साहसिक संघर्ष

वालासोरक नोन विभाग वन्न भऽ गेल। फकीरमोहन ओहि समय पन्द्रहवर्षीय तरुण छलाह। लगैत छल जेना हुनकर केओ हरिया-गोहरिया नहि छल। अधिकांश अधिकारी वंगाली छलाह। ओ लोकनि दोसर-दोसर सरकारी विभाग सभमे समायोजित होयवाक लेल वंगाल चल गेलाह। स्थानीय कर्मचारीलोकनि किछु दिन धरि कार्यालय परिसरमे निरुद्देश्य वौआइत रहलाह। भाग्यक मारल व्यक्ति सभक ओहि समूहमे वेरोजगार फकीरमोहनो छलाह। हिनक व्यक्तित्वक सम्वर्द्धनमे ई

निरुद्देश्य वौअयनीये सहायक सिद्ध भेल होयत, से वुझना जाइत अछि। अन्ततः ई उपेक्षित अनाथ वालक अपनालेल निर्णय लेलनि। अपन अनियमित ओ निजी प्रयाससँ अर्जित पूर्णतः प्राथमिक ज्ञानराशिमे ओ किछु आर नियमित शिक्षा जोड़ि लेवाक दृढ़ निश्चय कऽ लेलनि।

बालासोरक उपनगर वारावाटीक एकटा मिशन स्कूलमे फकीरमोहन नामांकन करा लेलनि। एहि वातक सूचना ओ अपन वावीकेँ सेहो नहि देलथिन। ओहि समय ओ करीव-करीव अर्द्धनग्ने रहैत छलाह। हुनका लग कोनो कमीजो धरि नहि छलनि, जखन कि हुनक पितियौत नित्यानन्द वहुमूल्य रेशमी वस्त्र लदने कक्षामे वैसैत छल। सम्पूर्ण परिवारमे अनीति, नीचता ओ दुष्टता ततेक गँहीर धरि प्रवेश कऽ गेल छलैक जे साँझ कऽ पढ़ैत काल नित्यानन्द अपन लालटेमो लग हिनका नहि वैसऽ दैत छलनि।

मुदा ओहन विपरीत परिस्थितियोमे पढ़ैत फकीरमोहनकेँ अत्यधिक आनन्दक अनुभूति होइत रहलनि। ई आनन्द इतिहास, भूगोल ओ गणितक नवीन विषय सभमे हिनक प्रथम प्रवेश जन्य छल। एकर तुलना युवक कीट्स द्वारा पहिल वेर चैपमेनक ***होमर*** पढ़ला पर अनुभूत आनन्दसँ कयल जा सकैछ। समस्त शिक्षक समुदाय फकीरमोहनक मेधाशक्ति, लगनशीलता ओ विनम्रतासँ अत्यन्त प्रसन्न रहैत छलाह। मुदा ओ भाग्यक मारल तरुण शिक्षार्थी शिक्षण शुल्कक चारियो आना मात्र प्रतिमाह जुटैवाक सामर्थ्य नहि रखैत छल। मासक मास ई शुल्क वकियौता होइत जाइत छल। अत्यन्त व्यक्तिगत अरुचिक अछैतो जँ पित्ती महाराज प्रधानाध्यापक ओ वावीक सम्मिलित अनुनय-विनय पर पहिल वर्षक शुल्क चुकाइयो देलथिन, तँ दोसर वर्ष छलपूर्वक एहि सहायतासँ मुँह मोड़ि लेलथिन। छओ मासक कठोर संघर्षक वाद फकीरमोहनकेँ अन्तिम रूपेँ अतीव हताशा ओ घृणाक संग शैक्षणिक परिवेशकेँ छोड़ऽ पड़लनि।

हुनक शिक्षाक पूर्णाहुति

ई अत्यन्त विडम्वनापूर्ण वुझना जाइत अछि जे एकटा पूर्णतः ऐतिहासिक प्रान्तकेँ आधुनिक कालमे परिचिति प्रदान कैनिहार शलाकापुरुप अपन प्राथमिक शिक्षा पर्यन्त पूर्ण नहि कऽ सकल छलाह, किएक तँ शिक्षण शुल्कक चारियो आना प्रतिमाह जोड़ि पयवामे असमर्थ रहलाह।

एहि तरुण ओ महत्वाकांक्षी विद्वानक तीक्ष्ण नैराश्यभाव हुनक सरल ओ अत्यन्त स्नेहवत्सला वावीसँ नुकायल नहि रहि सकल। अपन अति प्रिय पौत्रक प्रति हुनक सांत्वना ओ प्रेरणा-प्रोत्साहनक शव्द छलः "प्रिय वाउ! अहाँ पढ़ै लेल एतेक चिन्ता किअए करैत छी? जीवू तँ सही, हमर सुगना ! अहाँ देखव जे जीवनमे कतेक अधिक पाइ अहाँ कमा लैत छी।"

आ निरक्षर वृद्धावावीक हृदयक शुद्धतम वात्सल्यक गंभीरतासँ प्रस्फुटित शव्द शीघ्रे भविष्यवाणी जकाँ फलित सिद्ध भेल।

अध्याय 4

शिक्षक, लेखक ओ प्रचारक

मासिक शुल्क चारि आना मात्र भुगतान करबामे अक्षमताक कारणेँ बेचारे फकीरमोहनकेँ जखन विद्यालयसँ निकालि देल गेलनि तँ हुनका किछु ने फुराइन जे आगू की कयल जाय। इर्ष्यासम्पन्न ओ निर्दयी पित्ती-पितिआइनक अछैत हुनक घर हुनका लेल वस्तुतः नरकसँ कनिञो कम नहि छल।

यद्यपि हुनका एहि गहनतम निराशान्धकारमे अधिक दिन धरि नहि रहऽ पड़लनि। शीघ्रे हिनक पूर्व विद्यालयमे शिक्षकक एकटा पद रिक्त भेलैक। प्रधानाध्यापक सहजा प्रतिभाक धनी फकीरमोहनसँ भिन्न कोनो आन व्यक्तिकेँ उच्चतर गुण सम्पन्न नहि बुझलथिन। तथापि फकीरमोहन लग आवश्यक औपचारिक प्रमाण पत्र पर्यन्तक अभाव छलनि। तेँ हुनका अढ़ाइ टाका महिनवारी वेतन पर आमंत्रित कयल गेलनि। आजुक मुद्रास्फीतिमे ई राशि अत्यन्त हास्यास्पद लागि सकैछ, मुदा अपन प्रिय पौत्रक ओहि प्रथम महान उपलब्धि पर हुनक बाबी असीम खुशीसँ वाउर भऽ उठल छलथिन।

समसामयिक राष्ट्रभक्त रचनाकार

वारावटी स्कूलक अधिकारीलोकनि छात्रकेँ व्यवस्थित रखबाक फकीरमोहनक ढंगसँ ततेक प्रसन्न भेलाह जे शीघ्रे ओलोकनि हिनकासँ परामर्श कयनहि बिना हिनक दरमाहा अढ़ाइ टाकासँ चारि टाका प्रतिमाह कऽ देलथिन। ई आमदनी ओहि समयक हेतु पर्याप्त कहल जा सकैछ, कारण क्रयशक्तिक अनुसार आजुक तुलनामे ताहि समयक एक पैसाक मूल्य आजुक एकहु टाकासँ अधिक छल।

आरंभहिसँ तरुण फकीरमोहन अत्यन्त उद्यमी ओ प्रभावशाली शिक्षकमे परिणत भऽ गेल छलाह। उदाहरणक हेतु भूगोल पढ़यवाक लेल ओ नक्शा स्वयं तैयार कयने छलाह किएक तँ ताहि समयमे नक्शा सहज रूपेँ उपलब्ध नहि छलैक। विद्यालय शिक्षक भेलाक तेसर वर्ष हुनका गणित पढ़यवाक लेल कहल गेलनि। ओ अंकगणित,

वीजगणित ओ त्रिकोणमिति सवटा अपनेसँ पढ़ि कऽ ओहि सव विपय पर अधिकार प्राप्त कऽ लेलनि। ई विपय सभ ओ विद्यालयमे नहि पढ़ने छलाह आ ने वालासोरेमे क्यो एहन छल जे हिनका वीजगणित ओ त्रिकोणमितिमे सार्थक सहायता कऽ सकितनि। ई तँ स्वतः सिद्ध छल जे ओ साहित्य आ इतिहास विपयक विशिष्ट रूपेँ सफल शिक्षक छलाह। एहि तरहेँ पूर्ववर्त्ती वालश्रमिक, आव कोनो खास विपयेटामे नहि अपितु अनेकानेक विपयमे आ गणित तथा साहित्य सन विपरीतो प्रकृतिक विषय सभमे अप्रत्याशित रूपेँ एकटा असाधारण प्रतिभासम्पन्न शिक्षकक रूपमे परिणत भऽ गेल छल।

हुनक यूरोपीय मित्र

सफल शिक्षकक रूपमे हुनक कार्यपद्धति हुनक प्रतिष्ठाकेँ नीक जकाँ स्थापित कऽ देने छल। परिणामतः जखन इसाई मिशनरी स्कूलक प्रधानाध्यापकक जिम्मेवारीवला पद रिक्त भेलैक तखन यूरोपीय मिशनरीक अधिकारीलोकनि विना कोनो तारतम्य कयनहि हिनका दस टाका दरमाहा पर ओहि स्पृहणीय कार्यालयमे पदासीन करा देलथिन। ओहि समयमे इसाई मिशनरी स्कूल वालासोरक एकमात्र प्रतिष्ठित शिक्षण-संस्थान छल।

तरुण फकीरमोहनकेँ राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त करयवामे यैह परिवर्त्तन एकटा द्रुतकारक वनि गेल। एही स्थल पर ओ पहिल वेर यूरापीयलोकनि, खाहे अधिकारीवर्ग कि मिशनरी, दूनूक निकट सम्पर्कमे आवि सकलाह। ओहिमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति सभमे विद्यालयक सचिव रेवरेंड ई. सी. वी. हालम नथा जिला समाहर्त्ता जॉन वीम्स महोदय छलाह। वृटिश नागरिक जॉन वीम्स अपना पाछाँ ***'कम्परेटिव ग्रामर ऑफ द इण्डियन लैंग्वेजेज'*** नामक आधिकारिक ग्रन्थक माध्यमे एकटा भाषाशास्त्रीक रूपमे अनन्त कीर्त्ति छोड़ि गेल छथि। ओ नहि केवल उच्चकोटिक विद्वाने छलाह अपितु एकटा दक्ष प्रशासको छलाह। हेवनिमे प्रकाशित हुनक आत्मकथा ***'मेम्वायर्स ऑफ ए बंगाल सिविलियन'*** विगत शताव्दीक भारतीय समाज ओ प्रशासन-व्यवस्थाक अनेक रहस्यमय कालावधिकेँ उजागर करैत अछि।

फकीरमोहन ओ वीम्स

बालासोर अयलाक वाद वीम्स उड़िया भाषा सिखवाक प्रथम अवसर प्राप्त कयने छलाह, कारण हुनका उड़िया व्याकरणक संग वंगला, असमी ओ हिन्दी सदृश भगिनी भाषा सवहिक व्याकरणक तुलनात्मक अध्ययन करवाक छलनि। एहि भगिनी भाषा सभ पर हिनका पूर्वहिसँ अधिकार प्राप्त छलनि। जखन ओ एहन शिक्षकक खोज करऽ लगलाह जे उड़ियाक संगहि वंगला ओ संस्कृतमे सेहो निपुण होथि तखन

रेवरेंड हालम एहन असाधारण दायित्वक हेतु बिना कोनो तारतम्य कयने सर्वाधिक सुयोग्य व्यक्तिक रूपमे फकीरमोहनक अनुशंसा कऽ देलथिन।

जिज्ञासु पाठक हिनका दूनूक पहिल भेट आ क्रमिक प्रगतिकेँ फकीरमोहनेक शव्दमे नीक जकाँ जानि सकैत छथि। ओ लिखने छथि :

“वृटिश नागरिक ओ भारतक गण्यमान्य व्यक्तिलोकनिक बीच जॉन बीम्स अत्यन्त प्रतिभाशाली विद्वानक रूपमे प्रतिष्ठित छलाह। हुनका कमसँ कम एगारह गोट भाषा पर अधिकार छलनि। वालासोरमे ओ अपन ***कम्परेटिव ग्रामर ऑफ द इण्डियन लैंग्वेजेजक*** प्रणयनमे व्यस्त छलाह। हमर सचिव रेवरेंड हालम सेहो साहित्यक समर्पित अध्येता छलाह। एही कारणेँ हुनका दूनू गोटेक बीच प्रगाढ़ मैत्री भऽ गेल छलनि। अपन पंचभाषिक व्याकरणक हेतु बीम्सकेँ एकटा एहन पंडितक आवश्यकता छलनि जे उड़िया, बङला ओ संस्कृतक नीक ज्ञाता होथि। रेवरेंड ई. सी. बी. हालम हमर सदिखन हितैषी छलाह। ओ हमरा एक दिन अपना संगे लऽ गेलाह आ बीम्ससँ परिचय करौलनि। पहिले साक्षात्कारमे ओ हमरासँ संस्कृतक किछु प्रत्यय तथा सम्बन्ध कारक चिह्नक प्रयोगसँ सम्बद्ध प्रश्न पुछलनि। हमर प्रत्युत्तर हुनका ततेक संतोषजनक बुझना गेलनि जे ओ चट ओकरा सभकेँ अपन तुलनात्मक व्याकरणमे समाविष्ट करबाक हेतु टीपि लेलनि। आ यैह एकमात्र घटना हमरा बालासोरक यूरोपीय समाजमे महान भारतीय विद्वान कहयबाक प्रतिष्ठा अर्जित करा देलक।

“बीम्स हमरा आग्रह कयलनि जे सप्ताहमे कमसँ कम एक दिन अवश्य भेट हो। हम दूनू गोटे एहि साप्ताहिक भेटक उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कयल करी। जञो कहियो कोनो कारणवश एक दू दिनुक बिलम्ब भऽ जाय तँ ओ बड़ा विनम्र शब्दमे हमर स्वागत करैत कहथि, ‘बाबू, अपने एतेक देरी किएक कऽ देल?’ हमरालोकनिक सभटा गप्प भाषामात्रसँ सम्बद्ध रहय। गप्पक क्षेत्र कठिन संस्कृत चतुष्पदीक व्याख्यासँ लऽ कऽ साप ओ चुड़ैलक झाड़फूकक हेतु जनसामान्यमे प्रचलित मंत्र-प्रयोग तथा उड़ियाक अलंकारशास्त्रीय कृति ***रसकल्लोल*** धरि सीमित रहैत छल।

“बृटिश लोकनिक संग हमर सम्पर्क आ हुनकालोकनिक हमरा प्रति अत्यधिक सम्मानक भावसँ हमरा विपुल प्रशासकीय लाभ होइत रहल। कलक्टरीक छोट-छोट पद पर आसीन निम्नवर्गीय कर्मचारीलोकनिक तँ कोनो कथे नहि, समस्त उच्चपदस्थ बंगाली पदाधिकारीलोकनि सेहो आब हमरासँ बिना समुचित सम्मान ओ दूरीक गप्प नहि कऽ पबैत छलाह।

“बालासोरमे नारी शिक्षाक प्रसारक प्रति हमर विनम्र आयास हो किंवा उड़िया भाषाक विकासक प्रयास, हमरा बीम्ससँ अत्यधिक सहयोग ओ संरक्षण भेटैत रहल। हमर व्यक्तिगतो जीवनक अनेक अभावग्रस्त स्थितिमे ओ हमर पिठपोही बनल रहलाह। गंभीर कठिनतोक घड़ीसँ उबारबाक लेल ओ अपन सहायक हाथ निरन्तर हमरा लेल प्रदान कयने रहैत छलाह। एक शब्दमे हुनका हमर प्रगतिक प्रमुख आधारस्तम्भ तथा सर्वाधिक हितलग कहल जा सकैछ। हमर समस्त लौकिक

117123
9.12.04

समृद्धिक हेतु महान आत्मासँ सम्पन्न बृटिश बीम्स सहायक रहल छथि। जीवनक अन्तिम साँस धरि हम कृतज्ञतापूर्वक हुनक स्मरण करैत रहब। एखनो हम दू वेर साँझ आ भिनसरमे हुनक आत्माक शान्तिक हेतु भगवानसँ प्रार्थना करैत रहैत छियनि। ई लिखैत हमरा अत्यन्त संकोच भऽ रहल अछि जे परिचयक ओहि प्रारंभिक कालमे वीम्स अपन समस्त मित्रमंडलीमे हमर परिचय 'राष्ट्रभक्त पंडित'क रूपमे दैत छलाह।''

वालश्रमिकक पोथी-लेखन

वालासोरक मिशन स्कूलमे प्रधानाध्यापकक रूपमे काज करवाक वर्षहि सभमे फकीरमोहन शनैः शनैः नवोदित राष्ट्रभक्त, लेखक ओ विद्वानक रूपमे जानल जाय लागल छलाह। हुनक ई स्वरूप मुट्ठी भरि विदेशीएलोकनि नहि प्रत्युत् चारू एकवद्धू प्रान्तमे छिड़िआयल समस्त उड़ियाभाषीलोकनिक वीच सुप्रचारित भऽ गेल छल। हिनक वुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन ओ प्रवन्धनमे विद्यालयक ख्याति वढ़ैत गेलैक। ओकर विद्यार्थी सभ प्रतिवर्ष राज्यस्तरीय छात्रवृत्तिक अधिकांश प्राप्त करैत चल गेलं। सव सँ वड़का चमत्कार तँ ई भेलैक जे एकर तरुण प्रधानाध्यापक जनिका अपूर्ण प्राथमिक शिक्षा मात्र भेटल छलनि आ वालमजूरियो अनुभूत छलनि, उड़ियामे गणित, भूगोल, त्रिकोणमिति आ भारतीय इतिहासक पाठ्यपुस्तकक लेल स्पृहणीय सरकारी पुरस्कार सभ जीतैत गेलाह। अपन प्राथमिक प्रयासहिसँ पोथीक क्षेत्रमे फकीरमोहनक ई अप्रत्याशित उपलब्धि हुनक कीर्त्तिकेँ वालासोरक सीमित क्षेत्रसँ वाहर कऽ उड़ियाभाषी क्षेत्रक समस्त कोनमे पसारि देलक। परवर्त्तीकालमे हिनका द्वारा रचित साहित्यिक कृतिये जकाँ ई पाठ्यपुस्तक सभ गंभीर ओ व्यापक अध्ययन, तथ्यक व्यवस्थित विन्यास तथा रमणीय प्रस्तुतीकरणक छाप छोड़ि देने छल।

अपन भाषा ओ लोकक प्रति चिन्तन

अपन पोथी सभक सफलता पर ओ स्वयं चकित छलाह। केवल डेढ़ साल धरि औपचारिक शिक्षा प्राप्त वालश्रमिक भला एकटा लेखक होयवाक स्वप्न कोना देखि सकैत छल ? मुदा विद्यालय शिक्षकक रूपमे हुनक सफलता, वृटिश प्रशासक वर्गक बीच प्रख्यात विद्धान ओ सार्वजनिक व्यक्तिक रूपमे हुनक स्पृहणीय स्थिति तथा उड़ीसाक समस्त विद्यालयमे पढ़ाओल जायवला हुनक विभिन्न विषयक पोथीक लेखकत्व हुनका बीसे वर्षक प्रारंभिक अवस्थामे राष्ट्रक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ कऽ देने छलनि। धनक प्रति अत्यधिक व्यामोह नहि रहवाक कारणेँ फकीरमोहनकेँ आव अपन लोकक दलित स्थितिकेँ सुधारबाक हेतु मोन लगयबाक लेल पर्याप्त समय छलनि।

आर्थिक ओ प्रशासनिक स्तर पर ओड़ियालोकनि असमर्थतासँ तँ पीड़ित छलाहे। तदुपरि फकीरमोहनकेँ उड़ियामे समुचित पाठ्यपुस्तकक अभावक कारणेँ वंगाली

लोकनिक उपहास नित्यप्रति सहऽ पड़ैत छलनि। राष्ट्रीय अवमाननाक एही स्थितिकेँ जड़िसँ समाप्त करवाक ध्येयमात्रसँ ओ उड़ियामे पाठ्यपुस्तक लिखवाक प्रेरणा ग्रहण कयने होयताह। भगवानकेँ धन्यवाद दिअनि जे ई तरुण राष्ट्रभक्त अपन अत्यन्त प्रारंभिके प्रयास सभमे आशासँ अधिक सफलता पबैत गेलाह। एहि नवीन सफलता सभसँ प्रोत्साहित भऽ ई विनम्र विद्यालयशिक्षक उड़िया भाषा ओ साहित्य दिस सामान्य रूपेँ उन्मुख होइत गेलाह। एकटा वाल श्रमिकक राष्ट्रीय नेताक रूपमे अकल्पनीय विकास गाथाकेँ हमरालोकनि हुनके शब्दमे जानी :

"जखन कखनो कोनो नव बंगला पोथी हमरा हाथमे अबैत छल तँ हम तकर पृष्ठ सभकेँ उलटि-पुलटि कऽ देखी आ अत्यन्त निराश भऽ कऽ चारूकात ताकऽ लागी। हम सहज रूपेँ अपनेसँ प्रश्न करऽ लागी जे ओ दिन कहिया आओत जहिया हमर भाषा उड़ियोमे एहन पोथी सभ छपऽ लागत। हमरा हृदयक गंभीर वेदना समाप्त भऽ जायत। किछु अंग्रेजी ओ फारसी जननिहार उड़ियाभाषीलोकनि छलाहो, से उड़ियामे गप्पो करब मर्यादाक विरुद्ध बुझैत छलाह आ ओकरा अपन कार्यालय-वृत्तिमे व्यवधान मानैत छलाह। हुनकालोकनिसँ उड़िया भाषाक पोथी सदृश आवांछनीय वस्तु पर अपन मूल्यवान कमाइ नष्ट करवाक कोना आशा कयल जा सकैत छल ? तेँ हम दिनराति एहि कठिन समस्या पर चिन्तन कयल करी जे हमर अविकसित ओ उपेक्षित भाषाक उन्नति कोना भऽ सकत ? हमर समस्त बाह्य क्रियाकलापक अन्तस्तलमे स्थित ई एकमात्र भावना हमर अन्तरात्माकेँ निरन्तर मथैत रहैत छल। हमर एकमात्र उद्देश्य बंगला जकाँ उड़ियामे पोथीक प्रकाशन देखब छल।

"मुदा सब किछु होइतो उड़िया भाषामे लेखक कहाँ छथि ? की हम लेखक भऽ सकैत छी ? उड़ियामे साप्ताहिक वा मासिक पत्रिका नहि छल। हम समय-समय पर छोट-छोट आलेख बंगला पत्र ***सोमप्रकाश*** मे पठा देल करी। सम्पादक महोदय ओहि आलेख सभकेँ छापि देल करैत छलाह। तेँ हमरा मोनमे लेखक बनबाक चेतना कने-कने उद्वुद्ध भेल आ लेखक बनि सकबाक प्रति हम आश्वस्त होइत चल गेलहुँ। एही वीच हम अपना गाममे अभिनेय कृष्णलीलाक हेतु किछु पद रचबाक प्रयास कयल। हमरा तखन अत्यन्त उत्साहक अनुभव भेल छल जखन हम ओहि पद समकेँ सार्वजनिक अभिनयमे गवैत सुनने छलहुँ।

"आब हम पैघ गद्यरचनाक हेतु प्रयत्नशील भेलहुँ। एकर शीर्षक छल 'एकटा राजकुमारक इतिहास'। मित्रलोकनि एकर प्रशंसा कयलनि। हम एकर पाण्डुलिपि कटकक मिशन प्रेसकेँ पठा देल। ई सम्पूर्ण उड़ीसामे ताहि समयक एकमात्र छापाखाना छल। मुदा जखन हमरा सूचना भेटल जे एकरा छपयबामे तीन सए टाका लागत, तँ हम भयानक रूपेँ थकमका गेलहुँ। परिणामतः जे निराशा उत्पन्न भेल ताहीमे 'एकटा राजकुमारक इतिहास'केँ छपयबाक परिकल्पना पूर्णतः विलुप्त भऽ गेल।

उड़ियाभाषी ओ मुद्रित शव्द

"ओहि समयमे सामान्य उड़ियाभाषी लोक गद्य पढ़ियो धरि नहि सकैत छलाह। ओलोकनि विभिन्न छन्द ओ धुन पर आधारित अलंकारपूर्ण ओ गेय कवितेसँ साहित्यक आनन्द लैत छलाह। मुदा ओहू लोकप्रिय प्रकृतिक शास्त्रीय उड़िया पदावलीक एकोटा पोथी छपल नहि छल। तैं हमरे सभमे किछु गोटे ई निश्चय कयलहुँ जे ओड़ियालोकनिकेँ मुद्रित शव्दावलीसँ परिचित करयवाक हेतु प्रथमतः उड़िया पदावलीक ख्यात पोथी सभकेँ छपा कऽ सस्त दाममे उपलव्ध कराओल जाय। एकरा साकार करवाक हेतु एकटा छापाखाना होयवाक चाही, जे पूर्णतः एही उद्देश्यक हेतु समर्पित हो। आव हमरालोकनिकेँ कटकक मिशन प्रेसक दया पर कनेको काल आश्रित नहि रहवाक चाही।"

सेनापतिक छापाखाना

एहि तरहें तरुण विद्यालयशिक्षक सेनापति बालासोरमे उड़ीसाक दोसर छापाखाना वैसयवाक निश्चय कयलनि। जैं लऽ कऽ हुनका लग पाइ नहि छलनि तैं ओ एकटा संयुक्त पूजी कम्पनी ठाढ़ करवाक प्रयास कयलनि। एहि कम्पनीमे संदेही मोन आ अनुदार हाथ सभसँ अंशदान एकत्र कयल गेल। एहि परियोजनाक हेतु साहस जुटायव तथा एकरा पूर्ण करव वस्तुतः एक गोट स्मरणीय गाथा थिक। परवर्त्ती कालमे कवि राधानाथ द्वारा कयल गेल ई सार्वजनिक घोषणा सर्वथा सत्य अछि जे सहकारी पद्धति पर वालासोरमे छापाखानाक स्थापनाक एकमात्र तथ्य आधुनिक उड़ीसाक इतिहासमे सेनापतिक नामकेँ अमर करवाक हेतु पर्याप्त छल।

बैलगाड़ी पर लादल सेनापतिक छापाखानाकेँ कलकत्तासँ वालासोर पहुँचबामे वाइस दिन लगलैक। जाहि दिन ई घोषणा कयल गेल जे सेनापतिक अद्भुत छापाखाना दिनक पूर्ण प्रकाशमे स्थापित कयल जायत, ओ दिन सम्पूर्ण वालासोरक हेतु मंगल-दिवस बनि गेल। समाहरणालय व्यवहारतः पूरा-पूरी खाली भऽ गेल। एहि चमत्कारकेँ अपना आखिएँ देखबाक हेतु किरानीलोकनि सामूहिक रूपेँ आकस्मिक अवकाश लऽ लेलनि। छपाई मशीनक कार्यपद्धतिकेँ देखवाक हेतु परवर्त्ती अनेक मास धरि धनिकलोकनि पालकी पर चढ़ि-चढ़ि सुदूरवर्त्ती गामसभसँ बालासोर अवैत रहलाह। छओ मास धरि सफलतापूर्वक चलैत रहलाक वाद जॉन बीम्स तथा उड़ीसा प्रमंडलक कमिश्नर टी. ई. रेवेनशॉ सदृश उच्चाधिकारी एहि छापाखानाक निरीक्षण कयलनि। ई निरीक्षण वेस्टमिनिस्टरमे विलियम कैक्सटनक समरूप मार्गदर्शी ओ साहसिक कार्यक बृटिश राजा ओ रानी द्वारा निरीक्षणक सादृश्य रखैत छल। सेनापतिक अनुभूतिकेँ सुनलाक वाद रेवेनशॉ हुनका तत्काले दस टाकासँ पुरस्कृत कऽ देलथिन, जकरा सेनापति कम्पनीक अंशदानमे बदलि देलनि। जखन कम्पनी वन्द भऽ गेल, रेवेनशॉकेँ अंशदान आ लाभांश मिला कऽ तीस टाका घुराओल गेल छलनि।

पत्रिका-सम्पादक

अपन अक्षय ऊर्जाक कारणेँ फकीरमोहन हमरालोकनिकेँ बेंजामिन फ्रेंकलिनक स्मरण करा दैत छथि। सफलतापूर्ण छापाखानाक स्थापनाजन्य विशिष्ट उपलब्धि अथवा शिक्षक, प्रधानाध्यापक ओ पोथीलेखकक रूपमे सुपात्रताजन्य कीर्त्तिसँ ओ सन्तुष्ट नहि रहि सकलाह। आव ओ ***बोधदायिनी*** तथा ***बालासोर संवादवाहिका*** नामक दुइ गोट पत्रिकाक प्रकाशन करऽ लगलाह। एहिमे पहिल साहित्यक प्रति तथा दोसर समाचार ओ टिप्पणीक प्रति समर्पित छल। फकीरमोहन एके संग एहि दुहू पत्रिकाक असगरे लेखक, मुद्रक, प्रकाशक, वितरक ओ अर्थप्रवन्धको छलाह।

अध्याय 5

मातृभाषाक संरक्षक

एकटा बंगाली पंडित जे सोझे बंगालसँ आवि बालासोरक नवे स्थापित सरकारी उच्चविद्यालयमे नियुक्त कयल गेल छलाह, एकटा पोथी प्रकाशित करौलनि। एहि पोथीमे ई देखाओल गेल छल जे उड़िया स्वतंत्र भाषा नहि थिक। एहिमे तर्कक आधार पर ओकरा बंगलाक एक गोट बोली मात्र कहल गेल छल। संगहि एहिमे सम्पूर्ण उड़ीसामे उड़ियाक अध्यापन समाप्त कऽ ओकरा स्थान पर बंगलाकेँ रखबाक तर्क देल गेल छल।

फकीरमोहन अपन भाषा ओ लोक पर आयल एहि पैद्य संकटक जकरा आब सामना करवाक बाध्यता छलैक, अत्यन्त आकुल ओ आतंक भरल स्वरमे वर्णन करैत लिखलनि अछि :

"बालासोर जिला स्कूलक वंगाली प्रधानाध्यापक ओहि पोथीकेँ बालासोरक विद्यालय उपनिरीक्षकक माध्यमे विद्यालय निरीक्षककेँ पठा देलनि। ई दूनू गोटे पं. कान्तिचन्द्र भट्टाचार्यक सिद्धान्तक जोरदार शब्दमे संपुष्टि कयलनि। ताहि समय सम्पूर्ण उड़ीसा एके गोट शिक्षा अंचलक अधीन छल ओ ओकर मुख्यालय मिदनापुरमे छलैक। एहिमे कोनो संदेह नहि जे विद्यालय निरीक्षक आर. एल. मार्टिन नामक अंग्रेज छलाह मुदा हुनक अधीनस्थ सभटा अधिकारी वंगालीए छल। मिदनापुरसँ विद्यालय निरीक्षकक ई आदेश शीघ्रे आवि तुलायल जे आब बालासोरक सरकारी उच्चविद्यालयमे केवल संस्कृत आ बंगला पढ़ाओल जाय। उड़ियाक पढ़ाइ एकदम्मे नहि हो।

सेनापति द्वारा पुञ्जीभूत प्रतिरोधी हमला

"हमरालोकनि, बालासोरक किछु शिक्षित उड़ियाभाषी आश्चर्यचकित रहि गेलहुँ आ वज्राघात सन अनुभव कयलहुँ। हमरालोकनि अत्यन्त आतंकित भऽ अपनामे कनफुसकी करऽ लगलहुँ : वास्तवमे हमरालोकनिक संगे की भऽ रहल अछि ? आब की करवाक चाही ? की आब हमरालोकनि अपनो माटि पर अपन भाषा नहि पढ़ि सकैत छी ?

"हम अपन पुरान मित्रमंडलीकेँ सावधान कयलहुँ। अपन मातृभाषाक रक्षाक हेतु मार्ग तकवाक लेल हमरालोकनि दिनराति अपन मस्तिष्क पर जोर लगवैत रहलहुँ। मुदा एकर परिणाम अत्यन्त निराशाजनक रहल। जखन हमरालोकनि सहायक उड़िया अधिकारीलोकनिकेँ एकत्र कऽ हुनकालोकनिकेँ सामूहिक रूपसँ प्रयास करवाक हेतु विनय कयलियनि तँ ओलोकनि एकमतसँ उत्तर दैत गेलाह : 'देखू भाइ, ई पूर्णतः सरकारी मामिला थिक। हमर नेना सभ ओएह पढ़त जे सरकार ओकरा लेल निर्धारित करत। सरकारक निर्णयक विरुद्ध जा कऽ की हमरालोकनि अपना लेल समस्या वेसाहि ली ?'

"एहि अधिकारीलोकनिक संकेत पर गनल-गूथल उड़िया जमींदार ओ अमीर सभ सेहो हमरालोकनिक बात पर ध्यान देव स्वीकार नहि कयल। हुनकालोकनिक कहव छलः 'की अहाँ सभ ई चाहैत छी जे हमरालोकनि एहन मामिलामे टाङ्ग अड़ा कऽ सरकार द्वारा दंड पावी, जकरा शक्तिसम्पन्न अधिकारीलोकनि सेहो विरोध करबाक साहस नहि रखैत छथि ?'

मुदा एहि समस्त निराशाजनक अनुभवसँ हतोत्साह भेने विना मिशन स्कूलक तरुण, चतुर ओ प्रवेशी प्रधानाध्यापक एक पर एक नव उपाय अपनबैत रहलाह। ओ एक बेर उड़िया अधिकारीलोकनिकेँ एकट्ठा कयलनि आ अत्यन्त चतुरतापूर्ण तथा विशिष्ट भाषण देलनि। एहि भाषणमे हुनकालोकनिक अत्यन्त संवेदनशील आर्थिक तंत्रकेँ स्पर्श कयल गेल छल। भाषण एहि प्रकारक छल :

" आदरणीय सज्जनवृन्द, अहाँ सभकेँ ई बुझबाक थिक जे उड़ियाक स्थान पर बंगलाक स्थापना वस्तुतः सरकारी निर्णय नहि थिक। ई पूर्णतः एकटा बंगाली षड्यंत्र थिक। ओ सभ बृटिश विद्यालय निरीक्षककेँ धोखा दऽ कऽ ई निर्णय करयवामे समर्थ भेलाह अछि। मुदा इहो बूझि लियऽ जे विद्यालय स्तर पर प्राप्त एहि सफलतासँ प्रोत्साहित भऽ कऽ ईलोकनि शीघ्रे उड़ियाकेँ कचहरी आ कार्यालय सभसँ सेहो हटवा देताह। अहाँ सभ एहि तरहक चक्रचालिक कारणक अनुभव नहि कऽ रहल छी। अहाँ सभगोटे प्राचीन राजकीय भाषा फारसीकेँ नीक जकाँ जनैत छी। मुदा फारसीकेँ एहि हेतुएँ हटा देल गेल जाहिसँ अंग्रेजी जननिहार बंगालीलोकनिक हेतु जगह बनाओल जा सकय। यैह ओ तरीका वनल जाहिसँ ओलोकनि उड़ीसाक सभटा सरकारी नोकरीकेँ हथिया लेलनि अछि। नेनामे अत्यधिक परिश्रमसँ उपार्जित अहाँ सभक फारसीक ज्ञान कोनो काजक नहि रहि सकल। आ आव जँ उड़ियाकेँ समाप्त कऽ देल जायत आ ओकरा जगह पर बंगलाकेँ स्थानापन्न कऽ देल जायत तँ पुस्त दर पुस्त उड़ीसाक समस्त नोकरी पर बंगालीलोकनिक शाश्वत अधिकार भऽ जयतनि। अहूँलोकनिकेँ शीघ्रे सामूहिक रूपसँ नोकरीसँ मुक्त कऽ देल जायत जाहिसँ कलकत्तासँ आगत बंगालीलोकनिक नव समूहकेँ स्थान देल जा सकय। एहि तरहेँ अहाँक बालबच्चा ओ नाति-पोताक भविष्यमे अंधकारक अतिरिक्त किछुओ शेष नहि रहि सकत।"

फकीर मोहन लिखने छथि, "हमर ई किछुए वाक्य एकाएक सम्पूर्ण सभाकेँ दलमलित कऽ देलक। ओ सभ गोटे आव एके संग चिकरऽ लगलाह , 'नहि, नहि, ई नहि होयत। हमरालोकनिक नेना सभ विद्यालयमे अवश्ये उड़िया पढ़त। हमरा सभ के की करऽ पड़त, से कहल जाय। हम सव तुरत ओहिना करव।'

"हम उत्तर देलियनि : 'सरकार केँ प्रार्थना-पत्र प्रदान करव सवसँ सरल उपाय अछि। ई हमरा सभक विद्यालयमे उड़ियाकेँ अवश्ये पुनःस्थापित कऽ देत। संगहि एहिसँ भविष्यमे वंगालीलोकनिकेँ सवटा नोकरी हथिया लेवामे व्यवधान उत्पन्न भऽ जयतनि।' सव केओ चिचिया उठलाह-', प्रार्थना पत्र तुरत तैयार कयल जाय।'

"वहुत सावधानीसँ एकटा प्रार्थनापत्रक प्रारूप तैयार कयल गेल आ ओहि पर सभक हस्ताक्षर करा लेल गेल। एकरा जिला समाहर्त्ताक ओहिठाम जमा कऽ देल गेल। ओहि समयमे उड़ीसाक लोकक भाग्य नीक छल। यावन्तो बृटिश अधिकारी ओ अंग्रेज क्रिस्चियन मशीनरी हमरालोकनिक अनुकूल छलाह। ओ सभ हमरालोकनिक प्रतिवादक समर्थन कयलनि। जखन ई सामूहिक प्रार्थनापत्र वालासोर जिलाक समाहर्त्ता आ महान भाषाविद् जॉन वीम्स लग गेलनि तँ ओ एकरा उड़ीसा प्रमण्डलक प्रमंडलाधिकारी टी. ई. रावेनशॉ लग अपन कसगर अनुशंसाक संग पठा देलथिन। वीम्स तँ एते धरि कयलनि जे उड़िया भाषाक स्वतंत्रता ओ प्राचीनताकेँ सत्यापित करबाक हेतु एकटा पुस्तिका पर्यन्त प्रकाशित करा देलथिन। एहिमे उड़ियाक समुचित विकासक हेतु पर्याप्त उपायक वर्णन कयल गेल छल। एहि पुस्तिकाक एकटा प्रति ओ अपन अधिकृत अनुशंसाक सम्पुष्टिमे वंगाल सरकारकेँ पठा देने छलथिन।

"उड़ीसा ओ उड़ियाभाषी समुदायक महान हितैषी टी. ई. रावेनशॉ उड़ियाक समर्थनमे एकटा कसगर टिप्पणी लिखि सरकारकेँ पठा देलथिन। शीघ्रे एहि तरहक सरकारी आदेश आवि गेलैक जे नहि केवल उड़ीसाक विद्यालय सभसँ वंगलाकेँ हटा देल जाय अपितु सम्पूर्ण उड़ीसामे उड़िया भाषाक प्रगतिकेँ ध्यानमे रखैत नव विद्यालय सभक स्थापना कयल जाय।

"तैँ उड़ीसाकेँ जिला समाहर्त्ता बीम्स तथा प्रमंडलाधिकारी रावेनशॉ सदृश दुइ गोट महान आत्मा अंग्रेज अधिकारीकेँ सभ दिनक हेतु कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करैत रहक चाही।"

अध्याय 6

कुशल प्रशासक

वालासोरमे लगभग दस साल धरि विद्यालय शिक्षकक रूपमे काज कयलाक वाद तरुण फकीरमोहन एक सीमा धरि ई निश्चय कऽ लेने छलाह जे अध्यापनेकेँ अपन मूल जीवनवृत्तिक रूपमे स्वीकार कऽ लेल जाय। मुदा एखनधरि ओ केवल गैर सरकारीए संस्थान सभमे काज कयने छलाह। सरकारक शिक्षा विभाग निश्चित रूप सँ अधिक वेतन तँ दैते छलैक, ओतऽ अधिक सुरक्षित अनुभव होइत छलैक आ पदोन्नतिक सेहो अधिक अवसर छलैक। विनु तकनहिँ ई अवसर अनायासे हमर तरुण विद्यालय शिक्षकक दरवज्जा पर आवि तुलायल। उड़ीसाक वौद्धिक ओ प्रशासनिक मुख्यालय कटक स्थित नॉर्मल (शिक्षक-प्रशिक्षण) विद्यालयमे द्वितीय पंडितक स्थान रिक्त भेलैक। विद्यालय निरीक्षक आर. एल. मार्टिन एहि पदक हेतु वालासोरक मिशन स्कूलक प्रख्यात प्रधानाध्यापकेँ सोझे आमंत्रित कऽ देलथिन। एहि ठामक वेतन अत्यधिक आकर्षक छल। सेनापति जतेक वेतन पबैत छलाह, तकर ई तीन गुना छलैक। तदतिरिक्तो अनेक सुविधा छलैक। स्वभावतः ओ कटकक एहि प्रस्तावित नोकरीकेँ स्वीकार कऽ लेबाक निश्चय कयलनि। मुदा जखन ओ एहि सम्बन्धमे रेवरेंड ई. सी. वी. हालमसँ गप्प कयलनि तँ लगले ओ सेनापतिक वेतनकेँ कटकक नवका नोकरीक प्रत्याशित वेतनक स्तर धरि बढ़ा देलथिन। संगहि इहो निवेदन कयलथिन जे ओ ओहि विद्यालयकेँ छोड़ि कऽ नहि जाथि, जकरा ओ स्वयं ठाढ़ कयलनि अछि। तेँ फकीरमोहन ओतहि रहि गेलाह, जतऽ छलाह।

वीम्सक प्रस्ताव

जखन अपन बिनु कोनो दोषक सरकारी नोकरीमे जयबाक हुनक संपोषित इच्छाक कार्यान्वयन नहि भऽ सकलनि तँ नियति हुनका लेल सुदूरव्यापी नव मार्ग खोलि देलकनि। ई मार्ग सम्भवतः अध्यापनवृत्तिक दिनचर्यासँ अधिक आकर्षक छल।

पचीस वर्ष पूर्व धरि उड़ीसा राजा, महाराजा ओ जमींदार सभक धरती छल। वालासोर जिलासँ सटले एकटा छोटसन देशी रियासति छलैक नीलगिरि। स्वातंत्र्योत्तर भारतमे देशी रियासति सभक विलयनक आदेशक अनुसार ई वालासोरमे मिला देल गेल। जखन ओतऽ नव देवानक आवश्यकता भेलैक तँ जॉन वीम्स तरुण फकीरमोहनकेँ एहि पदक हेतु आमंत्रित कऽ देलथिन। विद्यालय शिक्षक ओ प्रेस कम्पनीक संस्थापकक रूपमे स्थानीय वृटिश अधिकारीलोकनि पर जे गंभीर प्रभाव ओ जमौने छलाह, तकर संभवतः ई मापदण्ड छल। वीम्सक प्रस्तावकेँ फकीरमोहन विना कोनो ननुनचक स्वीकार कऽ लेलथिन। आइयो के एहन पदकेँ स्वीकार नहि करत ?

अट्ठाइस वर्षक युवावस्थहिमे 1871 ई. मे फकीरमोहन नीलगिरि रियासतिक देवानक कार्यभार ग्रहण कयलनि। तकर बादसँ ओ विभिन्न प्रान्त तथा उड़ीसाक अनेक रियासति सभ जेना डमपाड़ा ढेंकनाल, दसपल्ला, पल्लहड़ा, केञ्जोझर, केन्द्रपाड़ा आदिमे देवान, सहायक देवान, प्रवन्धक अथवा सहायक प्रवन्धकक रूपमे काज करैत रहलाह। प्रशासनिक क्षेत्रमे चौथाइ शताव्दीसँ अधिके काल धरिक वैविध्यपूर्ण अनुभवक वाद ई 1892 ई. मे सेवानिवृत्त भेलाह। नर ओ नारी तथा ओकरा दूनूक वीच चलैत पारस्परिक सम्वन्ध ओ संघर्षकेँ व्यापक रंगभूमि पर देखवाक अनुकूल परिवेश प्रदान करवाक श्रेय हिनक एही वृत्तिकेँ जाइत छनि। विद्यालय शिक्षकक रूपमे हिनका एहन सुविधा कथमपि नहि भेटल रहितनि। आ यैह ओ दृष्टि छल जे परवर्त्तीकालमे हिनक कथा ओ उपन्यास सभमे समाहित भेल तथा ओकरा सभकेँ जीवन्त वना देलक। एहि तरहेँ जँ जॉन वीम्स द्वारा देवान पदक हेतु सारगर्भित आमंत्रण नहि भेटल रहितनि तँ सेनापति उड़ीसाक एकगोट जिला स्तरीय नगरमे द्वितीय श्रेणीक उड़िया उत्साही पुरुष जकाँ अवसानकेँ प्राप्त कऽ जैतथि। स्वभावतः एहि पुरुषक कलमसँ उड़िया साहित्यकेँ अपूर्व देन सभक सृजन कथमपि नहि भऽ सकैत।

नवीनताक संपोषक

जतऽ कतहु फकीरमोहन देवान, प्रबन्धक आदिक पद पर रहलाह, ओतऽ नवनिर्माणक प्रयास कयलनि। वहुतो पाठककेँ ई जानि आश्चर्य होयतनि जे लगभग एक शताव्दी पूर्वहि नीलगिरि रियासतिक ई देवान व्यापारिक स्तर पर चाहक खेती करवाक योजना वनौने छलाह। ई पहिल व्यक्ति छलाह जे नियमित वाजार प्राङ्गनक स्थापना करौलनि, संस्कृत विद्यालय खोलवौलनि, अंग्रेजी पद्धतिक विद्यालयक आरम्भ करौलनि, नीलगिरिकेँ बाहरी दुनियाँसँ सड़क-सम्पर्क द्वारा जोड़लनि तथा व्यापक स्तर पर नारिकेरक खेती आरम्भ करौलनि। जतऽ कतहु हुनक पदस्थापन भेलनि, ओतऽ ओ अपना लेल एकटा सुव्यवस्थित ओ समृद्ध फुलवारी लगविते छलाह, जकरा माध्यमे ओ स्थानीय लोक सभकेँ पश्चिमी फूल ओ तरकारी सभसँ

परिचित करवैत छलाह। फुलवारीमे हुनक सर्वाधिक प्रियस्थल गुलाबक फूलवला कोन होइत छल। एहि कोनमे दूर दूरसँ आयातित विरल प्रकृति ओ इच्छानुकूल प्रकारक गुलाव सभ रहैत छल। हेमनिमे जापानसँ भारत आयातित ***हुस्न हेना*** फूलक रात्रिकालीन सुगन्धि पर ई ततेक मुग्ध भेलाह जे समुद्र पारक एहि विदेशी फूलक सौन्दर्यक प्रसंग लऽ एकटा सम्पूर्ण स्तुतिपरक काव्येक रचना कऽ गेलाह। उड़ीसाक ग्राम्य जनताकेँ पहिल बेर पश्चिमी तरकारी यथा फूलकोबी ओ बन्धाकोबीसँ परिचित करयवाक सम्बन्धमे सेहो ई वर्णन कयने छथि। दसपल्लामे अपन बाड़ीमे उपजाओल बन्धाकोवी, ई गामक किछु प्रधानलोकनिकेँ बँटने छलाह। किछु समयक बाद जखन ओ प्रधान सभ हिनका भेटलथिन तँ हुनकालोकनिसँ जिज्ञासा कयलथिन जे हिनक शाकाहारी उपहार हुनकालोकनिकेँ केहन वुझना गेलनि। प्रधानलोकनिक सर्वसम्मत जवाब भेटलनि : "सरकार, हमर गृहणीलोकनि ओहि अजीब वस्तुकेँ गर्म तथा अम्मत कांजीमे वहुत कालधरि खौलवैत रहलीह मुदा ओ अपन अरुचिकर गन्ध नहिञे छोड़ि सकल।"

सेनापतिक आत्मचरितक अधिकांश भाग देवान ओ प्रबन्धकक रूपमे हुनक उत्तेजनापूर्ण अनुभव सभसँ भरल अछि। ई सभ मौलिक बोली-वाणीक सोझ मुदा रोचक भाषामे वर्णित अछि। कोनो निंदक व्यक्ति एहि वर्णन सभकेँ हुनक निराधार वीरगाथा कहि सकय, ताहिसँ पहिने एतऽ हुनक प्रशासकीय दक्षतापर एकगोट निष्पक्ष वृटिश अधिकारीक साक्ष्य उद्धृत कयल जाइछ।

उड़ीसा प्रमंडलक कमिश्नर टी. ई. रावेनशॉ सदृश पैघ अधिकारी वंगाल सरकारक सचिवकेँ 1873 मे पठाओल गेल अपन वार्षिक प्रतिवेदनमे लिखने छलाहः

"मिशनस्कूलक (वालासोर) संचालन उड़ीसा निवासीक सर्वश्रेष्ठ बानगी द्वारा भऽ रहल छल। एहन कोनो दोसर व्यक्तिकेँ हम आइ धरि नहि देखने छलहुँ। ई छलाह वावू फकीरमोहन सेनापति। ओ नीलगिरिक राजाक देवानक उत्तम पद सम्हारलाक बाद ई विद्यालय छोड़ि देलनि अछि। हम ई देखि प्रसन्न छी जे अपन नवीन पद पर ई उत्तरोत्तर उन्नतिक कऽ रहल छथि तथा नेत ओ न्यायक मार्ग प्रशस्त कऽ रहल छथि। ... ई एहि विशिष्ट व्यक्ति द्वारा कयल गेल अनेक अप्रत्यक्ष नीक काज सभमे एकगोट उदाहरण थिक। हिनका चलि गेलासँ हमरालोकनि अत्यन्त दुःखी छी।"

अनचोकेमे मेकियावेलीक अनुयायी

जखन हमरालोकनि पाछू दिस तकैत छी तँ पवैत छी जे इटालियन राजनीतिज्ञ ओ विद्वान मैकियावेली अपन पोथी ***प्रिंस*** मे शासककेँ जाहि मार्ग पर चलबाक चतुरतापूर्ण परामर्श देने छथि, ओहि मार्गसँ सर्वथा अनभिज्ञ रहितो हठधर्मी प्रशासक फकीरमोहन सेहो जटिल प्रशासनिक समस्याक समाधानक हेतु ओही मार्गक अवलम्वन करैत रहलाह। हिनक ई चरित्र असामीलोकनि पर निरंकुश शासनक संगहि

पितृतुल्य हितचिन्तन आ दृढ़निश्चयक संग निःसंकोचपूर्वक हेराफेरी करवाक द्वैधपूर्ण क्रियाकलाप सभसँ स्फुट होइत अछि। अपन एहि तथाकथित मैकियावेलीक अनुगमनवला व्यक्तित्वक गुणकेँ ई योग्य प्रशासक नुकाकऽ नहि रखलनि।

गान्धीजी द्वारा असहयोग आन्दोलनक अवधारणाकेँ विश्वप्रसिद्ध वनयवासँ बहुत पूर्वहिसँ सम्पूर्ण उड़ीसामे असहयोग एकगोट सामाजिक-राजनीतिक प्रथा छल आ एखनो ओहि सुदूरवर्त्ती गाम सभमे अछिये जतऽ आधुनिकतापूर्व परिवेशमे अपरिष्कृत समुदाय सभक निवास अछि। एहि शताव्दीक दोसर दशकमे कुलीन वृटिश साम्राज्यवादीलोकनि जाहि तरहेँ गान्धीजीक जन आन्दोलनक सामना कयने छलाह, लगभग एक शताव्दी पूर्वहि फकीरमोहन ठीक ओहिना उड़ीसाक कृषक वर्गक एकगोट समूहक असहयोग ओ अहिंसक प्रतिरोधकेँ सोझरौने छलाह।

डमपाड़ाक फेरी

डमपाड़ा कटक जिलाक एकगोट छोट सन रियासति छल। एकरा आव ओही जिलामे मिला लेल गेलैक अछि। जाहि समय फकीरमोहन ओतऽ देवान वनि कऽ पहुँचल छलाह, ताहि समय ओतऽ एकटा नव राजा छल। ई राजा कलकत्तामे शिक्षा पओने छल। स्वभावतः ई तरुण जमींदार जंगलमे स्थित अपन शुष्क राजधानीक नीरस जीवनक अपेक्षा शहरी जीवनक आनन्द दिस वेसी उन्मुख छल। ओ अपन अधिक समय कटक, कलकत्ता ओ अन्य भारतीय नगरमे वितवैत छल तथा पैतृक महल ओ रानी सहित प्रजागणकेँ अत्यन्त उपेक्षित छोड़ने रहैत छल। ओकर यैह इच्छा रहैत छलैक जे ओकरा लग अधिकाधिक कोष रहैक जकरा ओ शहरमे विना कोनो टोकाटोकीक खर्च कऽ सकय। आ एहि हेतु ओ अपन रियासतिमे भूमि सम्बन्धी नवीन व्यवस्थाक घोषणा कयलक जकर स्पष्ट अर्थ छलैक पुरना मालगुजारीक दरमे वृद्धि।

मुदा लगान के देवऽ चाहैत अछि ? तेँ एहिमे कोनो आश्चर्य नहि जे डमपाड़ाक निरक्षर कृषकलोकनि एहि नवीन व्यवस्थाक प्रस्तावक डटि कऽ प्रतिरोध कयलनि। बहुतो किसान एहनो छलाह जे भूमि सभ पर अवैध कब्जा कयने छलाह आ ओहि भूमिक एको पाइधरि मालगुजारी नहि दैत छलाह। हुनकालोकनिकेँ शंका भेलनि जे नवीन व्यवस्थामे ओहनो भूमिक मालगुजारी निर्धारित कऽ देल जायत। ब्राह्मण ओ ग्रामप्रधानलोकनि लगान समय पर नहि चुकौनिहार सुविधाभोगी लोकनिमे छलाह। तेँ वैह सभ अपन अवैध सुविधाक सुरक्षाक हेतु शुद्ध ओ निरक्षर कृषक समुदायकेँ वृहत्तर विद्रोहक हेतु उसकौलनि। राजा समझौतावादी छल नहि, तेँ लोक सभ नहि केवल मालगुजारी ओ कर देब वन्द कऽ देलक अपितु राजपरिवार ओ ओकर कर समाहर्त्तालोकनिक सामाजिक वहिष्कार सेहो कऽ देलक।

तैंतीस वर्षक तरुण फकीरमोहन जखन ओहि स्थल पर पहुँचलाह तँ राजाक महल ढहल-ढनमनायल अवस्थामे छल। ओकरा चारूकात जंगल-झाड़ छाड़ने छलैक। राजा वेसीकाल फरारे रहैत छल आ कर्जे पर जीवनयापन करैत छल। ओकर हवेलीक स्त्रीगण सभ जीवनयापन भत्ताक हेतु कटकक जिला मजिस्ट्रेटक ओहिठाम नालिस कयने छलीह। कटक जिलाक मजिस्ट्रेट ताहि समय जॉन वीम्स छलाह। ई फकीरमोहनकेँ ओहि आपद्ग्रस्त स्थल पर एहि आशाक संग पठौने छलाह जे ई चुस्त आ प्रसिद्ध व्यक्ति ओहिठामक जमींदार आ विद्रोही किसान सभक वीच कोनो समझौता करयबामे सफल होयताह। ओ स्वयं दूनू दिसुक आरोप-प्रत्यारोपपरक शिकायत-पत्र सभसँ पूर्वहिसँ अत्यन्त खिन्न छलाह।

असहयोग, उड़ीसाक पुरान चालि

फकीरमोहनक समझौताक प्रयास शुरू करैत देरी पझायल चिनगी फेर धनकि उठलैक। प्रतिरोधीलोकनिक निर्देशन नेता सदृश एक गोट भूतपूर्व देवान कऽ रहल छल। ई सम्पन्न स्थानीय जमींदार छल। एकरा नेतृत्वमे समानान्तर प्रशासनक स्वरूप आरम्भ कऽ देल गेल। ईलोकनि समस्त ग्रामीण जनता तथा सभ समुदायक लोकक लेल फरमान जारी कऽ देलनि जे राजमहलसँ सभ प्रकारक सामाजिक ओ व्यावसायिक सम्पर्क तोड़ि लेल जाय। एहिसँ महलक नोकर-चाकर सेहो घबड़ा गेल। स्थानीय धोवी महलक कपड़ा साफ करवासँ नकारि देलक। तखन ई काज सुदूर कटकसँ सम्पन्न होमऽ लागल। मलाह, पनिभर ओ गोआर सेहो महलकेँ अपन पारंपरिक सेवा देव बन्द कऽ देलक।

तरुण फकीरमोहन दूनू पक्षक हित चाहैत छलाह। अपनाकेँ ओ दूनू पक्षमे अविश्वसनीय पओलनि। राजा हुनका मजिस्ट्रेटक आदमी बूझि शंका करैत छल आ असामीलोकनि हुनका राजाक आदमी बूझि शंकित छल। कोनो प्रशासकीय प्रधानक हेतु ई सर्वथा धर्मसंकटवला स्थिति छल।

दिसम्वर 1876 मे वीम्स महोदय स्थले पर जा कऽ छानबीन करवाक हेतु डमपाड़ा पहुँचलाह। फकीरमोहनक कहला पर ओ एकटा नवीन समझौताक हेतु तैयार तँ भऽ गेलाह मुदा लगान वढ़यवाक हेतु तैयार नहि छलाह। राजा दूनूक हेतु जिद्द ठननें छल। सरकारी क्षेत्रमे ओकरा झनकाह बूझल जाइत छलैक। राजा तथा ओकर असामीक वीच शीघ्र कोनो समझौता नहि भेने ओकरा अपन रियासतिसँ वञ्चित होयवाक स्थिति भऽ गेल छलैक। मुदा सेनापतिक ई प्रवल इच्छा छलनि जे कम सँकम हुनका देवानगिरीमे डमपाड़ा सन उड़ीसाक प्राचीन ओ कुलीन राजघराना एहि तरहेँ नष्ट होइत नहि देखि पड़नि।

तत्कालीन अंग्रेज जिला मजिस्ट्रेट सुदूरवर्त्ती गाम सभक दौरा पर छलाह आ हुनका संग शताधिक अमलाफइलाक दल छल। राजपरिवारक विरूद्ध कठोर

सामाजिक-आर्थिक प्रतिवन्धक वादो देवानक हेतु ई अनिवार्य छलैक जे ओ हुनकालोकनिकेँ ठाठ-वाटक संग सेवा करथि आ आमोद-प्रमोदक सेहो व्यवस्था करथि। तेँ फकीर मोहनकेँ लगभग पचास माइल दूर कटकसँ समस्त आवश्यक सामान, एतऽधरि जे तरकारियो मङवऽ पड़लनि। मुदा हुनक कष्टकेँ वढ़यवाक हेतु वर्षा आरंभ भऽ गेल छलैक, जाहिसँ आवागमनक व्यवस्था छिन्न-भिन्न भऽ गेलैक। वहिष्कार करऽवला जनसमुदाय आ राजाक नोकर-चाकर सभ घर धऽ लेलक। जिला मजिस्ट्रेटक स्वागतक तैयारीसँ सम्वद्ध समस्त वस्तुजातक इन्तिजामक निरीक्षणक हेतु तरुण देवानकेँ थाल-कादो आ अन्हर-विहाड़िमे एम्हरसँ ओम्हर दौड़धूप करैत छोड़ि देल गेल।

एहि समस्त घटनाक संग-संग कूटनीतिज्ञ देवान कृषकलोकनिक असहयोगकेँ समाप्त करवाक हेतु तथा ओकर एकटा वर्गकेँ राजाक पक्षमे करवाक हेतु सभ तरहक हथकंडा अपनयवामे व्यस्त छलाह। ओ सोचलनि जे एहि काजमे ओ सफल भऽ गेल छथि। मुदा शीघ्रे हुनका वुझा गेलनि जे ई हुनक भ्रम छल। एक दिन सभटा ग्रामप्रमुख ओ अगुआ असामीलोकनिकेँ जिला मजिस्ट्रेटक कैम्पमे वेरुक पहर चारि वजे उपस्थित होयवाक लेल वजाओल गेलैक। तरुण देवान ओहि दिन भोरुका सम्पूर्ण समय ओहि समस्त कल्पित पक्षधर असामीलोकनिकेँ ई वुझयवामे विता देलनि जे जखन साहेव हुनकालोकनिकेँ पुछथिन तँ ओ सभ की जवाव देथिन।

चारि वजे खूव जोरसँ वर्षा भऽ रहल छलैक। हल्लुक विहाड़ि सेहो वहि रहल छलैक। विद्वान वीम्स संभवतः अपन नीरस समय उड़ीसाक जंगलमे अवस्थित एक गोट गामक आदिम स्थितिमे अपन प्रिय विषय भापाविज्ञानक अध्ययन करैत विता रहल छलाह। ओ दूनू पक्षक नीरस तर्क-वितर्क सुनवाक स्थितिमे एकदम्मे नहि छलाह। जखन ओ फकीरमोहन तथा असामी सभसँ भेट करवाक हेतु निकललाह तँ सौंसे शरीरकेँ आपादमस्तक कम्वलसँ झँपने छलाह।

मजिस्ट्रेटक आदेश पर चपरासी ग्रामप्रधान सभकेँ वजौलक। ओ सभ अपन विभिन्न शरणस्थलीसभसँ वाहर भेल ओ मजिस्ट्रेटक तंवू लग पंक्तिवद्ध ठाढ़ भऽ गेल। मुदा फकीरमोहन ओहि भीड़मे एकोटा ओहन लोककेँ नहि देखलनि जकरा ओ भोरुक समयमे खूव सावधानीक संग सिखौने-पढ़ौने छलाह। संभवतः ओ सभ विद्रोहक अग्रणी नेतालोकनिक द्वारा कतहु जवर्दस्ती अटका देल गेल छल।

मुदा वीम्स अपन तम्वूक गर्म वातावरणमे घुरि जयवाक हेतु तथा भाषा विज्ञानक अध्ययनक हेतु अगुतायल छलाह। ओ हिन्दीमे रोवक संग वजलाह-'हे यौ, डमपाड़ाक असामीलोकनि, की अहाँ सभ चाहैत छी जे राजाक संग अहाँ सभक सभटा झंझटिक मध्यस्थता फकीरमोहनवावू कऽ लेथि ? 'ग्राम प्रधानलोकनिक नेता सभक एकटा समूह तत्काल खूव जोरसँ चिचिया उठल : 'जऽो देवानेजी हमरा सभक झंझटिक निराकरण कऽ दितथि तँ अहाँके एतेक दूरवर्त्ती कटकसँ एहन अन्हर-विहाड़िवला मौसममे अयवाक प्रयोजने कोन छल ?

वीम्स यद्यपि उड़िया सहित समस्त पूर्वाञ्चलीय भारतीय भाषाक विद्वान छलाह, तथापि स्थानीय स्वरविन्यासमे प्रधानलोकनिक द्वारा चिचिया कऽ कहल गेल बातकेँ ठीक-ठीक पकड़ि सकब हुनका लेल कठिन छल। ओ उड़िया भाषाक अपन प्राचीन गुरू फकीरमोहन दिस तकलनि आ बजलाह-'ओ सभ की कहि रहल अछि ?'

आ हुनक प्रत्युत्पन्नमति भूतपूर्व अध्यापककेँ जवाव देवामे कनेको समय नहि लगलनि। ओ जवाव देलथिन, 'ई सभ कहि रहल अछि जे हमरालोकनिक समस्याकेँ सोझरयबाक हेतु देवानवावू पूर्णतः सक्षम छथि। वास्तवमे श्रीमानकेँ एहि हुज्जतिमे पड़वाक कोनो प्रयोजन नहि।''

फकीरमोहनक व्याख्यासँ प्रसन्न भऽ वीम्स ई विदावाक्य कहलथिन 'वहुत नीक। नवका देवानजी सभ काजकेँ नीक जकाँ देखताह। ओ अत्यन्त योग्य लोक छथि। हमरा हुनका पर पूरा विश्वास अछि। अच्छा, किसान भाइ, विदा।'

ई स्वभावतः किसान सभक वीच हताशाक कारण भऽ गेलैक। 'आखिर भेलै की ? हमरा सभक हालतिक सम्वन्धमे साहेव की बुझलथिन ?' मुदा पासा पहिनहि पलटि गेल छल। आ आव एकटा नूतन फकीरमोहनक उद्भव भऽ गेल छल जे विद्वान ओ सफल अध्यापकसँ सर्वथा भिन्न छलाह। आव ओ असाधारण रूपेँ चतुर प्रशासक छलाह। मजिस्ट्रेटक आदेशसँ संरक्षित फकीरमोहन अपन सिपाही सभकेँ असंतुष्ट ग्रामप्रधान तथा ओकरालोकनिक अनुयायी सभकेँ खेहाड़ि देवाक आदेश दऽ देलथिन जाहिसँ पुनः ओ सभ साहेवसँ गप्प नहि कऽ पावथि तथा सएह भेल।

मुदा खराव मौसमक कारणेँ वीम्सकेँ कटक प्रस्थानमे बिलम्व भेलनि। ओ रियासतिक दोसर गाम दिस विदा भऽ गेलाह। एहिसँ तरुण देवानक संकट अप्रत्याशित रूपेँ नमरैत गेल। मजिस्ट्रेट ओ हुनक अमलावर्गक लेल कटकसँ आनल गेल सिदहा-पानी निघटि गेल छल। आव सभ किछु स्थानीय स्रोतहिसँ जोगाड़ करवाक छल। देवानकेँ सभसँ पहिने गोआर सभकेँ दोसर दिन प्रातःकालक हेतु दूध आ घी पहुँचयवाक आदेश देवाक छलनि। मुदा ओ सभ कतहु देखि नहि पड़ैत छल। अन्ततः ओहि दिन प्रातःकाल एकटा गोआर घी आ दूधक अत्यल्प मात्रा लऽ कऽ प्रस्तुत भेल। वीम्सक कैम्पसँ थोड़वे दूरी पर फकीरमोहन एकटा किसानक वरंडा पर वैसल छलाह। गोआरकेँ जानि-वूझि कऽ बिलम्वसँ पहुँचल देखि हुनक क्रोध अत्यन्त उग्र भऽ गेलनि। एखनो फूह-फाह पड़िते छलैक। गामक गली सभ कादो-खींचसँ भरल छलैक। ओही कादोमे एकटा विनु चीड़ल काठक गोलिया पड़ल छलैक। फकीरमोहन ओही गोलियामे गोआरकेँ वान्हि देवाक आदेश लगले दूटा सिपाहीकेँ दऽ देलथिन। एकटा सिपाही गोआरक देह पर दूध आ घी ढारैत गेल तथा दोसर तावत् धरि ओकरा पर लाठी वरसावैत रहल यावत् ओकरा रुकि जयवाक आदेश नहि भेटलैक।

जखन ई प्रक्रिया पूरा जोर पकड़ने छल, तखनहि दण्डित गोआरक संगी सभ लगेपाससँ दौड़ि पड़ल आ ओ सभ कदवाहे पानिमे फकीरमोहनकेँ साष्टांग दण्डवत

करैत एके स्वरमे चिचिआइत रहल, 'हे कृपानिधान ! हे न्यायपालक ! हमरा सभकेँ बचाउ ! हमरालोकनि प्रार्थना करैत छी। कृपया हमर भैयारीकेँ वन्धनमुक्त कऽ देल जाओ। एखनसँ श्रीमानकेँ जतेक आवश्यकता होयत, सभटा दूध आ घी हमरालोकनि जुटा देल करव।'

आ वास्तवमे समुचित अनुरोधोसँ जे प्रभाव उत्पन्न हैब संभव नहि भऽ सकल, से कठोर दंड कऽ देखौलक। लगभग आधा घंटाक भीतरे साहेव आ हुनक अमला लोकनिक लेल घी आ दूधक वर्त्तन लऽ लऽ कऽ लोक सभ पहुँचऽ लागल। संगहि माछ ओ आनो सामान सभ आशातीत परिमाणमे जुटि गेल। असहयोग, अहिंसक प्रतिरोध आ मालगुजारी नहि देवाक प्रचारकेँ तत्क्षण क्षत-विक्षत करवामे ई घटना निर्भीक आघात सावित भेल। देवान फकीरमोहन एकटा जटिल समस्याकेँ वलप्रयोग द्वारा समाधान धरि पहुँचा देने छलाह।

सफलता सन कोनो विजय नहि होइछ। परिस्थितिकेँ अपन अनुकूल वना लेवाक एहि प्रारंभिक सफलताक प्रतीकसँ प्रोत्साहित फकीरमोहन नेतावर्गक किछु ग्रामप्रधान सभ पर फौजदारी मुकदमा वीम्स लग ठोकि देलनि। एहिमे जनविरोधक तथाकथित नायक दयानिधि पटनायक सेहो छल। ई एक गोट भूतपूर्व देवानक पितियौत छल। ओही समय फकीरमोहनकेँ पता लगलनि जे ग्रामप्रमुख सभ फेरसँ साहेव लग अपन दुखड़ा रखवाक हेतु अन्तिम आक्रामक प्रयास कऽ रहल छथि आ गाम-गमाति सँ निकलि जुलूसक रूपमे हुनक अस्थायी निवास लग जमा भऽ रहल छथि। प्रत्युत्पन्नमति फकीरमोहन तत्क्षणे सिपाहीक एकटा सशक्त टुकड़ीकेँ फौजदारी मुकदमामे फसल लोकसभकेँ गिरफ्तार करवाक आदेशक संग पठा देलनि। जखन ई जुलूस एकटा सुक्खल नदीक पाट दऽ आगू वढ़ि रहल छल, तखने सेनापतिक सशस्त्र सिपाही सभ जल्दी जल्दी सभ अपराधीकेँ चीन्हि-चीन्हि कऽ हथकड़ी लगा देलक। एकर द्रुतगामी प्रभाव पड़लैक। भीड़मे हरहोरि मचि गेलैक। सभ अपन अपन जान लऽ कऽ जतऽ ततऽ पड़ा गेल। एहि तरहेँ ई असहयोग आन्दोलन समाप्त भऽ गेल।

डमपाड़ामे आव शान्ति छल। स्थिति सामान्य होइत चल गेल। फकीरमोहन समझौताक प्रक्रिया आरंभ कऽ देलनि। राजा आव प्रसन्न छल। ओ जीवन भरि फकीरमोहनकेँ देवानक पद पर राखऽ चाहैत छल आ हुनका अवकाश प्राप्तिक वाद अहगर पेंशन सेहो देवऽ चाहैत छल। अपन एहि प्रस्तावक संग ओ कमिश्नर लग सेहो गेल। मुदा ओ चतुर अधिकारी फकीरमोहनकेँ विचार देलथिन जे ओ राजाक वातमे नहि पड़थि। हुनका ढेंकनाल देशी रियासतिमे सहायक प्रवन्धकक रूपमे वहाल कयल जयवाक सरकारी आदेशक पालन करक चाहियनि। ओ रियासति ओहि समयमे कोर्ट ऑफ वार्ड्सक प्रवन्धमे छल। ओहिठाम फकीरमोहनकेँ जीवनस्तर ओ वेतन दूनूमे नीक वढ़ोतरी होइतनि।

एहि तरहेँ फकीरमोहन मोछ पर ताओ दैत राजा ओ ओकर प्रजाक वीच उभरल एक गोट जटिल समस्याक समाधान कऽ डमपाड़ा छोड़लनि। एहि समस्याक समाधान

ओ दूनू पक्षक हेतु उचित रीति आ सम्मानक संग कयने छलाह। हुनक स्पष्ट मानववादिता आ उदारताक सम्बन्धमे बहुत किछु लिखल जा सकैछ। उदाहरणक हेतु ओहि रियासतिकेँ छोड़बासँ पहिने ओ भूतपूर्व देवान दयानिधि पटनायक तथा आनो एहन लोक सभकेँ जे किसान विद्रोहक नायकलोकनि छलाह, क्षतिपूर्त्ति प्रदान कयने छलाह, किएक तँ हुनक विश्वास छलनि जे समझौता पहुँचबाक प्रक्रियामे ओ हुनकालोकनिक प्रति अत्यधिक कठोर बनल रहल छलाह।

अध्याय 7

स्वदेशी सेनाक नायक

केञोझर सम्प्रति उड़ीसा प्रान्तक एक गोट जिला थिक। पूर्वमे ई एक गोट स्वतंत्र रियासति छल। एहि रियासति पर भंजलोकनिक शासन छल। उड़ीसाक मध्यकालीन कविगणमे सर्वश्रेष्ठ कवि उपेन्द्र भंज एही भंज समुदायमे जन्म लेने छलाह। भंज वंश उड़ीसाक यशस्वी शासक वंश भऽ गेल अछि। केञोझरक भंजसमुदाय मयूरभंजक यशस्वी भंजसमुदायक एक गोट शाखा छल जकर उड़ीसाक साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान रहल अछि।

1887 मे जखन फकीरमोहन प्रबन्धकक रूपमे केञोझर रियासतिमे पदग्रहण कयलनि, तखन ओ केवल 45 वर्षक छलाह। एहि समय ओ उत्साह तथा शक्तिसँ सर्वथा सम्पन्न छलाह। हुनक तत्कालीन शासक महाराजा धनंजय भंज छलाह। ई शिक्षित तथा योग्य पुरुष छलाह। हिनका द्वारा कार्यान्वित सिचाइ परियोजना सभ एखनो हुनक प्रशासकीय क्षमताक संगहि प्रजावत्सलताक स्मृति चिह्नक रूपमे विद्यमान अछि।

राजा बनौनिहार भुइञा

केञोझर भुइञा जनजातिक आदिम निवास अछि। धनंजय नारायण भंज अत्यधिक प्रगतिवादी छलाह। ओ धरणीधर नामक एक गोट तरुण भुइञाकेँ मालगुजारी सर्वेक्षणमे प्रशिक्षण प्राप्त करबाक हेतु राजकीय खर्च पर कटक पठौने छलाह। प्रशिक्षण समाप्त भेलाक बाद एहि भुइञाकेँ परिवीक्षाधीन सर्वेक्षकक रूपमे नियुक्त कऽ लेल गेलैक।

उड़ीसाक समस्त रियासतिमे व्यवहारतः अनिवार्य बेगारक बदनाम प्रथा प्रचलित छलैक। प्रत्येक परिवारकेँ किछु निश्चित दिनक निर्धारित मजदूरी रियासतिकेँ देबऽ पड़ैत छलैक। सामान्यतः परिवारक वृद्धपुरुषलोकनि स्वयंसेवकक रूपमे निःशुल्क श्रम प्रदान करैत छलाह आ परिवारक अल्प खेतीकेँ देखबाक हेतु तरुणलोकनिकेँ छोड़ि

देल जाइत छलनि। एहि वुजुर्ग कृषकलोकनिकेँ अपन खाद्य सामग्री आ औजार सेहो उघऽ पड़ैत छलनि। हिनकालोकनिकेँ भरि दिनुक कठिन परिश्रमक बाद अपन भोजन सेहो वनवऽ पड़ैत छलनि। हिनकालोकनिकेँ जंगलाह क्षेत्रमे फुजल आकाशक नीचाँ सूतऽ पड़ैत छलनि।

रियासतिक अन्य वर्गहि जकाँ भुइञोलोकनिकेँ अनिवार्य भर्त्तीक बाध्यता छलनि। ब्राह्मण, अमीर किसान आ अधिकारीवर्ग एहि भर्त्तीसँ मुक्त छलाह। केञोझरक एक गोट सहायक प्रबन्धक विचित्रानन्द दास एकटा लघु नदी बान्ह परियोजनाक हेतु केवल भुइञेलोकनिक भर्त्ती करैत छल आ ओकरा सभक प्रति अत्यन्त क्रूर रहैत छल। सदिखन ओ कोड़ाक व्यवहार करैत रहैत छल तथा बेसीकाल ओकरा सभकेँ खाली पेटे काज करवाक लेल वाध्य करैत रहैत छल। अतिसंवेदनशील भुइञालोकनि भीतरे भीतर रोषसँ जरैत रहैत छलाह आ एकटा एहन अगुआक प्रतिक्षामे छलाह जे प्रतिशोधक लड़ाइ ठानि सकय। ई नेतृत्व कटकमे शिक्षित तरुण धरणीधरक रूपमे सहजहि उपलब्ध भऽ गेल।

भुइञालोकनिकेँ ई प्रजातीय गौरवपूर्ण स्मृति छलनि जे कहियो ई सम्पूर्ण रियासति हुनके शासनमे छल। हुनकालोकनिकेँ इहो स्मरण छलनि जे हिन्दूलोकनिक द्वारा ओ सभ अनुर्वर पहाड़ी क्षेत्र दिस अनुचित रूपेँ धकेलि देल गेल छलाह। प्राचीन कालमे केञोझर पड़ोसक मयूरभंज रियासतिक एकटा भाग छल। मुदा राजधानी ततेक दूर छलैक जे मुखियाक प्रति अपन निष्ठा देखयबाक हेतु ओतेक दूर जायब कठिन भऽ गेल छलैक। अतएव, ओ सभ एक बेर मयूरभंज घरानाक बाल राजकुमारक अपहरण कऽ लेलनि आ ओकरे अपन राजा बना लेलनि। मुदा राजाक हेतु घोड़ा अथवा हाथीक सवारी आवश्यक छल। से भुइञालोकनि लग छलनि नहि। तेँ एकटा भुइञाप्रधान अपन चारू हाथ-पैरसँ कामचलाउ राजकीय घोड़ा अथवा हाथी जकाँ चलऽ लगैत छलाह आ तरुण राजाकेँ ओहि पर सवारी कराओल जाइत छलैक। एहि तरहेँ ओहि राजाक संप्रभुतासम्पन्नताक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति होइत छलैक। ततः पर दोसर भुइञाप्रधान तरुण राजाक समक्ष साष्टांग झुकि जाइत छलाह। राजाक तलवारसँ हुनक गर्दनि छुआ देल जाइत छलैक। ई एहि तथ्यक द्योतक छल जे जनजाति राजाकेँ दोषी भुइञा सभकेँ स्वविवेक पर आधारित यथोचित दण्ड देवाक अधिकार प्रदान करैत अछि। केञोझरक प्रत्येक नव राजाक राज्याभिषेकक अवसर पर ई प्रतीकात्मक क्रिया सभ एखनो सम्पन्न होइत अछि। स्वभावतः सोझमतिया भुइञाप्रधानलोकनिक मनमे ई वात बैसि गेल छलनि जे केञोझरमे राजा बनेनाइ आ नइ बनेनाइक पूर्ण अधिकार आ दायित्व हुनकेलोकनिक थिकनि आ अपने धरती पर हुनकालोकनिकेँ कोनो प्रकारक वन्धनमे रखबाक अधिकार ककरो दोसरकेँ नहि छैक।

वहानावाज

कटकमे रहि कऽ तरुण भुइञा धरणीधर राष्ट्रभक्ति ओ प्रगतिशील विचारधारासँ परिचित भऽ गेल छल। पड़ोसक वृटिश जिला सिंहभूमिमे रियासतिक अधिकारीलोकनिकेँ सीमा विवादक समाधानमे सहायता करैत काल ओ ई जानि कऽ अत्यन्त आश्चर्यचकित रहि गेल जे ओकर भाय गोपाल तथा किछु आनो नजदीकी सम्वन्धी सभकेँ राजा गिरफ्तार कऽ कऽ जेलमे वन्द करवा देलथिन अछि। ओ तुरंत नोकरी छोड़ि देलक आ जनजातीय क्षेत्रमे पड़ाकऽ सत्ताक विरोधमे भीषण विद्रोहक शंखनाद कऽ देलक। आव ओ अपनाकेँ महारानीक दत्तक पुत्रक रूपमे घोषित कऽ देलक आ एहि पदनामसँ अनेक आज्ञापत्र जारी करऽ लागल। ओकरा चारूकात सैकड़ो आदिवासी युद्धक हेतु तीर-धनुषक संग जमा भऽ गेल छलैक। राजाक किछु वाहरी खरिहान तथा पुलिस चौकी पर हमला कऽ ई विद्रोहीसभ किछु आग्नेयास्त्र तथा जंगलमे दीर्घकाल धरि नुकाकऽ रहवा योग्य पर्याप्त खाद्यान्न जमा कऽ लेलक।

फकीरमोहन केञोझरक प्रशासनक संचालन राजाक महलक स्थल केञोझरगढ़सँ नहि कऽ रियासतिक दोसर पैघ शहर आनन्दपुरसँ कऽ रहल छलाह। ई शहर रियासतिक आर्थिक समृद्धिक केन्द्र छल। कानमे भुइञा विद्रोहक अफवाह आ चेतौनी पहुँचैत देरी फकीरमोहन केञोझरगढ़ आ आनन्दपुरकेँ जोड़ऽवला सड़क पर वहुतोक संवाहक दूत सभकेँ पठा देलनि, जे चौबीसो घंटा विद्रोहक प्रत्येक क्षणक प्रगतिसँ हुनका अवगत करवैत रहितय। मुदा विद्रोह आरंभ भेलाक तेसर राति ओ ई जानि कऽ ठकुअयले रहि गेलाह जे राजा अपन वहुसंख्यक अमलासभक संग कटक भागि गेल छथि तथा असुरक्षित आ खाली महलमे स्त्रीगणमात्रकेँ असहाय छोड़ि गेल छथि।

फकीरमोहन पहिने रियासतिक सैनिकलोकनिकेँ एकत्र कयलनि जाहिसँ विद्रोहीलोकनिक मोकाविला कयल जा सकय। तखन ओ पुरुषार्थविहीन राजाकेँ बुझा-सुझा कऽ मनयवाक हेतु कटक गेलाह। एतऽ ओ सैनिक सहायता प्राप्त करवाक हेतु कठिन परिश्रम ओ प्रयत्न कयलनि। वहुत हद धरि अपन प्रयत्नमे सफल भेलाक बाद फकीरमोहन महाराजाक संग आनन्दपुर आवि गेलाह। एहि समय धरि रियासती सेना आनन्दपुरमे जमा भऽ गेल छल। एकटा हाथी पर सवार महाराजा सेनाक अग्रिम दस्ता तथा दोसर हाथीपर सवार फकीरमोहन पछिला दस्ताक नेतृत्व करैत ओहि आदिम सेनाकेँ लऽ कऽ राजधानी दिस प्रस्थान कयलनि। ई लोकनि भयानक जंगली मार्ग होइत रातिमे आगू बढ़ि रहल छलाह जाहिसँ आदिवासी गुरिल्ला समूहक हमलासँ बचल रहि सकथि।

मछिमारा खरगिदरी सभक सेना

दोसर रातिक विश्रामक समय ई सूचना पहुँचल जे विद्रोहीसभ महल पर कब्जा कऽ लेने अछि। आतंकित राजा फेर कटक पड़ा गेलाह। मुदा हुनक चतुर प्रबन्धक

हुनकासँ ई अधिकार प्राप्त कऽ लेने छलाह जे आत्मरक्षा अथवा खाली महलक सम्पत्ति वा ओहिमे रहनिहारि रानी सभक इज्जति पर आघात कयला उत्तर भुइञा सभकेँ जानसँ मारि देल जाय।

अपन पारिवारिक नाम तथा परम्पराक अनुकूल सेनापति फकीरमोहन आब रियासती सेनाक सेनापतिक रूपमे आगू बढ़लाह। एहि असाधारण तथा अप्रत्याशित सैनिक दायित्वकेँ सम्हारलाक बाद ओ प्रत्येक विश्रामस्थल पर अपन सिपाही सभकेँ आधुनिक ढंगसँ सैन्य-प्रदर्शन करबऽ लगलाह तथा ओकरा सभक हथियारक व्यक्तिगत रूपसँ जाँच करऽ लगलाह। यद्यपि एहि समस्त प्रक्रियासँ हुनका आघाते पहुँचलनि, तथापि कखनो ओ एहि तथ्यकेँ प्रकट नहि कयलनि। सिपाही सभमे अधिकांश झुनकुट बूढ़ सभ छलाह। संभवतः हुनका सभक प्रपितामह मराठाक समयमे किछु वास्तविक युद्धकार्य जनैत छल होयताह। मुदा बृटेनक संग एक शताब्दीसँ अधिके कालसँ शांतिवार्त्ताक संग रहबाक कारणेँ हिनकालोकनिक तरुआरि म्यानमे स्थिर पड़ल रहल छलनि आ अप्रयुक्त देशी बन्दूक सभमे जंग लागि गेल छलनि। एहि अनपेक्षित अभियानक हेतु सुदूरवर्त्ती गाम सभसँ प्रस्थान करबासँ पहिने ईलोकनि अपन अपन वन्दूकक परीक्षणो धरि नहि कऽ सकल छलाह। अधिकांश सिपाही ई शिकायत कयलनि जे हुनका सभकेँ तैयारो होयबाक पर्याप्त समय नहि भेटलनि आ ने ओ सभ पर्याप्त परिमाणमे बारूदे लऽ सकल छलाह।

यद्यपि एहू प्रकारक भयावह स्थिति स्पष्ट भेला पर फकीरमोहन अपन एहि खरगिदरी सेनाक साहसपूर्वक अगुअइ करैत रहलाह। अवश्ये एहि सेनामे किछु एहनो चपल प्रकृतिक बहादुर कछैल जवान सभ छलाह जे एहि समस्त गतिरोधक बादो अपन सेनापतिक समक्ष अपन जंग लागल तरुआरिकेँ वीरतापूर्वक भँजैत रहैत छलाह। ओ लोकनि ई घोषणा करैत रहैत छलाह जे ओ सभ निश्चित रूपसँ समस्त भुइञा खानदानकेँ नष्ट कऽ देताह। स्थितिक प्रति गंभीर रहितो फकीरमोहन एहि प्रकारक झमकौआ आ मिथ्या वीरताक प्रदर्शनसँ खूब आनन्द लैत छलाह। एहि तरहक निरीक्षण परवर्त्तीकालमे हुनका द्वारा लिखल गेल कथा ओ उपन्यासकेँ अत्यन्त रोचक बना देलक अछि।

व्यवहारकुशल आत्मसमर्पण

फकीरमोहन जखन राजधानीक निकट पहुँचि रहल छलाह कि हुनका सूचना भेटलनि जे वस्तुतः भुइञा सभ महल पर कब्जा नहि कयलक अछि। ओ सभ राजधानीसँ सटले पहाड़ी पर बसल राइसुआं गामक निकट जमा भऽ रहल अछि आ शीघ्रे आक्रमण करऽवला अछि। विद्रोहीलोकनिक दुष्टतापूर्ण योजनाकेँ विफल करबाक हेतु ओ ओकरा सभक नुकयबाक स्थले पर चढ़ि नष्ट कऽ देबाक साहसिक अभियान कयलनि। विद्रोही सभक स्थिति आ संख्यावलक आकलनक हेतु ओ दूत पठौलनि।

मुदा दूत सभ हिनका ठकि लेलकनि। दूतक मिथ्या विवरण पर विश्वास कऽ ओ विद्रोहीलोकनिक गढ़मे बिना बुझने-सुझने आगू वढ़ि गेलाह। जखन ओ तथा हुनक सैन्य टुकड़ी राइसुआं दर्रा पार कऽ रहल छल आ कि पहाड़ीक दूनू कातसँ बंदूक दागल जाय लागल। प्रातःकालक स्पष्ट प्रकाशमे ओ विद्रोहीलोकनिकेँ तीरकमान आ देशी बन्दूक संग देखलनि। विद्रोही सभ गाछ ओ जंगल-झाड़क पाछाँ नुकायल छल। जखन ओ विचारिये रहल छलाह जे आव अगिला युक्ति की होयवाक चाही की तखने एकटा तीर हुनक गरदनिकेँ लगभग छूवैत निकलि गेल। केवल एकटा केशक चौड़ाइक दूरीक कारणेँ हुनक माथ हुनक कान्ह पर रहि सकल। संख्या वलमे शत्रुक श्रेष्ठताक संगहि सामरिक दृष्टिसँ पहाड़ी पर नीक स्थितिमे ओकरा सभक नुकायल रहवाक तथ्यसँ अवगत भऽ गेलाक बाद शीघ्रे ओ चतुरताक संग अपन वुद्धियेकेँ वीरताक वेसी नीक पहलू वनौलनि आ अनावश्यक खूनखरावीकेँ टारवाक हेतु आत्मसमर्पण कऽ देलनि।

प्रत्युतपन्नमतित्वक संघर्ष

परिस्थितिक कारणेँ अत्यन्त तर्कपूर्ण डेगक रूपमे शस्त्रक लड़ाइ तँ छोड़ि देलनि मुदा चतुर फकीरमोहन शीघ्रे वुद्धिक लड़ाइ आरम्भ कऽ देलनि। एहि प्रक्रिया द्वारा ओ शत्रुकेँ पूर्णतः पराजित कऽ देलनि। बंदी राजप्रवन्धककेँ धरणीधर लग प्रस्तुत कयल गेल। यैह धरणीधर केञोझरक राजगद्दीक मालिक होयवाक अभिनय कयने छल। फकीरमोहन एहि तरुण सर्वेक्षककेँ अपन अधीनस्थ कर्मचारी होयवाक कारणेँ नीक जकाँ जनैत छलाह। मुदा ओ एहि नवीन परिस्थितिक संग पूर्णतः तालमेल कऽ लेलनि आ अत्यन्त लज्जित होइत कहलथिन जे ओ अपन परिवारक लेल रोटी जुटौनिहार कमासुत व्यक्तिमात्र छथि आ हुनका जँ नवीन महाराजाक देवानक पद देल जाय तँ एहिसँ हुनका प्रसन्नते होयतनि।

तरुण धरणीधर ओहिठाम जमा भेल अपन अनुयायी सभकेँ कहलकैक जे वास्तवमे ओ एतेक पैघ रियासतिक शासन असगरे नहि चला सकैछ। ओकरा योग्य अधिकारीलोकनिक सहायता अवश्य भेटक चाही। एहिठाम एकटा अनुभवी प्रबन्धक उपलब्ध छथि। ई प्रशासनक सभटा गूढ़ तत्त्वकेँ जनैत छथि। किएक ने हिनका एखनेसँ अपना ओहिठाम नोकरीमे राखि लेल जाय। सामान्यतः समस्त अधिकारीवर्गक प्रति सशंकित भुइञा समुदाय अत्यन्त कठिनताक संग अपन नेताक प्रस्तावसँ सहमत होइत गेल। एहन नहि छल जे फकीरमोहन एहि स्थितिसँ अनवधान छलाह। तैं ओ किछु सुविचारित छद्मपूर्ण मुदा मनोहर क्रिया सभ कऽ कऽ ओकरा सभक मोनकेँ जितबाक प्रयास करैत रहलाह। संगहि वस्तुकेँ वढ़ा-चढ़ा कऽ कहवाक असाधारण गुणक द्वारा ओ महाराजाक महल पर भुइञा सभक सुनियोजित आक्रमणकेँ सेहो सफलतापूर्वक टारैत रहलाह। नीक रणकौशल तथा आधुनिक

शस्त्रास्त्रक सहायतासँ महलकेँ क्षणभरिमे नष्ट कयल जा सकैछ, एहि प्रस्तावक माध्यमे ओ भुइञा सभक अभियानकेँ रोकने रहलाह। तीर-धनुषक लड़ाइक खतरा लेने कोन फायदा ? एहिसँ अनेरे बहुतो लोकक जान अनावश्यक रूपेँ जाइत छैक। आदिवासीलोकनि कलकत्तासँ आवऽवला शक्तिशाली विस्फोटकक प्रतीक्षामे रोकि लेल गेलाह।

तरुण धरणीधर फकीरमोहने जकाँ पान खयवाक सौख पोसने छल। ई व्यसन दूनूकेँ एक दोसरासँ निकटतर करैत चल गेल। किछु और पानक पात मँगयबाक वहाने फकीरमोहन महाराजाकेँ एक गोट कूट पत्र पठौलथिन। एहिमे शीघ्र सैनिक आक्रमणक सुझाव देल गेल छल। ई पत्र 16 मई 1891 केँ भोलानाथ नामक व्यक्तिकेँ लिखल गेल छल। भोलानाथकेँ फकीरमोहनक मुनीम बूझल जाइत छल, मुदा वस्तुतः ओ रियासतिक अधिकारी छल। एहि पत्रकेँ धरणीधर सेहो निरीक्षण कयने छल। एहिमे कहल गेल छलैक :

'ई हमर मुनीम भोलानाथक सूचनाक हेतु लिखल जा रहल अछि। महारानीक पुत्रक हेतु अत्यन्त आवश्यक होयवाक कारणेँ कमसँ कम एक सय पात पान आ दू सय गोट सुपारी कोनहुना पठाओल जाय। हमर कुसियारक खेतक पटौनीक लेल उत्तर भरसँ एकटा खाधि खूनि लेल जाय अन्यथा सभटा कुसियार सूखि जायत।'

ई कूटपत्र तीन गोट तारसँ लपेटल गेल छल। भाग्यवशात् अधिकारीलोकनि सेनापतिक एहि कूट संदेशकेँ बुझबामे समर्थ भेलाह। पानक पातसँ सिपाही आ सुपारीसँ बंदूकक अर्थ लेल गेल। तारक प्रतीककेँ सेहो बूझि लेल गेल। एकर अर्थ छल जे एहि भयावह स्थितिक सूचना समस्त रियासती अधिकारीलोकनिकेँ तार द्वारा दऽ देल जाय आ हुनकालोकनिकेँ पर्याप्त सैनिक सहायताक आग्रह कयल जाय। ई सभ काज चटपट कयल गेल। आ एक दिन प्रातःकालक मनोहर समयमे शीघ्रे तरुण अभिनेता धरणीधर आ ओकर प्रोत्साहकदलकेँ नुकयबाक स्थानहि पर आकस्मिक हमला कऽ रियासती सेना गिरफ्तार कऽ लेलकैक। अनेको वर्षक कठोर कारावासक सजा भोगलाक वाद तरुण भुइञा धरणीधरक केञोझरक महाराजा होयबाक सपना सभ दिनक हेतु चूरमचूर भऽ गेलैक।

अध्याय 8

पारिवारिक जीवनक दुःख आ सुख

वाह्य रूपसँ अत्यन्त सुखकर भावराशिक अभिव्यंजक फकीरमोहनक आंतरिक जीवन उत्तप्त ओ निर्जन मरुभूमि सदृश छल। ऊहिगर ओ प्रतिभासम्पन्न होइतो ओ व्यक्ति रूपमे नितान्त असगर छलाह। एहि एकाकीपन सँ हिनका परमानन्दपूर्ण मुक्ति तँ भेटलनि, मुदा किछुए कालक लेल। ई आनन्द दुइ गोट स्त्रियोचित विरल पुष्पक सुगंधिक कारणेँ समुपस्थित भेल छल। मुदा एहि प्रतिभाशाली पुरुषक अप्रत्याशित रचनात्मक गतिविधि जावे पल्लवित पुष्पित होइत ताहि सँ पूर्वहि ओ दूनू विरल देवतात्मा ई संसार छोड़ि चुकल छलीह आ पुनः फकीरमोहन दुःख आ एकान्त सेवनक हेतु छोड़ि देल गेल छलाह।

एकर पर्याप्त कारण छल जे ई व्यक्ति जीवनक प्रति पूर्णतः निंदक भावनासँ भरल रहैत। हिनक जीवन निराशावादिताक गहन अन्धकारमे बितबाक चाहैत छल। मुदा महत्वपूर्ण ई अछि जे ई नीक जीवनक उत्साही प्रवक्ता बनलाह। निराशाक अन्धकाररूपी मेघक बीच आशाक विजलौकाकेँ ने तँ ई न्यूने कऽ कऽ बुझलनि आ ने ओकरा नजरि परसँ हुसहे देलनि। मनुष्य नामक पशुक वैचित्र्य पर ई खुलि कऽ हँसैत रहलाह आ आनो लोककेँ एहि असाधारण सौन्दर्यदर्शनक सहभागी बनबैत रहलाह। हिनक व्यक्तित्वक ई संतुलन, परोपकारक भावनासँ एहि असार संसारकेँ देखबाक हुनक दिशा-दृष्टि जँ व्यक्तिगत जीवनक पर्याप्त कष्टक बादो संभव भऽ सकलनि तँ तकर कारण छल दुइगोट निरक्षरा अथवा अर्द्धशिक्षिता महिलाक हिनक जीवन पर मार्मिक प्रभाव। ई दूनू महिला हिनक कोमल संवेदनाकेँ अपरिमित दुलार आ स्नेह द्वारा उभारैत रहलीह। वस्तुतः एहन प्रभावक निर्माण कोनो महिलेटासँ संभव भऽ सकैत अछि।

दाम्पत्य सुख

फकीरमोहनक जीवनमे दुइ गोट दिव्यात्मा महिला छलीह—हुनक बावी कुचिलादेइ आ दोसर पत्नी कृष्णाकुमारी।

तेरह वर्षक असंगत आयुमे घरकथाक माध्यमे हिनका धऽ पकड़ि कऽ बिआह करा देल गेल छलनि। ई बिआह जाहि महिलासँ कराओल गेल छलनि से हिनक क्रूरा पितिआइनक संग एके छत तर रहैत छलीह। बालासोरमे बिताओल हिनक जीवनक प्रारंभिक वर्ष सभमे ई दूनू महिला हिनक दिन आ रातिकेँ सदिखन असहनीय बनौने रहैत छलथिन। अत्यन्त दीन ओ लाचार पतिदेवक कथन छनिः

'बालासोर शहरक मानिकखंभा क्षेत्रक निवासी नारायण परिडाक कन्या लीलावती देवीसँ हमर बिआह भेल। उनतीस वर्षक अवस्था धरि ओ हमरा संगे रहलीह। ओ अत्यन्त क्रूरा, अहंकारी ओ कटुभाषिणी तँ छलीहे, सबसँ बढ़िकऽ हमर इच्छाक ठीक विपरीत करबामे लागल रहऽवाली छलीह। ई वैवाहिक संयोग हमरा लेल जीवनक प्रारंभिक वर्ष सभक दीर्घ ओ दुःखदायी बीमारीअहुक अवस्थासँ बेसी संतापकारक छल। भयानक मानसिक यातनासँ परिपूर्ण ओहि अवधिमे हमरा संस्कृतक ई सुप्रचलित चतुष्पदी कहबी सदिखन मोन पड़ैत रहैत छल :

यस्य नास्ति गृहे माता भार्या च कटुभाषिणी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्।।[1]

'ओहि समय हमर शान्तिक मूल स्रोत हमर बाबी छलीह। हुनका मुइलाक बाद हमर ई तथाकथित घर हमरा लेल यातनागृह बनि गेल। हमर पहिल पत्नी गंभीर बीमारीक शिकार भऽ गेलीह। एक साल धरिक इलाजक बाद हुनक बीमारीकेँ असाध्य घोषित कऽ देल गेलनि। अन्तिम प्रयासक हेतु हुनक माता-पिता हुनका अपना घर पर लऽ गेलथिन जतऽ अन्ततः ओ गोलोकवासी भऽ गेलीह । हम ओहि समय पुरी मे रही।'

निर्मम पितिआइन

अनुपयुक्त पत्नी जन्य मानसिक यातनाक अतिरिक्त तरुण फकीरमोहन क्रूरा ओ सहानुभूतिरहित पितिआइनक नित्यप्रतिक नरकयातनाक तर रहैत आबि रहल छलाह। एहि सम्बन्धमे हमरालोकनि पूर्वहिसँ जनैत छी। ई दूनू महिला तरुण फकीरमोहनकेँ लगभग बताह कऽ देने छलथिन। एहि पुरुषक अन्तर्निहित नायकत्व ओ अद्‌भुत जीवन्तताक सम्बन्धमे बहुत किछु लिखल जा सकैत अछि, किएक तँ घरक एहि नरकमे रहितो ओ बाह्य संसारक प्रत्येक क्षेत्रमे विद्यालयक प्रधानाध्यापक, लेखक ओ विद्वान तथा सबसेँ बेसी अपन समुदायक पुरुषार्थी नेताक रूपमे पूर्ण सफलता प्राप्त कऽ लेने छलाह।

---

1 जकरा घर मे माय नहि होइक आ पत्नी कर्कशा होइक तकरा वनहि चल जयवाक चाही किएक तँ एहन लोकक लेखेँ जेहने वन तेहने घर

पत्नी आ पितिआइनक माध्यमे ओहन हृदयविदारक कटु अनुभवक वाद संभवतः मेधावी फकीरमोहन दोसर विआहक वात नहि सोचितथि। मुदा पत्नीक देहान्तक वाद समाजक जेठ-श्रेष्ठ लोकनि हिनक कान भरऽ लगलथिन जे हिन्दू पुरुषक लेल अपना पाछाँ पुत्रक रूपमे उत्तराधिकारी नहि छोड़व नीक नहि मानल जाइत छैक। एहिसँ सुविचारित रूपेँ पूर्वज-परम्परा भंग होइत छैक आ पूर्वजक संग आत्माक मिलन वाधित होइत छैक। यद्यपि अनाथ फकीरमोहन अपन माता-पिताकेँ कहियो देखनहु नहि छलाह तथापि हुनकालोकनिक स्मृतिक प्रति भक्तिपूर्ण श्रद्धाक भाव रखैत छलाह। अतएव निजी सुखक आशाक अपेक्षा पितरलोकनिकेँ तुष्ट करवाक पुण्य भावक कारणेँ फकीरमोहन अपन शुभचिन्तक लोकनिक द्वारा पुनर्विवाह करवाक अनुनय दिस झुकैत चल गेलाह।

देवीक आगमनसँ नीरस जीवनक समाप्ति

दोसरो विआह घरकथेक माध्यमसँ भेल। एकर घटकैती हुनक एक गोट महिला सम्वन्धी कयने छलथिन। भावी पत्नीक आयु केवल वारह वर्ष रहनि आ ओ अपन भावी पतिक आयुक आधोसँ कमे छलीह। मुदा ई विचित्र गप्प अछि जे यैह अर्द्धशिक्षिता वाला-पत्नी कृष्णाकुमारी एहि प्रतिभाशाली व्यक्तिक जीवनकेँ सुख-सौभाग्यसँ पूर्ण कऽ देलथिन। ई सुख हिनक जीवनमे दीर्घकाल धरि स्थिर रहि सकल। ई हमरा सभकेँ चार्ली चैपलिनक चारिम पत्नी ऊनाक संग ओकर सुखद वैवाहिक जीवनक स्मरण करा दैत अछि तथा पूरा-पूरी एहि सामान्य अन्धमान्यताकेँ सत्यापित करैत अछि जे विवाहसम्वन्ध स्वर्गहिमे निश्चित होइत छैक आ वैवाहिक सुख मानवक अपन सामर्थ्यसँ वाहरक वस्तु थिक।

कृष्णाकुमारी अपन पतिक लेल सांसारिक समृद्धिक संवाहिका सेहो सिद्ध भेलीह। हिनकासँ विआह करैत देरी, जेना कि पूर्वहि कहल गेल अछि, फकीरमोहनकेँ नीलगिरि रियासतिक देवानक पद प्रदान कयल गेलनि जे एकटा विद्यालय शिक्षकक हेतु पैघ ओ असामान्य पदोन्नति छल।

फकीरमोहन ओ कृष्णाकुमारी लगभग पचीस वर्ष धरि पतिपत्नीक रूपमे वितौलनि आ जखन ई सरल स्वाभाववाली अर्द्धशिक्षिता महिला ई संसार छोड़लनि तँ नहि केवल अपन प्रतिभाशाली पतिकेँ जीवनक अन्तिम साँस लेवा धरिक अगिला पचीस वर्षक अन्तराल धरि शोकसंतप्त रखलनि, अपितु पतिक नोरक माध्यमे अपन पावन स्मृतिमे सम्पूर्ण राष्ट्रीय साहित्यहुकेँ आर्द्र कयने रहलीह।

हुनक आराध्या वावी

पाठकलोकनि ई पूर्वहिसँ जनैत छथि जे वीमार आ अनाथ फकीरमोहनक लेल हुनक वावी की छलथिन ? सामाजिक रीति-नीतिक कारणेँ हुनका फकीरमोहनकेँ क्रूर

पित्ती ओ पितिआइनक भरोसे राखऽ पड़ैत छलनि। मुदा ई हर्षक विषय छल जे स्नेहशीला वृद्धा अपन त्याग-तपस्याकेँ पुष्कल रूपेँ फलीभूत होइत देखि सकल छलीह। हुनका मुइलासँ वहुत पहिनहि हुनक प्रिय पौत्र अप्रत्याशित प्रसिद्धि पावि चुकल छलाह।

फकीरमोहनक कथा ओ उपन्यास सभमे आत्मोत्सर्ग करऽवाली परोपकारी, सभक लेल शुभाकांक्षा अभिव्यक्त करऽवाली वूढ़ महिला सभक प्रशंसनीय साहित्यिक चित्रांकन सभमे छिड़िआयल जीवन्त श्रद्धांजलिक अतिरिक्त एहि सरल ओ कुलीन महिलाक समुचित स्मृतिक रूपमे हुनक कृतज्ञ पौत्र एकटा दीर्घ कविता छोड़ि गेल छथि, जे हुनकेँ समर्पित अछि।

अध्याय 9

महत्त्रयी

पछिला शताब्दीक छठम दशकमे तीन गोट उदीयमान बुद्धिजीवी-लोकनिक वालासोरमे भेटघाँट भेल छलनि आ ईलोकनि आजीवन मित्रताक वन्धनमे पड़ि गेल छलाह। एहि तीनूमे प्रत्येक उड़िया साहित्यमे नव प्रवृत्तिक परिचायक भेलाह। राधानाथ राय आ मधुसूदन राव विश्वविद्यालयक श्रेष्ठ शिक्षा पओने छलाह। ई दूनू सरकारी कर्मचारीक पुत्र छलाह आ सरकारक शिक्षा विभागमे नीक पद प्राप्त कयने छलाह। दूनू गोटे मोट पेंशनक संग उच्चपदस्थ अधिकारीक रूपमे अवकाश प्राप्त कयने छलाह।

एहि त्रयीक तेसर सदस्य हमरालोकनिक फकीरमोहन छलाह। हिनका नीक जकाँ प्राथमिको शिक्षा धरि नहि भेटल छलनि आ ने सुरक्षित नोकरीये रहल छलनि। हिनका लेल जीवन अस्तित्वक सुदीर्घ संघर्ष छल। मुदा सामान्यतः जेना प्रतिभाशालीलोकनिक बीच असाधारण असमानता होइछ तहिना एहि तीनूमे सबसँ कम पढ़ल लिखल, नगण्य अथवा नाममात्रक पैतृक सम्पत्तिसँ युक्त तथा अपर्याप्त सामाजिक ओ शैक्षणिक पृष्ठभूमिवला यैह व्यक्ति ओहि तीनूमे सर्वाधिक आधुनिक भऽ कऽ चमकलाह। ई जाहि तरहक आत्मिक ओ बौद्धिक साहसपूर्ण कार्य सभ कयलनि से ओ दूनू गोटे सोचियो ने सकैत छलाह।

उड़िया साहित्य मे 1872 ई. अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। ओही साल बृटिश सरकार द्वारा स्थापित आधुनिक विद्यालयमे उड़िया छात्रक आवश्यकताकेँ पूरा करवाक हेतु राधानाथ ओ मधुसूदन मिलि कऽ ***कवितावली*** शीर्षकसँ आधुनिक गीतक एकटा संकलन प्रकाशित करौने छलाह। ई संकलन वस्तुतः उड़िया भाषाक ***लिरिकल बैलेड्स***[1] छल जे उड़ियाक दीर्घकालीन काव्य परम्परामे नवयुगक सूत्रपात कयलक। इहो तथ्य महत्वपूर्ण अछि जे फकीरमोहनक ओ दूनू विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त मित्रलोकनि हिनका एहि सामूहिक काव्य-अभियानमे संग नहि लेने छलथिन, किएक

---

1 भावोद्दीपक चारणकाव्य, गाथा-गीत

तँ तावत धरि हिनका कवियाठो धरि नहि बुझल जाइत छलनि, यद्यपि हुनक वयस तीस वर्षसँ बेसीए भऽ गेल रहनि।

सत्य तँ ई अछि जे सम्पूर्ण साहित्यिक जगतमे कोनो आकस्मिक प्रतिभाशाली व्यक्ति जँ कहियो छलाह तँ ओ निश्चित रूपसँ फकीरमोहन सेनापतिये छलाह। ओ आर किछु होथु वा नहि, बुद्धिसम्पन्न आ व्यावहारिकतावादी अवश्य छलाह। हुनक असाधारण प्रतिभा जे हुनक चित्तक अवचेतन स्तरमे गंभीर रूपेँ नुकायल छल, जाग्रत भऽ गेल आ अनपेक्षित परिस्थिति सभमे असाधारण ओजक संग सक्रिय होइत रहल। हमरालोकनि देखलहुँ अछि जे कोन तरहेँ अर्द्धशिक्षित बालश्रमिक एकटा बुद्धिमान शिक्षक, भाषावैज्ञानिक विद्वान, योग्य प्रशासक तथा अपन लोकक नेताक रूपमे प्रकट भेल छल। आब हमरालोकनि हुनका व्यापक आयामवला कविक रूपमे प्रकट देखैत छी। ओ अपन योग्यतासँ स्पृहणीय आ असाधारण ***व्यासकवि*** अर्थात् सार्वभौम कविक उपाधि अर्जित कयने छलाह। यद्यपि भाषाकेँ हुनक मूल्यवान अवदान सभ हुनक अतुलनीय उपन्यास ओ कथासभ छनि, जकर रचना ओ जीवनक वार्द्धक्यावस्थामे कयने छलाह, तथापि उड़ीसामे हुनक चर्चा एखनो ***व्यासे कविक*** रूपमे होइत छनि। अपन असाधारण वाग्मिताक फलस्वरूप ई प्रतिभाशाली पुरुष विभिन्न साहित्यक विधामे अत्यन्त सहज रूपेँ विपुल रचना कयने छलाह। बामड़ाक सुसंस्कृत दरबारो हिनक एही रचनाकारितासँ प्रभावित भऽ हिनका ***सरस्वतीक*** स्पृहणीय उपाधिसँ विभूषित कयने छल। कवि सह प्रतिसृजनकर्त्ता तथा प्रभावपूर्ण आयामक उपन्यासकारक रूपमे हिनक प्राकट्य अकल्पनीय स्थितिक प्रति हिनक व्यावहारिक प्रतिक्रिया मात्र छल, ठीक तहिना जेना शिक्षक, राष्ट्रीय समस्याक हेतु अग्रणी नेता तथा प्रशासकक रूपमे एक गोट बाल श्रमिकक सम्मुख आयब।

1872 ई. सँ पूर्वक दशक धरि फकीरमोहन उड़िया गद्यक केवल दुइये गोट ग्रन्थक रचना कयने छलाहः ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक वंगला ***जीवनचरित*** तथा ***हिस्ट्री ऑफ इण्डियाक*** अनुवाद। एहि दूनू पोथीक सम्बन्धमे ओ लिखने छथि : 'तीन साल सँ बेसी समय धरि ओ पर्याप्त मेहनति कयने छलाह।' आ ई दूनू पोथी उड़ीसाक विद्यालय सभमे अनेक वर्ष धरि पाठ्यपुस्तकक रूपमे सर्वथा उपयुक्त मानल जाइत रहल।

अनुसृजनकर्त्ता

लगभग एक दशक आर बितवासँ पूर्वहि हमरालोकनि सेनापतिकेँ फेर लेखकक रूपमे पबैत दी। बालासोरक विद्यालय-शिक्षक रूपमे शान्ति आ सुरक्षाक परित्याग कऽ आब ओ व्यस्त गैरसरकारी कर्मचारीक रूपमे एकठामसँ दोसर ठाम जगह बदलैत रहैत छलाह। एहि अवधिमे ओ बेसीकाल बेरोजगारी आ आर्थिक विपन्नताक वशीभूत भऽ संकुचित होइत रहलाह। संगहि हिनका अकल्पनीय नीक नोकरी सभक आमंत्रण सेहो भेटैत रहलनि।

जखन सेनापति ढेकनाल रियासतिक सहायक प्रवन्धकक पद पर छलाह, हुनक दोसर प्राणप्रिय पत्नी कृष्णा कुमारीसँ प्राप्त प्रथम पुत्ररत्नक मृत्यु भऽ गेलनि। फकीरमोहनक अनुसार ई वच्चा अपन माता-पिताक संवेदनाकेँ अत्यन्त आकर्षित कऽ लेने छल। तकर पहिल कारण तँ ई छल जे ई पुत्र छल आ दोसर कारण छल जे ई सुन्दर आ देखनुक छल। पहिल पत्नीसँ फकीरमोहनकेँ केवल एकटा वेटी भेल छलनि। हिनक प्रथम पुत्र-सन्ततिक असामयिक देहान्त स्नेहप्रवण माता-पिताक हेतु खास कऽ अत्यन्त कष्टकारक सिद्ध भेल। कारण ई छल जे छओ मासँ अधिक समय धरि ई नेना हुनकालोकनिक आत्माकेँ अपन वालसुलभ चांचल्यसँ वशीभूत कऽ लेने छल। तरुणी माता कृष्णाकुमारी एहि घटनाजन्य दुःखसँ एकदम असहाय भऽ गेली। पिताक हेतु सेहो ई घटना कम कष्टप्रद नहि छल। अति व्यस्त सरकारी कर्मचारी फकीरमोहन जँ अपन घरेक पूर्णतः एकान्त संसारमे कवि वनवाक साहस कयलनि तँ एकर श्रेय हुनक प्रिय पत्नीक प्रथम अनुभूतिकेँ जाइत छनि जे हुनका अपन पुत्रक मृत्युजन्य शोकसँ उद्‌भूत भेल छलनि। फकीरमोहनक कवित्व ओहि शोककेँ नष्ट करऽवला औषधि प्रमाणित भेल।

फकीरमोहनक हेतु ई सौभाग्यक विषय छल जे कृष्णाकुमारी भक्त तथा धार्मिक प्रकृतिक महिला छलीह। जाहि धैर्य ओ त्यागभावनासँ ई लगभग अशिक्षिता महिला दुइ दशकसँ वेसी काल धरि अपन प्रतिभासम्पन्न पतिकेँ आप्लावित करौने रहलीह, से हुनक मानसमे वसल धार्मिकतेक देन छल।

रामायणसँ वढ़ि कऽ पितापुत्रक स्नेह-सम्वन्धक भव्य वर्णन संभवतः अनतऽ कतहु नहि अछि। परवर्त्ती असहनीय दुःख गाथासँ विगलित लाखक लाख संतप्त माता-पिता रामक वनवासक कारणेँ वृद्ध राजा दशरथक पश्चात्तापक तप्पत नोरमे आत्मिक सांत्वना प्राप्त करैत छथि। शोकग्रस्त कृष्णा कुमारीक मोनकेँ वहटारवाक एकटा नीक साधनक रूपमे फकीरमोहन एकटा ब्राह्मण पंडितकेँ प्रतिदिन वलरामदासक उड़िया रामायणक पाठ हुनका लग करऽ कहलथिन। संभवतः ब्राह्मणक कथापारायणक तीव्रगति ओ सस्वर विन्यासक कारणेँ दीनदुःखी कृष्णाकुमारी पारायणक वहुतो अंशक अर्थ नहि वूझि पवैत छलीह। तेँ ई व्यवस्था हटा देल गेल। फकीरमोहन आव वाल्मीकिक मूल संस्कृत रामायणकेँ सरल उड़िया छन्दमे प्रतिदिन अनुवाद करवाक साहसिक डेग उठौलनि। दिनमे अनूदित अंशकेँ संध्याकाल ओ पत्नीकेँ सुनावऽ लगलाह। ई व्यवस्था अत्यन्त सफल रहल। फकीरमोहनक प्रत्येक अर्द्धाली प्रसादगुण सम्पन्न होइत छल। अर्द्धशिक्षिता कृष्णाकुमारीयोक लेल अर्थ वूझव अत्यन्त सरल भऽ गेल छलनि। ई स्वाभाविके अछि जे ई महान साहित्यकार, जे आधुनिक भारतीय साहित्यमे जनसामान्यकेँ अभिव्यक्ति देनिहार संभवतः पहिले प्रतिनिधि भऽ गेलाह अछि, अपन पहिल सहृदय श्रोता ओ आलोचक अपन सरलहृदया आ अशिक्षिता पत्नीमे पओलनि।

क्रमशः फकीरमोहन रामायणक अध्याय पर अध्याय ओ कथा उपकथाक अनुवाद आ वाचन करैत रहलाह। ओ देखथि जे कृष्णाकुमारी हुनका लग मूर्त्तिमन्त शान्त भऽ बैसलि छथि आ अपन महान पतिक ठोर दिस टकटकी लगौने छथि। राम वनवासक समग्र प्रसंगमे हुनक आँखिसँ टपटप नोरक निर्झर बहैत रहैत छल। जखन फकीरमोहनक रामायणक अनुवादक प्रथम भाग प्रेससँ छपि कऽ अयलैक तँ फकीरमोहन कहने छथि जे कृष्णाकुमारी नोरायल आँखियेँ अपन हाथमे ओकर एकटा प्रति पकड़िकऽ वजलथिन : 'हमरालोकनि आब अपन मृत पुत्रक लेल किएक कनेको शोक मनाबी ? लोक बच्चा तँ एही लेल ने चाहैत अछि जे ओ अपन स्मृतिकेँ एहि संसारमे चिरस्थायी देखि सकय। मुदा सभटा स्मृति बहुत अल्पे अवधि धरि टिकैत छैक। हमरा ई पूर्ण विश्वास अछि जे हमर ई वच्चा (पोथी) हमरालोकनिक नामकेँ सर्वदाक हेतु अमर कऽ देत।'

अपन पत्नीक असामान्य प्रशंसात्मकतासँ प्रोत्साहित फकीरमोहन शीघ्रे सम्पूर्ण रामायणक अनुवाद समाप्त कऽ लेलनि। पत्नीएक हेतु ओ रामायणक बाद महाभारतोक अनुवाद शुरू कऽ देलनि। पछिला शताव्दीक अन्तिम दशक धरि ओ ई विलक्षण तथा श्रमसाध्य कार्य सम्पन्न कऽ लेने छलाह।

फकीरमोहन द्वारा अनूदित रामायण ओ महाभारत अपन विशिष्ट रचनाशैलीक कारणेँ उड़ीसाक सभ भागमे अत्यधिक प्रशंसित भेल। यद्यपि पहिनहिसँ रामायण ओ महाभारतक अनेक उड़िया संस्करण सभ उपलब्ध छल, मुदा ओहन सरल, मूलक अनुरूप तथा सुपाठ्य कोनो दोसर अनुवाद नहि छल। एहि दिशामे फकीरमोहनक ई रचना एहन प्रथम सफल रचना छल जे नहि केवल हुनक संतप्ता पत्नीक अपितु सम्पूर्ण राष्ट्रक आवश्यकताकेँ पूर्ण कयलक।

राष्ट्रक अत्यावश्यक आध्यात्मिक आवश्यकताकेँ पूरा करबाक लेल फकीरमोहन वादमे सभटा उपनिषदक उड़ियामे छन्दोबद्ध अनुवाद आरंभ कयलनि। संभवतः एहि प्रकारक ई प्रथमे प्रयास छल। फकीरमोहन द्वारा अनूदित उपनिषद सभमे वेदान्तक जटिल सिद्धान्त सभकेँ ततेक सरल ओ दक्ष शैलीमे प्रस्तुत कयल गेल अछि जे आव ओकरा सभकेँ प्रतिसृजनक रूपमे लेल जा सकैत अछि।

एके व्यक्ति द्वारा रामायण, महाभारत ओ मुख्य उपनिषद सभक अनुवाद स्वयंमे एकटा अद्भुत उपलब्धि अछि। पाठक लोकनि जखन ई जनताह जे अनुवादक एकटा व्यस्त गैरसरकारी कर्मचारी छलाह, असाधारण प्रशासनिक समस्या ओ विद्रोही शक्तिक षड्यंत्रकेँ सोझरयबामे लागल रहैत छलाह, तँ हुनकालोकनिकेँ आश्चर्यातिरेके होयतनि। संभवतः कोनो महान लक्ष्यसँ प्रेरणा ग्रहण कयने बिना कोनो व्यक्ति विशेष द्वारा एहन चमत्कारपूर्ण मानसिक ओ शारीरिक श्रम कऽ सकव असंभव अछि। फकीरमोहन उड़ियाक सर्वाधिक भावुक ओ वृहत्तर फलकवला पद्य अनुवादक थिकाह। हुनक अवचेतनमे संभवतः अपन विपन्न भाषाकेँ समृद्ध देखबाक

प्रेरणाशक्ति छलनि। उड़िया भाषाकेँ कोनो दोसर व्यक्तिक श्रम ओतेक समृद्ध नहि कऽ सकल जतेक फकीरमोहनक।

प्रथम मौलिक रचना

हुनक प्रथम मौलिक रचना थिक *उत्कलभ्रमणम्* (उड़ीसा-यात्रा)। ई कृति हुनक आश्चर्यजनक आशुकवित्व तथा नव मार्गक अन्वेषी रुचिक उदाहरण थिक। ई रचना हुनक अनुवाद कार्यक अवधिमे लिखल गेल आ प्रकाशितो भेल। पूर्व अध्यायमे वर्णित भुइञा विद्रोहसँ सेनापति तत्काले मुक्त भेल छलाह। विद्रोहक क्रममे वृटिश राजनीतिक अधिकारीलोकनि केञोझर आयल छलाह। केञोझरक निकटतम रेलपथ स्थित शहर छल भद्रक। ई शहर वालासोर जिलामे पड़ैत अछि। भद्रकमे वृटिश पदाधिकारीलोकनिकेँ विदा कऽ फकीरमोहन एकटा हाथी पर चढ़ि अपन मुख्यालय आनन्दपुर घूरि रहल छलाह। जखन ओ हाथी पर सवार छलाह तखने हुनका माथमे काव्यतरंग उठऽ लगलनि। ओ सोचलनि जे उड़ीसाक समकालीन प्रसिद्ध व्यक्ति सभकेँ सेहो कविताक माध्यमे निरूपित कयल जयवाक चाही। जखने ई भाव हुनका मोनमे अयलनि कि ओ अपन कापी आ पेन्सिल निकालि लेलनि तथा हाथीक हौदे पर वैसल आगू बढ़ैत, झूलैत, डगमगाइत, धक्का खाइत कविता लिखऽ लगलाह। यावत ओ आनन्दपुर पहुँचलाह तावत हुनक मोनमे आयल पोथीक आधा भाग लिखल जा चुकल छल। तेसर दिन समाप्त होइत होइत ई पोथी स्थानीय प्रेससँ छपि कऽ आवि गेल छल।

छन्दोवद्ध व्यंग्यरचनाक ई पोथी एखनो उड़िया साहित्यमे अद्वितीय अछि। एकरा सन पोथी ने फेर लिखल जा सकल अछि आ ने फकीरमोहन सन कोनो दोसर निष्णात साहित्यकारे एहि प्रकारक काव्य सह सामाजिक- राजनीतिक साहसपूर्ण रचना करवाक हिम्मतिये कऽ सकलनि अछि। एहि लेखकक ज्ञानपरिधिमे ओहि रचनाक जोड़क कृति वंगला ओ हिन्दी पर्यन्तमे नहि अछि। तेँ फकीरमोहनक *उत्कलभ्रमणम्* एखनो सर्वथा विलक्षण ओ मौलिक रचना वनल अछि।

एहि पोथीसँ सम्पूर्ण उड़ीसामे सनसनी पसड़ि गेलैक। एहिमे तत्कालीन प्रमुख व्यक्ति सभक सम्बन्धमे मुक्त हास्य ओ तीक्ष्ण व्यंग्यपूर्ण उक्तिकेँ संकेत शैलीमे तेना प्रस्तुत कयल गेल अछि जे पाठकलोकनि हँसैत-हँसैत लोटपोट भऽ जाइत छथि। भगवान जगन्नाथक मंदिरक चारूकात घुमैत रहऽवला अशिक्षित पंडा ओ ब्राह्मणलोकनिक निर्लज्ज ओ धनलोलुप समुदाय पर ई कसिकऽ चोट कयलनि अछि। संगहि अंग्रेजी पढ़ल लिखल अर्द्धशिक्षित वावूलोकनिक प्रकट होइत वर्ग पर सेहो कसगर आघात कयलनि अछि जे अपन भाषा आ संस्कृतिक अपमान करव सुविधापूर्ण वुझैत छलाह तथा नीक भारतीय वनल रहवाक अपेक्षा अधलाह अंग्रेज वनवाक दयनीय प्रतियोगितामे सम्मिलित छलाह। एहि अन्धानुकरणकर्त्ता वर्गकेँ लक्ष्य कऽ ओ व्यंग्य कयने छथि जे जखन एहि तथाकथित शिक्षित वावूलोकनिक विषयमे सोचैत छी तँ लगैत अछि जेना चार्ल्स डार्विन मनुष्यक पूर्वज वानर होयवाक

सिद्धान्तक प्रेरणा एही अन्धानुकरणकर्त्ता भारतीयलोकनिकेँ देखि कऽ ग्रहण कयने होयताह। अंग्रेजीक सतही ज्ञानसँ व्युत्पन्न निश्चेष्ट भद्रता तथा अपन मातृभाषाक प्रति हिनकालोकनिक निरपेक्षताक सम्बन्धमे ओ कहने छथि : 'वस्तुतः कोनो कुकुरकेँ अपन घर बनयबाक चिन्ता किएक रहतैक जँ प्रतिदिन ओकर पेट ऐंठारमे फेकल पाते चाटि कऽ भरि जाइत छैक।'

उत्कलभ्रमणमूक चित्ताकर्षक ओ सूत्रवद्ध प्रकाशनक दुइ वर्षक बाद 1894 मे शोकग्रस्ता कृष्णा कुमारीक देहान्त भऽ गेलनि। ओ अपना पाछाँ नितान्त असगर, असहाय ओ विदीर्णहृदय पतिकेँ छोड़ि गेल छली। यैह भीषण शोक पद्यानुवादक तथा प्रफुल्लहृदय व्यंग्यकारकेँ अत्यन्त उर्वर मौलिक रचनापरक कविक रूपमे बदलि देलक। अपन व्यक्तित्वमे एहि नवीन परिवर्त्तनक सम्बन्धमे फकीरमोहन लिखने छथि :

'कविता लिखबाक हमर आदति एकटा एहन सद्गुण अछि जकरा सम्बन्धमे सत्य पूछल जायतँ हम अपन पत्नीक ऋृणी छी। हमर रचना सभकेँ ओ प्रसन्न मुद्रामे सुनल करैत छलीह। वस्तुतः हम हुनके प्रसन्न रखबाक लेल कविता लिखब शुरू कयने रही। हुनका मुइलाक बादो हमर ई आदति बनले रहल। एहिसँ हमर मानसिक अशान्ति दूर होइत रहल। प्रातःस्नानक बाद कृष्णाकुमारी हमर रामायण ओ महाभारतक किछु अध्यायक प्रतिदिन पारायण करैत छलीह। हुनक मृत्युक बाद हमर अधिकांश कविता उग्र मानसिक व्याधि, व्यक्तिगत संत्रास अथवा अक्षम बना देवऽवला बीमारीक अवधिमे तद्जन्य पीड़ासँ पलायनक साधनक रूपमे लिखल गेल अछि।'

उच्चकोटिक अखिल जनव्यापकता

आब हमरालोकनि बहुआयामी ओ विविध विषयक आश्चर्यकारक पद्यरचनाक दौड़मे फकीरमोहनकेँ सम्मिलित देखैत छियनि। उड़िया साहित्यमे निर्विवाद रूपसँ अभूतपूर्व स्थान प्राप्त करऽवला परवर्त्तीकालमे रचित हिनक गद्यक अपेक्षा यैह कविता सभ हिनक व्यक्तित्वक पूर्णता ओ भव्यताकेँ अग्रेषित करैत अछि। एहि अगणित ओ परस्पर पूर्णतः असम्बद्ध रचना सभसँ जे तथ्य विज्ञापित होइछ से थिक हिनक सर्वदेशीय मानस ओ आत्मा जे समस्त महान किंवा उत्कृष्ट वस्तुक प्रति अनुभूतिक उत्साहसँ परिपूर्ण छल।

हिनक मानसक सर्वदेशीय उदात्तताक उदाहरणक रूपमे हमरालोकनि हिनक अपूर्व कविता 'स्वर्गक मोख पर आत्मा'क उल्लेख कऽ सकैत छी।

प्रवेशसँ पहिने प्रत्येक मृतात्मा केँ स्वर्गक मोख पर स्थित धूर्त्त दरबानकेँ विशिष्ट सम्प्रदायक अन्ध कर्मकाण्डक अनुपालनसँ अधिक सम्पूर्ण मानवताक प्रति अपन अवधारणासँ संतुष्ट करबाक छनि।

सबसँ पहिने दिव्य द्वारपालकेँ एकटा एहन आत्मासँ भेट होइत छैक जे पृथ्वी परक तथाकथित पवित्र मुसलमानक अछि। एहि आत्माकेँ एहि बातक घमण्ड छैक जे ओ बिना हुसने प्रतिदिन पाँचो बेर नमाज पढ़ैत अछि, रमजानमे कठोर उपवास

रखैत अछि आ अल्लाक एकमेव पैगम्वर मुहम्मदक प्रति आस्थावान अछि। 'मुदा की अहाँ भगवानक मूसा, वुद्ध, ईसामसीह तथा ओहने आन आन देवदूत सभक सेहो कहियो आशीर्वाद पओने छी ? ' दिव्य द्वारपाल पुछलकैक। एहि प्रश्न पर पोंगापंथी मुसलमान जवाव दैत छैक- 'से हम कोना करितहुँ ? की ओ सभ काफिर नहि छथि ? दिव्य द्वारपाल निश्चयक स्वरमे कहैत छैक जे 'ईश्वरक राज्यमे ओकरा सदृश लोकक लेल कोनो स्थान नहि छैक।'

ततः पर एकटा समरूप कट्टरपंथी (हिन्दू) वैष्णव पहुँचैत अछि। एकरा अपन गऽरमे पहिरल पवित्र तुलसी दानाक माला तथा अनवरत ईश्वरक नाम-स्मरणक गर्व छैक। द्वारपाल कहैत छैक जे ओकर मुंडित सिर, तुलसीमालासँ वेढ़ल गरदनि आ पवित्र रामनामी चद्दरिसँ आवृत शरीर पूर्वहि पृथ्वी पर जरि कऽ राख भऽ गेलैक अछि। पृथ्वी पर रहैत ओ भगवानक वुद्ध, ईसा ओ मोहम्मद सदृश देवदूतक सर्वथा उपेक्षा कयलक अछि। भगवानक दरवारमे ओकरो सन लोकक लेल कोनो स्थान नहि छैक।

एही तरहेँ आनो सम्प्रदाय सभक लोकक संग प्रश्नोत्तर होइत छैक मुदा केओ वास्तविक ईश्वरीय मानदंडक अनुकूल नहि भेटैत छैक। अन्तमे स्वर्गक द्वारपाल पृथ्वी पर उपयुक्त धर्मक उदात्त सारतत्वक सम्वन्धमे प्रवचन दैत छैक। 'भगवान पृथ्वी पर मनुष्यकेँ आवश्यक मानवीय गुण सिखयवाक हेतु अनेक दूत सभकेँ पठौलनि। वुद्ध तर्कवुद्धि ओ त्यागक, ईसामसीह प्रेम तथा मुहम्मद आस्थाक शिक्षा देलनि। ओ सभ गोटे ईश्वरक दूत छलाह आ मानवमात्र द्वारा समान रूपेँ पूज्य छलाह। प्रेम, आस्था, भक्ति ओ त्याग आत्माक सद्गुण सभ अछि आ यैह सभ ककरो ईश्वरक राज्यमे प्रवेशक पात्रता दिआ सकैत छैक। केवल वाह्य कर्मकाण्ड आ पारस्परिक घृणासँ ई पात्रता नहि भेटि सकैत छैक। जे केओ दोसर मनुष्यकेँ भेदक दृष्टिसँ देखैत अछि, मृत्युक वाद स्वर्ग नहि, संभवतः नरकमे स्थान पवैत अछि।'

विश्वदृष्टि

जतऽ हुनक कविमित्र राधानाथ ओ मधुसूदन काव्यात्मक समस्या ओ विषये धरि अपनाकेँ सीमित रखलनि, विद्यालयी शिक्षासँ लगभग वंचित फकीरमोहनक मानस वौद्धिक कलाकारिताक जालसँ मुक्त रहल। हुनका पुस्तक अथवा पंडितलोकनिसँ ज्ञानार्जनक अवसर नहि भेटल छलनि। तेँ ओ अपन चिन्तन, विचार ओ अनुभूतिक अनुकूल सर्वथा प्रकृत अभिव्यक्ति दैत रहलाह। हिनक अभिव्यक्ति अध्ययन-मननक प्रक्रियासँ सर्वथा मुक्त तथा पारदर्शितापूर्ण उद्देश्यसँ युक्त रहैत छल। हिनक ऊर्ध्वगामी प्रतिभा निरन्तर अपन परितः घटित घटनासँ पाठककेँ मार्मिक संदेश देवाक हेतु तत्पर रहैत छल। हमरालोकनिमे अधिकांशक विपरीत ई अरुचिकर प्रतिक्रिया आ आलोचनाक कनेको परवाहि नहि राखथि तथा सत्य, न्याय ओ मानससँ उद्भूत तर्कपूर्ण विचारकेँ प्रस्तुत करवाक व्यक्तिगत साहससँ भरल-पुरल रहैत छलाह। तेँ

फकीरमोहनक काव्यविषय 'कविक छिद्रान्वेषी पत्नी' सँ लऽ कऽ परित्यक्ता जोसेफीनक नोर धरि अथवा भारतीय कृषकक दयनीय अवस्थासँ लऽ कऽ हिन्दू बाल-विधवाक टीस धरिक वृहत्तर आयाम धरि पसरल अछि। जापानक गौरव ओ नवीन उपलब्धि सभकेँ ओ अपन कतोक कविताक माध्यमे उन्मुक्त हृदयसँ स्वागत कयने छलाह तथा अपन देशवासीलोकनिक समक्ष ओकरा उदाहरणक रूपमे प्रस्तुत कयने छलाह। जापानसँ आयातित बूझल जायवला उत्तम सुगंधसँ युक्त ***हुस्नहेना*** पुष्पपादपक प्रशंसामे ओ उत्फुल्ल हृदयसँ गेय पदक रचना कयने छलाह। सूर्योदयक देश जापानक लोकमे व्याप्त संस्कृति, अनुशासन ओ सौन्दर्यप्रियताक प्रति ओ ततेक आसक्त भऽ गेल छलाह जे अपन वृद्धावस्थामे ओतऽ जयबाक निश्चय कऽ लेने छलाह। सद्गुण सम्पन्ना नारी चरित्र केवल एही देशमे विद्यमान अछि, संभवतः एहि काल्पनिक अहम्मन्यताकेँ नष्ट करबाक हेतु ओ एकटा दीर्घकविता स्वामीभक्त रोमन पत्नी लुक्रेसिया पर रचने छलाह। एही प्रकारक एक गोट कविता ओ क्लिओपेट्रा पर सेहो कयने छलाह। सौन्दर्यपूर्णा मृगनयनी सहृदय पुरूष पर जे प्रभाव उत्पन्न करैत अछि, कोनो समय ओही सम्मोहक ओ उत्तेजक प्रभावक वशीभूत भऽ टेलेमी आ टारक्विन दूनू शक्तिसमूह पूर्णतः नष्ट भऽ गेल छल। अपन पूर्वोक्त दूनू नायिकाक चरित्रसँ कविक यैह ऐतिहासिक निष्कर्ष छल। एही तरहेँ फकीरमोहनक कविता सभ कृष्ण, ईसामसीह, तुकाराम आदिक संगहि 'मृत पलाशक वृक्ष,' 'पौड़कीक प्रणय युगल' तथा 'पृथ्वी पर खसबासँ पूर्व वृक्षस्थित एकटा सुक्खल पातक अनुभूति' आदि पर अछि।

सरला महिलाक प्रति करुणा

महाकाव्य, उपनिषद तथा अंसख्य गीतावली ओ विविध विषय पर व्यंग्यविधानसँ युक्त फकीरमोहनक बहुरंगी काव्य संसारमे करुणासिक्त रचना सभ हिनक बाबी तथा पत्नी कृष्णाकुमारीक मृत्यूपरान्त प्रणीत भेल। ई रचना सभ अधिकांश पाठकक मर्मकेँ स्पर्श करैत अछि। एहि रचना सभमे आत्माकेँ तत्क्षण प्रभावित करऽवला मधुर संगीतक झंकृति विद्यमान छैक।

पुष्पमालाक समर्पित अंश जाहिमे कृष्णाकुमारीसँ सम्बद्ध कविता सभ अछि, संसारक कोनो भागमे स्थित वास्तविक प्रणयी हृदयमे कोमल भावनाक उद्रेक करबामे सफल अछि। एकर किछु प्रारंभिक पंक्ति सभ अछि,

प्राण जकाँ प्रिय अहाँ प्रियतमा जीवन पथ सहगामिनि
कृष्ण कुमारी नाम अहँक छल अक्षय प्रीतिक वाहिनि
चिरनिवास हृदयक तलमे अछि जीवन जकाँ सुरभिमय
रानी छलहुँ फकीरक कुटिया रहल सदा मंगलमय
सहयात्री जीवनक पथक अहँ नयनक शोभा बनलहुँ
सद्गुण अहँक रक्त-संवाहित यदपि अहाँ नहि रहलहुँ

जानल नहि एखनो धरि हम जे नारी भार्या रूपो
पतिक प्रेममे अधिक समर्पित आ कि अहँक अनुरूपो
नीलाम्वरमे पूर्ण चन्द्र सन सुन्दरता केर व्यूहो
फुलल गुलावक कमलक तन पर ओसक रत्न समूहो
कान्तिविहीन विवर्ण भेल लखि प्रिये! नोर केर धार
दिव्यानन्दक संगति कालक मंगलमय उपहार
वुझना जाइछ ओ छल तोरे रूप वनल अपरूप
नभमंडल मे व्याप्त भेल अछि सुन्दरताक सरूप

*

रातिक अवसर शान्त धरातल हम दूनू छी वैसल
विहरी छत पर अपन घरक अथवा उपवनमे पैसल
दृष्टि फिरावी चन्द्रमाक लग जगमग तारा गण पर
दिव्य प्रभा छिलकावय चहुदिश सकल जगत केर ऊपर
मन्थर गतिमे हेलि रहल छल अम्वरमे युग-तारा
हमहिँ अहाँ की नहि वूझी तहिना हे, प्राण-अधारा

'हमरा नोर मे डूवाक ओ हँसेत चल गेली', 'की हम स्मित हास्यपूर्ण ओ मुँह फेर देखि सकव' आ 'की हमरा क्यो देखाओत जे हमर प्रिया कतऽ गेली' आदि कविता सभ भावपूर्ण तथा संतप्त हृदयक गंभीरतासँ निःसृत अछि। प्रियतमा नारीक प्रति रागात्मक भावना सँ परिपूर्ण कविये एहन कोमल आ प्रशंसात्मक कविता लिखि सकैत अछि।

वुद्ध सम्वन्धी महाकाव्य

फकीरमोहन सदृश तार्किक व्यक्तिक वौद्धधर्मक प्रति आकर्षण स्वाभाविक छल। उड़िया साहित्यमे अपन विभिन्न प्रकारक प्रारंभिक रचनाहिक जकाँ वुद्धधर्म पर सेहो पहिल श्रेष्ठ पुस्तकक रचनाक श्रेय हिनका प्राप्त भेलनि। ई रचना महाकाव्यात्मक अछि। एहिमे वुद्धक जीवन आ हुनक महान लोककल्याणकारी कार्यक वर्णन अछि। तदतिरिक्त एहिमे एकटा पैघ विद्वत्तापूर्ण आ अनेक सूचनाप्रद भूमिका सेहो अछि। आधा शताब्दी वीति गेलाक बादो ई भूमिका प्राणवान वनले अछि। अश्वघोषक श्रेष्ठ ग्रंथ ***वुद्धचरित***, एकगोट अज्ञात लेखकक ***ललितविस्तर*** तथा सर एडविन आर्नोल्डक विश्वप्रसिद्ध ***लाइट ऑफ एशिया*** जकाँ हिनक ***वौद्धावतार काव्यकेँ*** मौलिक नहि कहल जा सकैछ। मुदा उड़ियाक अधिकांश काव्य जकाँ पौराणिक कथा पर आधारित ई महाकाव्य विभिन्न छन्दविधानमे रचित अछि। एहिमे विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक

व्यक्तित्वक वर्णन अछि। जीवन तथा धर्मक प्रति वैचारिक दृष्टिकोणसँ समृद्ध ई काव्य वास्तवमे अपूर्व आ नवीन मार्गक उद्‌भावक अछि।

छिद्रान्वेषी पत्नी

मुदा एहि अध्यायक समुचित समापन 'कविक छिद्रान्वेषी पत्नी' शीर्षक हिनक कविताक किछु एहन पंक्तिकेँ उद्धृत कयने विना नहि भऽ सकैछ जाहिमे नारी समुदायक दुर्भाग्यग्रस्त कवि-पत्नी रूपमे भोगल अनादि-अनन्त पीड़ा एवं शाश्वत असंतोष तऽ व्यक्त भेले अछि, समर्पित सरस्वती-पुत्रक सार्वभौम आ सार्वकालिक त्रासदी सेहो प्रतिध्वनित भेल अछि।

कविपत्नी कविकेँ कहैत छथिन: "की अहाँ अपन फुजलो आँखिसँ ई नहि देखि पवैत छी जे हमर तथाकथित गृहस्थी कोन अवस्थामे अछि ? हमर निरंतर चेतौनी आ कारुणिक निवेदनक वादो अहाँ वहीर वनल रहबाक साहस कोना करैत छी ? दिन राति अहाँ छन्द, लय आ पदविन्यासमे रमल रहैत छी। एहि सभसँ एक्को छदामक जोगाड़ कहाँ भऽ पवैत अछि, जाहिसँ हम भानसो धरिक सरंजाम कऽ सकी ? हम निरन्तर मना करैत रहैत छी तैओ अहाँ एखनो बेकारक शब्दविन्यासमे लागल छी। की अहाँ आँखि फोलि कऽ ई नहि देखैत छी जे हमरा सभक चारूकातक लोक विभिन्न चलाकीसँ पाइ, सुविधा, कपड़ा, गाड़ी आदि हँसोथि रहल छथि ? जँ अहाँ ई सभ नहि देखि रहल छी तँ की अहाँकेँ मोढ़-अपाटक नहि कहल जाय ? अहाँक निम्नकोटिक काव्य आ भक्तिगीतक परवाहिए के करैत अछि ? हम छन्दरचनाक एहि मूर्खतापूर्ण ओ शापित व्यसनक विरुद्ध सदिखन अहाँके बुझवैत-बुझवैत स्वयं बीमार पड़ि गेल छी। मुदा आव कान खोलिकऽ सुनि लिअऽ : 'काल्हि खन महाजन आयल छल। ओ हमरा दिस हुलकी मारि कऽ अन्तिम धमकी दऽ गेल अछि। हमरा ई नहि बुझबामे आवि रहल अछि जे तैओ अहाँ कोना कऽ ओहि कोनमे बैसि अटर-पटर पद केँ छानऽमे लागल छी' !"

अध्याय 10

महान कथाकारक नवोत्थान

सम्पूर्ण उड़ीसामे फकीरमोहनकेँ उड़िया उपन्यासक प्रवर्त्तक आ महानतम व्यक्तित्वक रूपमे सम्मान प्राप्त छनि। मुदा अपन जीवनक पचासम वर्ष धरि हिनका अपन एहि अद्‌भुत क्षमताक कोनो आभास नहि छलनि। जीवनक प्रौढ़ावस्था धरि ई मुख्यतः कवितेक माध्यमसँ अपनाकेँ अभिव्यक्त करैत रहलाह। ई वात नहि छैक जे ओ कोनो गद्य अथवा कथालेखन एकदम्मे नहि कयने छलाह। हमरालोकनि देखलहुँ अछि जे जखन ओ अल्पवेतनभोगी विद्यालय-शिक्षक मात्र छलाह, तखनहुँ वालासोरमे नहि केवल छापाखानाक स्थापना कयने छलाह, अपितु पत्रिकाक प्रकाशन सेहो आरंभ कयने छलाह जाहिसँ आधुनिक विचारधाराक प्रचार-प्रसार भऽ सकय आ व्यापक सामाजिक कुरीतिक विरोधमे संघर्ष कयल जा सकय।

जखन हुनका बुझबामे अयलनि जे तत्कालीन वंगला पत्रिकासभक लोकप्रियताक मुख्य कारण कथा विधा छलैक, तँ ओ एहि साहित्यिक विधामे रचनाक प्रयास करऽ लगलाह। पछिला शताब्दीक छठम दशकमे ओ संभवतः अपन साहित्यिक पत्रिका ***बोधदायिनीमे*** पहिल आधुनिक उड़िया कथा प्रकाशित करौलनि। एकर शीर्षक छलैक 'लछमनिञा' मुदा ई कथा एखन धरि अप्राप्त अछि।

1871 सँ 1896 धरिक पच्चीस साल मध्य फकीरमोहन की तँ प्रशासनिक पदाधिकारीक रूपमे व्यस्त रहलाह किंवा दीर्घकालीन वेरोजगारीक वशीभूत भऽ निःसहाय वनल रहलाह। ओ वीमार सेहो रहैत छलाह। सेनापति प्रेस सेहो ओकर संचालकक वालासोर सन छोट शहरसँ पैघ काजक हेतु वाहर जयवासँ पूर्वहि वन्द कऽ देल गेल छल। जाहि पत्रिका सभकेँ ओ आरंभ कयने छलाह तकर भार दोसर-दोसर लोक सभकेँ दऽ देने छलथिन, मुदा ओहो सभ शीघ्रे वन्न भऽ गेल।

बालासोर छोड़लाक पचीस वर्ष वाद धरि 'लछमनिञा' सन कोनो दोसर कथा नहि लिखल जा सकल, यद्यपि तत्कालीन समस्या ओ परिस्थितिसँ प्रेरणा ग्रहण कऽ बहुतो रास कविताक प्रणयन होइत रहल, जकर विवेचन पूर्वहि कयल जा चुकल अछि।

विविध प्रशासनिक पद सभसँ अवकाश ग्रहण कयलाक वाद फकीरमोहन कटकक एक गोट गार्डेन हाउसमे रहऽ लगलाह। एही समय उड़ीसाक साहित्यिक त्रयी

राधानाथ, मधुसूदन ओ फकीरमोहनक अत्यन्त सम्मानित मित्र विश्वनाथ कार कटकसँ प्रसिद्ध उड़िया मासिक *उत्कल साहित्यक* प्रकाशन आरंभ कयलनि। अपन साहित्यिक सामग्रीकेँ अधिक आकर्षक बनयबाक हेतु स्वभावतः विश्वनाथ चारू भरक लेखकलोकनिसँ कथाक मांग कयलनि। ओ फकीरमोहनकेँ सेहो प्रयास करबाक आग्रह कयलथिन। ई आश्चर्यक विषय थिक जे यैह आग्रह एकटा महान प्रतिभाकेँ जाग्रत कऽ देलक।

तकर बादसँ 1918 मे मृत्यु धरि फकीरमोहन निरन्तर कथा ओ उपन्यासक रचना करैत रहलाह जे कोनो उदीयमान प्रतिभाक हेतु रचनाकारिताक प्राथमिक अवस्थामे कीर्त्तिक स्थापना कऽ सकैत छल। ई हुनक रचनाकारिताक चकित करऽवला प्रौढ़ावस्था छल। कथारचनाक इतिहासमे अत्यन्त प्रौढ़ावस्थाक ई रचनाशीलता अतुलनीय छल। एहि आयु धरि पहुँचैत-पहुँचैत सामान्यतः लोक अपन घरैया सदस्यलोकनिसँ स्नेह, सम्मान ओ सुरक्षा पयबाक हेतु व्यग्र रहऽ लगैत अछि। फकीरमोहन अवकाशप्राप्तिक पश्चातक वर्ष सभमे भयावह घरेलू कष्टक सामना कऽ रहल छलाह। ओ कटकक बुद्धिजीवी समाजक सहज वृत्ति, आलोचना-प्रत्यालोचना आदिसँ सेहो बाँचल नहि छलाह। हिनक समस्त मित्र ओ सहकर्मीलोकनि ओतहि बसि गेल छलथिन। अपन पुत्र आ पुतोहुक कटक आबि गेलाक बाद संभवतः एहि सम्माननीय बूढ़केँ अपन सुव्यवस्थित गार्डेन हाउस सेहो छोड़ि देमऽ पड़लनि। परवर्त्ती दस वर्षक समय ओ बालासोरमे असगरे बितबैत रहलाह। भगवानक कृपा छलनि जे वालासोरोमे ओ अपना लेल एकटा पृथक् मकान वना लेने छलाह जे पैघ, सुसज्जित तथा नागरिक सुविधासँ युक्त छल।

कटक आ बालासोरक एहि दूनू मकानकेँ हिनक विशिष्ट गद्य ओ पद्यरचनाक श्रेय प्राप्त छनि। ई रचना सभ हिनक कष्टकर आयुक एकान्तिक ओ रोगग्रस्ततासँ आक्रान्त राखऽवला वर्ष सभमे प्रणीत भेल। अधिकांशतः ई रचना सभ दुइ गोट महत्वपूर्ण ओ समसामयिक पत्रिका *उत्कल साहित्य* ओ *मुकुरक* सम्पादकलोकनिक अनुरोधक उत्तरमे लिखल गेल छल।

जनभाषा शैलीमे रचना

जाहि समय धरि फकीरमोहन कथालेखनक नूतन क्षेत्रमे प्रवेश कयने छलाह, ताहि समय धरि वंगलाक प्रारंभिक गद्यलेखकलोकनि अस्तंगत भऽ गेल छलाह। अपन जीवन धरि साहित्य जगतकेँ देदीप्यमान कऽ प्रियचन्द्र मित्र, अशोक कुमार दत्त, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, भूदेव मुखर्जी आ वंकिमचन्द्र आदि सभ गोटे कालकवलित भऽ गेल छलाह। ई तथ्य सर्वथा सत्य अछि जे फकीरमोहन वंगलाक एहि महान लेखकलोकनिक साहित्यसँ पूर्णतः अवगत छलाह। मुदा जे बात हिनक गद्यरचनाक शैली ओ गुणवत्ताकेँ विशेष रूपेँ आकर्षक बनबैत अछि से ई थिक जे ई अर्द्धशिक्षित प्रतिभा ओहि समस्त श्रेष्ठ लेखकलोकनिक प्रभावसँ सर्वथा मुक्त रहलाह। परिचित साहित्यिक शैलीसँ फराक भऽ ई अपन रचनाक हेतु नव मार्गक अन्वेषण कयने छलाह तथा ओकरा वस्तु, शैली तथा उद्देश्य तीनू स्तर पर सर्वथा मौलिकतासँ परिपूर्ण कयलनि।

नवे स्थापित कलकत्ता विश्वविद्यालयमे विधिवत् आधुनिक शिक्षा प्राप्त वंगालक मौलिक रचनाकारलोकनि प्राच्य ओ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञानमे दक्ष छलाह। हिनकालोकनिक तुलनामे फकीरमोहनकेँ दुइयो वर्षसँ कम समय धरि प्राथमिक विद्यालयक शिक्षाटा भेटल छलनि। मुदा अपन सम्पूर्ण रचना संसारमे ओ विशुद्ध प्रकृतिक मानवतावादक प्रज्वलित दीपशिखा जकाँ जगमग करैत रहलाह। आधुनिकताक समस्त स्वस्थ विचार हिनका ग्राह्य वुझयलनि। भारतीय समाजमे वंश-परम्परासँ प्राप्त पंडावर्गक परजीविता ओ सर्वथा अज्ञानीक स्वरूप आ तदनुरूपे सम्वर्द्धित विकृति सभ सन विनाशक सामाजिक व्रण सभ पर ई क्रूर प्रहार करैत रहलाह। नारीवर्गक समानता तथा भारतीय राष्ट्रक रीढ़ कृषक समुदायक नीक अवस्थाक ई प्रवक्ता छलाह। आइसँ पचासो वर्षसँ वहुत पूर्वहि भारतीय राजनीति ओ अत्याधुनिक भारतीय साहित्यमे व्याप्त समस्त पाखण्डपूर्ण विज्ञापनवाजीक पूर्वज्ञानसँ युक्त उड़ीसाक ई प्रतिभा जनसामान्यक लेल ओकरे विषयमे तथा ओकर दैनन्दिन जीवनक घरैया भाषामे रचना करैत रहलाह। आइकाल्हुक तथाकथित दम्भी 'जनकविलोकनि'क किछु पंक्ति भने कोनो प्रोफेसरक माथमे अँटि जाय मुदा जाहि जनसाधारणक लेल ओ लिखल जाइत अछि तकरासँ तँ सर्वथा अस्पृष्टे रहि जाइछ। मुदा फकीरमोहनक कविता आ कि गद्य कोनो समयमे उड़ीसाक कोनो कोनमे वसल ग्राम्य जीवनक सामान्य जनक हेतु सहजहि वोधगम्य रहल अछि।

जनसामान्यक अभिव्यंजना

तेलगू ओ वंगला सदृश अन्य आधुनिक भारतीय भाषा जकाँ उड़ीसामे ***साधुभाषा*** ओ अशिक्षित समुदायक जनभाषा सदृश कटु साहित्यिक विवादकेँ प्रश्रय नहि भेटवाक श्रेय मुख्यतः फकीरमोहनेकेँ जाइत छनि। वस्तुतः राधानाथ राय ओ मधुसूदन राव समसामयिक बंगाली शैलीक न्यूनाधिक अनुसरण करैत उड़ियाक पाठककेँ ***साधुभाषा*** शैलीक प्रति रसग्राही बना देने छलाह। मुदा एहि क्षेत्रमे फकीरमोहनक असाधारण ओ अप्रत्याशित प्रयोग तथाकथित साहित्यिक आभिजात्यकेँ विखंडित कऽ देबऽवला आघात सन छल। फकीरमोहनक गद्य रचनामे पाठकलोकनि आकस्मिक रूपेँ अपन माटिक यथार्थ सुगंधिक अनुभव कयलनि। ई सत्य थिक जे पछिला शताब्दीक पांचम ओ छठम दशकमे बंगला भाषाक ***अलालेर घरेर दुलाल*** (आला घरक दुलारू नेना), अथवा ***हुतोम पेंचार नक्शा*** (पहरू मुहदुस्साक चित्ररचना) सदृश पोथी सभमे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ओ अन्य लेखकलोकनिक भाषाक उच्च स्तरकेँ कनेक न्यून कऽ कलकत्ताक सामान्यजनक साहित्यिक भाषा वनयवाक प्रयत्न भेल छल। मुदा 1897 मे जखन फकीरमोहन कथा ओ उपन्यास लिखव आरम्भ कयलनि तँ वंगालोमे व्यवहारतः ओ अभियान सभ लुप्तप्राय भऽ गेल छल। उड़ियामे फकीरमोहनक उपलब्धिक सादृश्यपरक रचना संभवतः वंगला भाषामे लिखित भगवान रामकृष्ण परमहंसक वास्तविक अमृतमय कथा (***कथामृत***) मे ताकल जा सकैछ। फकीरमोहने जकाँ परमहंसो ग्रामीण परिवेशसँ आयल छलाह। दूनूक आत्मा व्यवहारतः आभिजात्य प्रभावसँ दूर छल। दूनू वाह्य संसारक सभ भागसँ प्राप्त प्रभावक प्रति संवेदनशील छलाह तथा अपन हृदयकेँ ज्ञानक प्रकाशक अन्वेषणमे सदिखन फोलने रहैत छलाह।

एहिठाम ई तथ्य उल्लेखनीय अछि जे जनभाषाक धुरंधर विद्वान होइतो फकीरमोहन कहियो एकरा स्थापित करबाक प्रयत्न नहि कयने छलाह जेना वर्ड्सवर्थ ओ कॉलरिज अर्द्धशताब्दी पूर्व अपन ***लिरिकल बैलेड्सक*** संयुक्त भूमिकामे सैद्धान्तिक उद्घोषणाक माध्यमे कयने छलाह। वस्तुतः सेनापति विविध शैलीक प्रवीण व्यक्ति. त्वक रूपमे अपनाकेँ प्रदर्शित करैत रहलाह। ओ परिवेशक अनुरूप पटुतापूर्वक गंभीर शैली तथा लाखक लाख निरक्षर समुदायक प्रजातीय रूढ़ शैली दूनूक निष्णात प्रयोग करैत रहैत छलाह।

राष्ट्रीय परिचिति

ई उल्लेखनीय अछि जे फकीरमोहन विना कोनो योजनाबद्ध तरीकासँ प्रचुर परिमाणमे कथा ओ उपन्यासक रचना कयलनि तथापि ओहि सभमे आश्चर्यजनक परिपूर्णता, सुगठित विन्यास ओ जीवनक वहुरंगी चित्र भेटैत अछि। अन्ततः ओहि समस्त रचनाक परिणामस्वरूप लोकजीवनक समग्र चित्र उपस्थित भेल अछि। हिनक चारिगोट पैघ उपन्यास तथा अनेकानेक दीर्घ ओ लघुकथा सभ उड़ीसाक दुइ गोट क्रमिक शताब्दीक राष्ट्रीय जीवनक सम्पूर्णतामे निरूपण कयलक अछि। ई निरूपण सरवेंट्सक ***डॉन क्विकजोट*** जकाँ अछि जाहिमे स्पेनिश राष्ट्रीय जीवनक समग्र चित्रांकन भेल अछि। फकीरमोहनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचनाकारिताक श्रेय एहि तथ्य पर आधारित अछि जे ओ सामान्य नरनारीकेँ साहित्यजगतमे महत्वपूर्ण स्थान दिऔलनि। लेनिन आ गान्धीलोकनि सामाजिक-राजनीतिक परिसरमे लोकजगतकेँ जहिया प्रतिष्ठापित कयलनि ताहिसँ वहुत पूर्वे फकीरमोहन साहित्य जगतमे हुनकालोकनिक महत्वकेँ स्थापित कऽ चुकल छलाह। अपन वृहत्तर साहित्यिक वस्तुक रूपमे सुविचारित रूपेँ ओ समाजक कोनो वर्गकेँ अछूत नहि छोड़लनि। सामान्य नरनारीक प्रति हुनक स्नेह कोनेा कृत्रिम अथवा प्रचारपरक सामाजिक-राजनीतिक सिद्धान्त आ कि विज्ञापनबाजीसँ उद्भूत नहि छल। सामान्य मनुष्य हुनक उच्च मानवतावादी दृष्टिकोणक अभिन्न अंग छल। हिनक दृष्टि कोनो खास जाति अथवा वर्गक सीमामे वान्हल नहि छल। तेँ फकीरमोहनक पाठक समाजक प्रत्येक वर्गक सभ प्रकारक लोकक परिचय हुनक कृतिक माध्यमे पवैत अछि। एहिमे राजासँ लऽ कऽ कूड़ाकरकट बीछऽवला लोक धरि तथा आदर्श नायक-नायिकासँ लऽ कऽ गुण्डा-बदमास धरिक चित्रण भेल अछि। हिनक असाधारण ओ निरपेक्ष प्रतिभा हमरालोकनिक ग्राम्य ओ शहरी समाजमे अवस्थित बहुतो गुंडा, बदमास तथा मोढ़लोकनिकेँ सेहो प्रस्तुत कयलक अछि। हुनका मनमे गामक प्रति कोनो काल्पनिक रूढ़ि नहि छलनि जे साम्प्रतिक साहित्यमे विद्यमान देखि पड़ैछ।

एहि तरहें टैगोरकेँ जँ छोड़ि देल जाय तँ आधुनिक भारतक साहित्यकारलोकनिमे फकीरमोहनेकेँ सर्वाधिक दृष्टिसम्पन्न कहल जा सकैत छनि। ओ अपन व्यापक ओ महान मानवतावादी दृष्टिकोणक मूल्य पर कोनो संकीर्ण ग्राम्यवाद अथवा मिथ्यावादकेँ कहियो स्वीकार नहि कयने छलाह।

अध्याय 11

विश्वसनीय जीवन-दर्पण

मूलतः यथार्थवादी होयवाक कारणेँ फकीरमोहन लेखन कार्यमे तखने लगैत छलाह जखन अपन चारू दिसुक घटनावली हुनका वर्णन योग्य बुझना जाइत छलनि आ ओहि वर्णनकेँ रूपायित करवाक हेतु ओ अपनाकेँ वाध्य अनुभव करऽ लगैत छलाह। तेँ हुनक अधिकांश गद्यरचना यथार्थ घटनाक ठोस किन्तु अदृश्य भावभूमि पर आधारित अछि।

पुनर्मूषिको भव [1]

उदाहरणक हेतु हुनक एक गोट कथा 'पुनर्मूषिको भव'केँ लेल जा सकैत अछि। एकटा प्रमडलीय नगरमे एकटा प्रधानलिपिक छल। ओ अपना गामक एकटा हजामकेँ नोकरी पर रखलक। हजाम जूता सिलाइसँ लऽ कऽ चण्डीपाठ धरिक सभ प्रकारक काज करबामे सक्षम, स्वस्थ ओ चुस्त-चालाक छल। जखन ईस्ट इण्डिया कम्पनीमे नोन विभाग नवे नव फुजलैक तँ ओकरा गामक स्तर पर अनेक चौकीदारक आवश्यकता भेलैक। प्रधानलिपिकक ई प्रिय हजाम ओ नोकरी दिअयवाक लेल अपन मालिककेँ तत्परतापूर्वक अनुनय-विनय कएलक। मालिकक उच्च पदक कारणेँ ई विपन्न हजाम चौकीदारक पद पर वहाल भऽ गेल। सुदूरवर्त्ती ग्रामांचलमे पदग्रहण कयलाक वाद ई पूर्ववर्त्ती नोकर आव सरकारी उर्दी पहिरऽ लागल। सरल स्वभावक ग्रामीण जनता एकरा सर्वशक्तिसम्पन्न सरकारक अंगक रूपमे वहुत पैघ लोक बूझऽ लगलैक। काल्हुक ई हजाम छौंड़ा आव लोकक नजरिमे ***जमेदार साहेव*** बनि गेल। गाममे ओ एकटा घर लऽ लेलक। यैह घर ओकर कार्यालय सेहो छलैक। अपन पाक बनयवाक लेल तथा आन टहल-टिकोरा लेल ओ एकटा नोकर राखि लेलक। नोकर गोआर जातिक छलैक। अपन जातिसँ वारि देल जयवाक भयसँ ओ हजाम जमेदारक ऐंठ वासन धोयव अस्वीकार कऽ देलकैक। अपन जातिक लोकक दवाब पर ओ एक

1 फेर मुसरी भऽ जाउ

दिन नोकरीओ छोड़ि देलकैक। उच्चपदस्थ हजाम जमेदार अपन एहि सामाजिक अवमाननाकेँ ने तँ बिसरि पौलक आ ने माफे करबाक लेल तैयार भेल। एकर किछुए दिनक बाद ओ जमेदार गोआर बालककेँ नोन बनयबाक मिथ्याधारित मोकदमामे फँसा देलक आ ओकरा गिरफ्तार कऽ कऽ सुनवाइक हेतु जिला मुख्यालय पठा देलक। एहि तरहेँ ओ एक पंथ दुइ काज कऽ लेलक। ओहि अड़ियल युवकसँ ओलि सधा कऽ ओ सौसे गामकेँ सबक सिखा देबऽ चाहलक। संगहि ओ नोन चोरकेँ पकड़वाक उपलक्ष्यमे सरकारसँ इनाम पयबाक आशाक सेहो जोगाड़ कऽ लेलक।

एही बीच ओ मोनबऽढू हजाम गामक पुजेगरीकेँ सेहो अपमानित करबाक दुःसाहस कऽ बैसल। अपराधभोगसँ क्रुद्ध वृद्ध ब्राह्मण ओहि निम्नजातीय हजामक किछु बिगाड़ि नहि सकल, मुदा पूर्वमे दासवृत्तिमे लागल ओहि हजामकेँ ओ मोने मोन शाप दऽ देलक : 'पुनर्मूषिको भव'।

सुनवाइ करऽवला न्यायाधिपति मोकदमाकेँ फूसि घोषित कऽ देलनि। गरीब गोआर मुक्त कऽ देल गेल। मुदा गामक लोक सभ भविष्यमे एहि प्रकारक मोकदमामे फँसा देल जयबाक भयसँ ग्रस्त रहऽ लगलाह। ओ सभ एकटा साहसिक निर्णय लेलनि। एहि निर्णयक अनुसार ओ सभ शक्तिसम्पन्न जमेदार साहेबकेँ नियमित रूपसँ किछु नगद पहुँचायब शुरूह कऽ देलनि। एहि तरहेँ ओसभ जमेदारकेँ तुष्ट करबाक संगहि भविष्यमे कष्टकर वैधानिक प्रक्रियासँ बचल रहबाक व्यवस्था कऽ लेलनि।

गाम लोकक ई उपाय कारगर सिद्ध भेलनि। मुदा अधिकारीवर्गकेँ ई ज्ञात भेलैक जे लोकक भयक लाभ उठा कऽ नोन विभागक सभटा चौकीदार भ्रष्ट तरीकासँ मुट्ठी गरम कऽ रहल अछि। एहिसँ सरकारी राजस्वकेँ अपार क्षति भऽ रहल छैक। तेँ अधिकारीलोकनि भ्रष्टाचारी कर्मचारी सभक निगरानी पर किछु लोककेँ लगा देलनि। किछु आर अपराधीक संग हमरालोकनिक हजाम जमेदार एहि अभियानक आरंभहिमे पकड़ल गेल। परिणामस्वरूप ओकर नोकरी तँ छुटिये गेलैक, संगहि किछु समयक हेतु जहल सेहो भऽ गेलैक।

ताहि समय जहल जायब भयानक सामाजिक दोष बूझल जाइत छल। एहि दोषसँ मुक्त होयबाक लेल अत्यधिक खर्चसँ सम्पन्न होमऽवला प्रायश्चित्तात्मक कर्मकाण्ड करऽ पड़ैत छलैक। न्यायालयमे अपनाकेँ दोषमुक्त सावित करबाक खर्चक संगहि सामाजिक प्रायश्चितक खर्च कयलाक बाद हजाम जमेदार जहलसँ छुटला पर अत्यन्त गरीब भऽ गेल छल। आब फेर ओकरा बपौती लोहखरवला वृत्ति पर उतरऽ पड़लैक ओ एहि तरहेँ अवमानित ब्राह्मणक शाप 'पुनर्मूषिको भव' चरितार्थ भेल।

फकीरमोहन एहि कथाकेँ गढ़ने नहि छलाह। ओ एहू तरहक लेखक नहि छलाह जे ब्राह्मणक शापकेँ दैवी डाङ सावित करऽ चाहैत छलाह। हिन्दू समाजक वर्णाश्रम व्यवस्थामे हजाम आ ब्राह्मण संभवतः दुइ गोट आवश्यक अंगक प्रतिनिधित्व करैत छथि। एहि कथामे एहि दूनू जातिकेँ एहि हेतुएँ परस्पराभिमुख करा देल गेल अछि

जाहिसँ एहि कटु सत्यक दिस संकेत कयल जा सकय जे महत्वाकांक्षी व्यक्ति कोन हद धरि पतित भऽ सकैत अछि आ सामान्यतः होइत रहल अछि। फकीरमोहनक आने कथा जकाँ इहो कथा हुनका चारूकात तीव्रतासँ गतिशील घटनाक्रमक दूरवीक्षण यंत्र थिक। ई तथ्य जॉन वीम्सक आत्मकथासँ सेहो सिद्ध भऽ जाइत अछि जाहिमे ओ पछिला शताब्दीक सातम दशकमे वालासोर जिलामे गुप्त रुपसँ नोन वनयवासँ सम्वद्ध अनुभवक वर्णन कयने छथि। एहि तथ्यकेँ उजागर करव पड्यन्त्रपरक होयत जँ उदारमना वृटिश अधिकारी लगभग एक शताव्दी पूर्वहि गान्धीजीक अभियानक पूर्वानुमान कऽ लेने छलाह आ हुनका एहि हेतु पर्याप्त सहानुभूति छलनि जे भारतीय लोकनिकेँ अपन नोन वनयवाक जन्मसिद्ध अधिकार छनि।

लछमा

आव यथार्थपरक वस्तुविन्यासक दृष्टिसँ फकीरमोहनक उपन्यास सभक परीक्षण कयल जाय। ई सर्वविदित अछि जे जाहि समय (सन् 1740 ई.) अलीवर्दी खाँ वंगाल, उड़ीसा ओ विहारक नवाव घोपित कयल गेल छलाह, दिल्ली ओ आगराक महान मुगल नाममात्रक वादशाह रहि गेल छलाह आ लुटिहारा मराठा घोड़सवार सभ अनधिकृत कब्जावला वाहरी इलाका सभमे पैर पसारि ओकरा सभकेँ फिरौतीक हेतु प्रयुक्त क्षेत्रमे परिणत कऽ लेवामे पूर्वहिसँ समर्थ भऽ गेल छल। भोंसलालोकनिक मुख्यालय नागपुरसँ शत्रु पर आकस्मिक रूपेँ टूटि पड़निहार एहि भयप्रद ओ भीषण ***वार्गीसमूहक*** लेल उड़ीसा सर्वाधिक सुलभ चराँत वनि गेल छल। अलीवर्दीक राजधानी अत्यधिक दूर छलैक। वास्तवमे एही कारणेँ उड़ीसाक असंख्य खण्डायत प्रधानलोकनि एहि अर्थलोलुप मराठा विध्वंसकलोकनिक प्रहारकेँ सहवाक हेतु विवश भऽ गेल छलाह। सदिखन आकस्मिक ओ अप्रत्याशित रूपेँ भीषण आक्रमणक लगले नौ दू एगारह भऽ जयवाक चारित्रिक विशिष्टताक कारणेँ ओकरा सभ पर प्रतिकारक कोनो मार्ग कनिञो प्रभावी नहि भऽ सकलैक। तदुपरि ***वार्गीसमूह*** जाहि हद धरि आदिम प्रकृतिक वर्वर लुटिहारा ओ प्रासादभंजक छल, तकर अंशो योद्धा सैनिक नहि। ई सभ सामना-सामनी लड़ाईकेँ वाँतर वुझैत छल आ गामदेहातक जनसाधारणकेँ लुटवेटामे आनन्दक अनुभव करैत छल। लूटिक आरम्भमे जँ गामक लोकसभ कोनो प्रकारक प्रतिरक्षात्मक प्रतिरोध करैत छलाह तँ ई सभ तकर प्रतिक्रिया मे सौसे गामेकेँ स्वाहा कऽ देल करैत छल।

पूर्वमे स्वतंत्र हिन्दू राजासभक कालहि जकाँ मुगललोकनिक उड़ीसा सूवा गंगासँ गोदावरी धरि पसरल छल। मराठालोकनिक आक्रमण क्रमशः एहि ***सूवाक*** पश्चिमी भागसँ लऽ कऽ उत्तरपूर्व धरिक भाग धरि वढ़ैत चल गेल। साले साल ई विस्तृत क्षेत्र लाखक लाख शैतानी संख्यावलसँ युक्त वार्गी लुटिहारा घोड़सवारलोकनिक यातनासँ त्रस्त रहऽ लागल। सन् 1744 मे कुख्यात ***वार्गी*** नेता भास्कर पंडित अलीवर्दीक एक

गोट सेनानायक द्वारा छलपूर्वक मारल गेल। एहिसँ जनसामान्य ओ अलीवर्दीक प्रशासन दूहूक हेतु कष्टमे वढ़ोत्तरीए भेलैक।

फकीरमोहनक ***लछमा*** उपन्यासमे अठारहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे लोकक एहि दयनीय ओ निराशा भरल दिनक वर्णन भेल अछि।

छमाण आठ गुण्ठ[1] ('छओ एकड़ वत्तीस डिसमिल')

मराठालोकनिकेँ परास्त कऽ कऽ वृटिश सभ 1803 मे उड़ीसामे प्रवेश कयलक। वृटिशक संगहि बंगालीलोकनिक झुण्ड सेहो आयल। 1804 ओ 1817–18 मे उड़ीसामे वृटिश प्रशासनक विरूद्ध पाइक विद्रोह भेल छल। एहि विद्रोहक फलस्वरूप खण्डायत सैनिकलोकनिक प्राचीनकालहिसँ प्रयुक्त तरुआरिक संगहि सैकड़ो वर्षसँ उपभुक्त लगानमुक्त जमीनो छिना गेलनि। राष्ट्रीय विद्रोहकेँ निर्दयतापूर्वक निरस्त करवाक उद्देश्यें ई उपाय वृटिशलोकनिक हथियार बनल। एहि तरहेँ राता-राती हजारक हजार साधारण कृषक ओ कृषक-सैनिक भिखमंगा आ कुलीमे परिणत भऽ गेलाह। उड़ीसाक पारम्परिक मुद्रा कौड़ीक वैधता समाप्त कऽ देल गेल। नवीन मुद्राक अपर्याप्त आपूर्त्तिक कारण हजारक हजार उड़िया कृषक लगान जमा करवामे अक्षम भऽ गेलाह आ अपन पैतृक जमीनसँ वेदखल कऽ देल गेलाह। सामान्य लोकक लेल सर्वाधिक दयनीय स्थितिक कारण छल जटिल भू-लगान सम्बन्धी कानून तथा कुख्यात ***सनसेट लॉ***। एहि कानून सभक माध्यमे कलकत्ताक कोनो किरानी पर्यन्त उड़ीसाक ऐतिहासिक रियासतिक मालिक वनि सकैत छल। एकर परिणामस्वरूप पूर्णतः अपारम्परिक सामाजिक घटना, अनुपस्थित जमींदारीक प्रचलन भेल। जमीन तेजीसँ एक हाथसँ दोसर हाथमे हस्तान्तरित होमऽ लागल। एकर श्रेय नवे नव प्रचलित राजस्व कानूनकेँ भेटलैक। एही कानूनक कारणेँ वृटिश न्यायालयमे नवे नव पनुगैत वकील वर्गक माध्यमे सरलहृदय ओ असावधान सामान्य ग्राम्य कारीगर ओ कृपकलोकनि अपने पड़ोसीलोकनिक द्वारा खूव सताओल गेलाह।

फकीरमोहनक ***छमाण आठ गुण्ठ*** (छओ एकड़ वत्तीस डिसमिल) एही कष्टपूर्ण अवधिक चित्र उरेहैत अछि। एहिमे उड़ीसामे वृटिश प्रशासनक प्रथम पचास वर्षक विस्तारकेँ समाहित कयल गेल अछि। ततःपर अगिला पचास वर्ष धरि मराठा ***वार्गीलोकनिक*** हाथमे जमीन चलि जयवाक दुर्भाग्यपूर्ण ओ कष्टप्रद अनुभवकेँ सेहो एहिमे समेटि लेल गेल अछि।

मामू (मामा)

पछिला शताब्दीक छठम दशक धरि उड़ीसामे आधुनिक शिक्षाक आरंभ जिला मुख्यालयमे स्थित किछु अंग्रेजी माध्यमक उच्च विद्यालयसँ भेल। धन्य कहल जाय

---

1 छमाण आ गुण्ठ उड़ीसाक भू-मापक एकाइ थिक

वृटिश प्रशासनेकेँ जे ओहि समय धरि ई अनुभव कऽ चुकल छल जे उड़ियाभाषी लोक अपने माटि पर अतिशय दुर्दशाग्रस्त अछि। उच्च विद्यालयसँ शिक्षा पावि कऽ जे किछु उड़ियाभाषी बहरायल छलाह, हुनका लेल छोट-छोट पदवला किछु नोकरी सरकारी विभाग सभमे प्रतीक्षा कऽ रहल छल। पूर्वमे धनी-मानी मुदा आव दयनीय अवस्थाकेँ प्राप्त परिवारक धियापुता एहन सरकारी नोकरी पावि कऽ अपनाकेँ धन्य वुझैत छल। ई नोकरिहारावर्ग अपन सुदूरवर्त्ती गाम छोड़ैत गेल आ शहरेमे रहऽ लागल। क्रमशः अपन पत्नीकेँ सेहो शहरेमे वजा लैत गेल। एक वेर राजस्व कार्यालयक चकचोन्हमे लिप्त भेलाक वाद ई सभ अपन परिवारक लुप्त गौरवकेँ धूर्त्ततापूर्वक पुनः स्थापित करवाक प्रयास शुरू कऽ देलक।

फकीरमोहनक ***मामूमे*** पछिला शताव्दीक उत्तरार्द्धमे घटित उड़ीसाक नूतन शहर सभक एही समाजशास्त्रीय स्थितिकेँ समेटल गेल अछि। ***छ माण आठ गुण्ठेक*** समरूप एहू उपन्यासमे गामसँ आयल तुच्छ पुरूष ओ नारीवर्गक ओहि छोट सन शैतानी संसारक खोंइचा छोड़ा कऽ उद्घाटन कयल गेल अछि जे सम्पत्ति ओ अधिकारक लेल अनैतिक हेराफेरीक मार्ग दिस प्रवृत्त भऽ गेल छल।

प्रायश्चित

1918 मे फकीरमोहनक मृत्युक समय धरि उड़ीसा अनेक दृष्टिञे 'आधुनिक' भऽ चुकल छल। उड़िया साहित्यमे आधुनिक कालक पदार्पण 1872 मे राधानाथ राय ओ मधुसूदन रावक संयुक्त कविता संग्रह ***कवितावलीक*** प्रकाशनक संगहि भऽ गेल छल। एहि समय धरि उड़ीसानिवासी अपन पूर्वक प्रजातीय चेतनाक प्रति सावधान भऽ गेल छलाह आ अपन विलुप्त गौरवकेँ पुनश्च स्थापित करवाक लेल कर्त्तव्याभिमुख भऽ गेल छलाह। अंग्रेज द्वारा उड़ीसाकेँ अपन अधिकारमे लऽ लेलाक ठीक सए साल वाद शिक्षित उड़ियालोकनि 1903 मे उत्कल सम्मिलनीक तत्वावधानमे समस्त छिड़िआयल उड़ियाभापी प्रदेशकेँ एकीकृत करवाक मांग कयने छलाह। श्री एम. एस. दास ओ गोपवन्धुदास सदृश सुप्रतिष्ठित उड़ियाभापीलोकनि आव उड़ीसाक विधिसम्मत राजनीतिक-प्रशासनिक मांग लऽ कऽ प्रांतीय ओ वृटिश साम्राज्य परिषद मे गरजैत रहैत छलाह। कटकमे उड़िया साहित्यक एक गोट विद्वत्परिषद (***उत्कल साहित्य समाज***) क स्थापना कयल गेल छल। प्रभावशाली उड़िया साप्ताहिक ओ मासिक पत्रिका सभ उड़ियालोकनिक अतीतकालीन गौरवकेँ निरन्तर प्रस्तुत कऽ रहल छल।

तथापि पश्चिमी शिक्षाक प्रभावसँ सामाजिक विघटनक प्रक्रिया प्रारंभ भऽ गेल छल। ई शिक्षा उड़ीसाक नवका पीढ़ी कटक आ कलकत्तासँ प्राप्त कऽ रहल छल। विश्वविद्यालयक नव शिक्षित समुदाय परसँ जाति-पाँतिक पकड़ ढील भेल जा रहल छल। अपन जीवनसंगिनीकेँ स्वयं चुनवाक मांग सेहो दवल स्वरेँ आवऽ लागल छल। शराव ग्रहण तथा नास्तिक होयवाक प्रदर्शन क्रमशः चारू कात सुप्रचलित होइत जा रहल छल।

फकीरमोहनक अन्तिम उपन्यास ***प्रायश्चित*** 1915 मे प्रकाशित भेल। एहिमे उड़ीसाक सामाजिक जीवनमे होइत एही विकास प्रक्रियाकेँ चित्रित कयल गेल अछि। एकर ठीक वादे राजनीतिज्ञ महात्मा गान्धीक संघर्षकारी प्रभावक अगिला चरण शुरू होइत अछि। ई अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि जे फकीरमोहन मद्रास[1]मे लोकमान्य तिलकसँ गप्प कयने छलाह। ओ पचहत्तरि वर्षक अत्यन्त वृद्धावस्थामे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक अधिवेशनमे ओतऽ गेल छलाह। मुदा फकीरमोहनक वृहत्तर रचना परिसरमे गान्धीजीक कतहु उल्लेख नहि अछि, जखन कि 1918 मे गाँधीजीकेँ महात्मा कहल जाय लागल छलनि। अपन पीढ़ीक अधिकांश भारतीय जकाँ फकीरमोहनकेँ सेहो ब्रितानी सन्धिमे गंभीर आस्था छलनि। तथापि ई दृष्टिसम्पन्न बुद्धिजीवी अपन रचना सभमे एहन कोनो अवसर नहि चुकलाह अछि जाहिमे भारतीयलोकनिक मूढ़ता पर परोक्ष रूपेँ कटाक्ष करबाक अवसर छलैक। जंगलसँ जारन वटोरव आ पानि भरबा मात्रसँ संतुष्ट मूर्ख भारतीय लोकनिक स्थिति पर व्यंग्य करैत ओ इहो संकेत कयलनि अछि जे सात समुन्दर पारसँ आवि कऽ श्वेत प्रजातिक अंग्रेज कोन तरहेँ आनन्दपूर्वक एहि भूभागमे उपलब्ध समस्त सुविधाक उपभोग कऽ रहल छल।

छ माण आठ गुण्ठ (1897) मे कटु व्यंग्यात्मक स्वरमे गामक एकटा पोखरिक वर्णन करैत ओ लिखलनि अछिः 'एक कोरी अथवा ताहिसँ किछु अधिके वगुलाक समूह एहि पोखरिक कछेरमे कादोवला पानिमे बैसल अपन दैनिक आवश्यकताक जोगाड़मे छोट-छोट शिकारकेँ जल्दी-जल्दी पकड़वाक प्रयास करैत भिनसरसँ साँझ धरि टकध्यान लगौने देखि पड़त। मुदा देखू, कतऽसँ समुद्री चिड़इक एकटा जोड़ा ओतऽ आवि गेल अछि आ पोखरिक गँहीर पानिमे कम्मे डुवकी लगा कऽ भरि पेट पैघ-पैघ माछ पकड़ि पूर्ण सन्तुष्टिक संग उड़ि गेल। एकटा समुद्री चिड़इ आब पोखरिक कछेर पर ऊँच जगहमे अपन पाँखि सूर्यक प्रकाशमे पसारने पूर्ण सन्तुष्ट भेल बैसल अछि, ठीक तहिना जेना कोनो ***मेमसाहेब*** प्रीतिभोजक अवसर पर अपन इवनिंग गाउन मे देखि पड़ैत छथि। हे भारतक विनम्र वगुलालोकनि! देखू, कोना अंग्रेज समुद्री चिड़इ दूर देशसँ समुद्र पार कऽ हमरालोकनिक देश चल अवैत अछि आ प्रसन्न भावेँ घुरि जाइत अछि। हुनकालोकनिक खाली जेबी नीक नीक माछसँ भरि जाइत छनि। आ अहाँ मूर्ख जकाँ पोखरिक कछेरक गाछ पर बैसल रहैत छी आ भरि दिनुक कठोर परिश्रमक वाद छोट-छोट शिकारमात्रकेँ पकड़ि पवैत छी। अस्तित्व रक्षाक लेल अत्यन्त कठोर युद्ध आव शुरू भऽ गेल अछि। आब अहाँसभ शीघ्रे क्रमशः वेसीसँ वेसी समुद्री चिड़इकेँ उड़ैत देखव। ओ सभ पोखरिक सभटा माछ खा जायत। जँ अहाँ अपन अस्तित्वक रक्षा चाहैत छी तँ अहूँकेँ एहि समुद्री चिड़इयेक जकाँ व्यवहार करऽ पड़त। अहूँ केँ ई सीखऽ पड़त जे समुद्रमे कोना हेलल जा सकैत छैक ? हमरा ई नहि वुझल अछि जे भविष्यमे कोन तरहेँ अहाँ सभ अपन शरीर आ आत्माक रक्षा कऽ सकव।'

---

1. मद्रास शहर सम्प्रति चेन्नइ नामे जानल जाइत अछि

आइसँ अर्द्धशताब्दी पूर्वहि पाठकलोकनिकेँ एहि भविष्यद्रष्टा तथा राष्ट्रभक्त लेखकक रचनाक लाक्षणिक अर्थ जे तत्कालीन राजनीतिक स्थितिक संकेत करैत छल, स्पष्ट बुझबामे आवि रहल छलनि।

जीवन्त पुरुष आ नारी पात्र

एहि महान लेखकक उपन्यास पर विचार करैत काल हमरालोकनिकेँ दुइगोट मूलभूत तथ्यकेँ नहि विसरवाक चाही। पहिल तँ ई जे हिनका केवल डेढ़े वर्षक औपचारिक शिक्षा भेटल छलनि आ दोसर ई जे ई कहियो कोनो प्रकारविशेषक व्यावसायिक लेखक बनि कऽ प्रसिद्धि पयवाक इच्छुक नहि छलाह। एतऽ धरि जे ई उपन्यास लेखनमे नव मार्गक स्थापनाक मनःस्थिति सेहो नहि रखने छलाह। कविता, महाकाव्य, निवन्ध, कथा ओ उपन्यास समस्त विधामे ई सहज ओ उदासीन रूपेँ जखन जेहन इच्छा आकि सौख भेलनि, रचना करैत रहलाह। काव्यात्मक किंवा सौन्दर्यशास्त्रीय उत्कर्षक ई कहियो परवाहि नहि कयलनि आ ने अपन पाठककेँ विशिष्ट रूपेँ प्रभाविते करबाक चिन्ता कयलनि। वस्तुतः एकरे परिणाम अछि जे हिनक रचनासंसारमे आभिजात्यरहित सहजता अछि। ओहिमे गाम ओ नगरक सामान्य पुरुष ओ नारी पात्रक स्वतःस्फूर्त्त मौलिक, विशुद्ध, सर्वत्रव्याप्त, चलित भापा ओ सहज बोली-वाणीक निदर्शन भेटैत अछि। तथापि प्रौढ़ रचनाविधान, जन्मजात कलात्मकता ओ प्रतिभासम्पन्न लेखकक अन्तर्दृष्टिक कारणेँ ई रचना सभ अत्यन्त सारगर्भित भऽ गेल अछि। स्वभावतः हमरालोकनिकेँ एहि शैक्षणिक अध्ययनसँ रहित मार्गदर्शकसँ ई अपेक्षा नहि करबाक चाही जे पूर्णतः अनुशासित वैनेट अथवा हार्डी सदृश लेखक किंवा आधुनिक उपन्यासक संकीर्णचेतना प्रवाहसँ युक्त साहसिक रचना सभमे भेटैत अछि। तथापि हिनक साधारणो कथानककेँ अमरत्वसँ संपुष्ट करऽवला जे वस्तु अछि से थिक जीवंत स्त्री ओ पुरुषक संवादक प्रस्तुतीकरण। एहि सम्वाद सभकेँ ओ ठीक ओही रूपमे अनुगुम्फित करैत रहलाह जाहि रूपमे ओ अपन वास्तविक जीवनमे देखने छलाह आ आइयो हमरालोकनि देखैत छी।

फकीरमोहनक समयेसँ उड़िया उपन्यास दिन दूना राति चौगूनाक हिसावेँ विकसित होइत रहल अछि। ई प्रगति वस्तुजगतमे होइत विकासक सर्वथा अनुकूले अछि। मुदा कोनो उड़िया उपन्यासकार लोकजगतक सहज ग्रामीण अथवा शहरी बोली-वाणीकेँ समाहित करवामे अथवा सेनापतिक सदृश वास्तविक नर ओ नारी मात्रक चरित्रकेँ सृजित करबाक श्रेष्ठ कलामे हुनकासँ आगू नहि बढ़ि सकलाह अछि आने समकक्षे भऽ सकलाह अछि। हमरालोकनिकेँ नव अनुकरणात्मक फैशन, पहचानचिह्न आ प्रचारात्मकताक संगहि साहित्यिक वस्तु आ भावक चोरी तँ दिने देखार पर्याप्त रूपेँ होइत देखि पड़ैछ, मुदा एहि समस्त प्रयत्नमे कतहु उड़ीसाक जनजीवनक सामान्य नरनारीकेँ प्रकृत रूपमे चित्रित करबाक सहज ओ जन्मजात

प्रतिभाक दर्शन नहि होइछ, जाहिमे सेनापतिक उपन्यासक सांसारिक जीवनसँ उद्‌भूत अविस्मरणीय चरित्र सभक पुनरावृत्तिक प्रक्रिया विद्यमान हो।

पाछू दिस दृष्टिनिक्षेप कयला पर हमरालोकनिकेँ आर चकित रहि जाय पड़ैत अछि। अर्द्धशताब्दी पूर्व लिखित सेनापतिक समस्त रचनामे जनसामान्यक प्रति गंभीर मानवतावादी सहानुभूतिक वर्षा होइत देखि ५ड़ैत अछि। संगहि एहिमे सन्तुलित नैतिक वोध ओ व्यापक वस्तुनिष्ठता सेहो भेटैत अछि। स्वभावतः अपन समाजक तथाकथित निम्नवर्गक सरल प्रकृतिक जनसामान्यक वीच रहऽवला दुष्ट प्रकृतिक लोक आ तथाकथित उच्चवर्गक पैशाचिक प्रवृत्तिक लोकक बीच पाओल जायवला महात्मा दूनूकेँ लेखक समभावसँ अपन साहित्यमे स्थान देलनि अछि। ई ओहि महान लेखकक एहि दृढ़ विश्वासकेँ अभिव्यक्त करैत अछि जे व्यक्ति व्यक्तिगत स्तर पर जँ संसारिक दुःखक भोग करैत अछि तँ ई दुःख ओकर जाति, धर्म ओ सामाजिक स्तरसँ निरपेक्ष होइत छैक तथा ओकर नैतिक पतनक समानुपाती होइत छैक। संगहि इहो जे भगवान समाजक प्रत्येक वर्गक व्यक्तिविशेषमे चरित्रक उदात्तता प्रदान कयल करैत छथि जे आनो आन व्यक्तिक हेतु मार्गदर्शकक काज करैत छैक।

सेनापतिक ***छमाण आठ गुण्ठक*** अत्यन्त शान्त ग्राम्य परिवेशमे वर्णित दुःखान्त घटनाक्रम हुनक औपन्यासिक कृतिक उपर्युक्त विशिष्टता सभक नीक उदाहरण थिक।

रामचन्द्र मंगराज उड़ीसाक अन्तवर्त्ती प्रदेशक एक गोट गामक गरीब आ अनाथ बालक छल। ओ दुआरिये दुआरिये भीख माडि. कऽ गुजर करैत छल। मुदा जन्महिं सँ धूर्त्त होयबाक कारणेँ बाल्यकालहिसँ ओ अपन सामाजिक स्तरक प्रति नीक जकाँ सचेत छल। अपन दुर्भाग्यसँ प्रतिशोध लेबाक हेतु ओ गामेमे सर्वाधिक सम्पत्तिशाली व्यक्तिक रूपमे बसबाक निश्चय कयलक। ओ छोटछीन व्यापार आ सूदि पर लगानी लगयबाक धन्धा शुरू कयलक तथा भाग्यनिर्माणक ओहि छोट-छोट परीक्षणमे लगातार सफल होइत चल गेल।

मंगराजक गाम बंगालक एकटा मुसलमान जमींदारक रियासतिमे छलैक। जमींदार मिदनापुर जिलामे स्थित अपन हवेलीमे रहैत छल आ अपव्ययक हेतु स्थानीय दलाल सभसँ उधार मँगैत रहैत छल। दुष्ट मंगराज आब नीक स्थितिमे छल आ अत्यन्त गौरसँ स्थितिकेँ अंदाजि रहल छल। कोनो समय दलालक सामर्थ्य जबाब दऽ देलकैक आ ओ अपन मालिकक आवश्यकताकेँ आगू पूरा कऽ सकबामे असमर्थता व्यक्त कऽ देलक।

एहि समय धूर्त्त मंगराज दलालक स्थानकेँ भरबाक हेतु पहुँचि गेल आ ओहि लम्पट जमींदारकेँ कृतज्ञतासँ दबा मूर्ख बनबैत अपन नियुक्ति लगान अभिकर्त्ताक रूपमे करा लेलक। न्यायालयक एकटा नीलामीवादमे किछुए दिनक बाद ओ सम्पूर्ण

रियासतिये कीनि लेलक। ओकरा लेल ई कोनो पैघ वात नहि छलैक। लगानक वकियौतामे धूर्त्ततापूर्वक हेराफेरी कऽ कऽ ओ ई काज कऽ लेने छल।

जमींदार भेलाक बाद ओ चानी कटबाक हेतु पागल जकाँ प्रयत्न करऽ लागल। नीक अथवा अधलाह तरीकासँ ओ आन आन लोकक पाइ आ जमीन छीनव आरम्भ कऽ देलक। काल्हुक भिखमंगा आव केवल जमींदारे नहि छल अपितु बीस वर्गमीलसँ अधिकेक ग्रामीण क्षेत्रक सर्वाधिक धनाढ्य व्यक्ति आ सवसँ पैघ महाजनो छल।

ओकरा गामसँ लगले जोलहा सभक एकटा छोट सनक टोल छलैक। ओ सभ अपने दुनियाँमे मस्त रहैत छल। ओकरा सभक सभटा झंझटि पंचायत द्वारा सोझराओल जाइत छलैक। पंचायत वंशप्रमुखक संचालनमे रहैत छल। ओहि समय जोलहा सभक माइंजन भगिया नामक एक गोट निरक्षर व्यक्ति छल। ओकर व्यक्तित्व जोलहा जातिक सुधबलेलपनाक लोकश्रुत प्रतीक छल। ओकर पत्नी सारिया सेहो तेहने छलैक। ओकरा दूनूक मनोरम वैवाहिक जीवनक चरमसुख धियापुताक अभावमे अपूर्णे छलैक। तैं सारिया अपन सम्पूर्ण मातृत्व अपन पोसुआ गाय पर आरोपित कयने रहैत छलि।

भगिया लग गामक एकटा सर्वाधिक उपजाउ भूखंड छलैक। एहि भूखंडक क्षेत्रफल छओ एकड़ बत्तीस डिसमिल छलैक आ ई एकेटा चक छल। एहिमे धान उपजैत छलैक। एही बीच मंगराजक निरन्तर वर्द्धिष्णु खेतक आरि भगियाक छोट आ विशिष्ट भूखंड लग आबि गेल छलैक। की ओकरा आव एतहि रुकि जयबाक चाही ?

मंगराज लग आव पर्याप्त धनबल जमा भऽ गेल छलैक। संगहि ओ मानवक कामवासनाक सहज ओ अदम्य वृत्तिक सेहो गुलाम भऽ गेल छल। ओकर समस्त पापराशिक बीच ओकर पत्नी एक गोट पवित्र दीप जकाँ प्रज्वलित छलैक। ई महिला समस्त सरलहृदय ग्रामवासीक आदरक पात्र बनलि छलीह । एकरे अपन बइमान पतिक सम्पन्नताक अप्रत्यक्ष कारण बूझल जाइत छलैक। मुदा एहि गुणवती जीवन-संगिनीक उपेक्षा कऽ कऽ विकृतमानस मंगराज अपन हृदय एकटा कुख्यात वेश्याकेँ दऽ देने छल। एहि वेश्याक नाम चम्पा छलैक। ई मंगराजक घरकेँ तँ अपना नियंत्रणमे रखनहि छलि संगहि ओकर आनो सभ मामिला अपने अधिकार क्षेत्रमे बूझैत छलि।

गरीब भगियाक छओ एकड़ बत्तीस डिसमिल जमीनकेँ गीड़ि जयबाक मंगराजक इच्छा जनलाक वाद दुष्ट चम्पा सरल सारिया पर तेना झपटल जेना कोनो बाज परबा पर झपटैत अछि। ओ धूर्त्ततापूर्वक सारियाक निःसन्तान होयबाक भावनाकेँ उत्तेजित कयलक। ओ सप्पत खा कऽ सारियाकेँ कहलकैक जे ओकरा अवश्ये सन्तान होयतैक आ ओकर जीवन सुधरि सकैत छैक। एहि हेतु ओ सारियाकेँ कहलकैक जे ओ अपन घरवलाकेँ समझा-बुझा कऽ ग्रामदेवीक गहबर बनवा दौक। ग्रामदेवी गामक पोखरिक भीड़ पर स्थित बड़क गाछ तर छतविहीन पड़लि छलीह। निःसन्तान होयबाक दोषसँ

मुक्त होयबाक उपाय देखि दीन सारिया पहिने तँ धकचुकायलि, मुदा अन्तमे चम्पाक कपटपूर्ण प्रस्तावकेँ मानि लेलक आ ओकर पाखण्डपूर्ण वचन पर विश्वास कऽ लेलक।

भगिया अपन छओ एकड़ वत्तीस डिसमिल भूमिकेँ मंगराज लग भरना राखि भविष्यमे मन्दिर निर्माण करबाक लेल पाइ उठा लेलक। जाहि वैधानिक कागत पर ओ विना किछु बुझने अउँठा छाप लगा देलक, तकर एकटा शब्दो धरि ओ नहि बूझि सकल। भरनाक कारणेँ भगियाकेँ जे पाइ दातव्य छलैक, तकर बदलामे मंगराज ग्रामदेवीक गहवर लग किछु गाड़ी पाथर खसबा देलकैक। भगिया लग पाथर पर पाथर जोड़ि मन्दिर ठाढ़ करबाक लेल आगू कोनो साधन नहि छलैक। भरनाक समय समाप्त भेला पर मंगराज निर्दोष भगिया पर वैधानिक कार्रवाइ कऽ देलक। ओकरा सहजहिँ अधिकार पत्र भेटि गेलैक। आब ओ भगियाक छओ एकड़ बत्तीस डिसमिल गोएरा जमीनक कानूनी अधिकारी तँ भइये गेल, संगहि सूदि ओ मोकदमाक खर्चक बदलामे एहि गरीबक घराड़ी पर सेहो कब्जा कऽ लेलक। गृहविहीन भगिया आब भातो-रोटीक लेल गलिये-गलिये भीख मंगैत देखि पड़ैत छल। एहि जघन्य काजकेँ सम्पादित कएलाक बाद चम्पाक नजरि सारियाक पोसुआ गाय *नेत* पर पड़ि चुकल छल । ओ गाय नहि केवल सारियाक एकमात्र चलसम्पत्ति छलि, अपितु सन्तानहीन सारियाक जीवनीशक्तियो छलि। अपनाकेँ गृहविहीन बूझि तथा अपन गायकेँ जवर्दस्ती ओ क्रूरतापूर्वक लऽ जाइत देखि हमरालोकनिक ई सोझमतिया जोलहिन नायिका सारिया अपन गायक पाछू लागलि दौगैत रहलि ओ मंगराजक पछुअति धरि पहुँचि गेलि। ओ ओहिठामसँ हटबासँ नकारि देलक आ अपन प्रिय पशुक हेतु नोर बहबैत रहलि। जिद्दक कारणेँ ओहि लाचार महिलाकेँ मंगराजक भाड़ाक सिपाही सभ निर्दयतापूर्वक पीटलकैक। ओ तन्नुक महिला अधिककाल धरि एहन अत्याचार वरदाइस नहि कऽ सकलि आ मंगराजक घरक पाछूवला वरंडा पर प्राण छोड़ि देलक।

एहि समय धरि मंगराजक धर्मात्मा पत्नीक सेहो देहान्त भऽ गेल छलैक। मंगराजक जीवनक्रममे सेहो आकस्मिक मोड़ आबि गेल छलैक। सारिआक दुःखद मृत्यु ओकर घरवलाकेँ पूर्णतः पागल बना देने छलैक। संगहि ई एकटा पुलिस जाँचक कारण सेहो भऽ गेलैक। मंगराज गिरफ्तार कऽ लेल गेल। ओकरा पर मुकदमा शुरू भऽ गेलैक। सारियाक मृत्युक लेल ओ प्रत्यक्ष रूपें उत्तरदायी नहि सावित भेल। ओकरा भगियाक मकान आ धनखेतीकेँ कब्जामे करबाक कानूनी अधिकारसँ युक्त पाओल गेलैक। तथापि सारियाक गायकेँ बलजोरी लऽ जयबाक कारणेँ ओकरा किछु मास धरिक कठोर कारावासक दण्ड सुनाओल गेलैक।

ताहि समयमे अपराधी ओ पागलकेँ एके संग राखल जाइत छलैक। एक दोसरासँ अनजान मंगराज आ भगिया आब कटकक एके जहलमे संगे रहैत छल। मंगराजक संग जहलक एके गोट कोठलीमे बन्द किछु लोक एहनो छल जकरा मंगराज मनगढ़न्त आरोपक आधार पर कानूनी प्रक्रिया करा जहल पठयबाक माध्यम

वनल छल। एक राति ओकरा द्वारा पूर्वमे सताओल गेल लोकसभ ओकरा पर वदलाक भावनासँ आक्रमण कऽ देलकैक। जहलक चिकित्सक द्वारा ओकर द्याओक इलाज करैत काल पागल भगिया कोम्हरहुँसँ दौगैत आयल आ उग्रतापूर्वक ओकर नाक काटि लेवाक कोशिश कयलक। दीन मंगराजक स्थिति क्रमशः गंभीर होइत चल गेलैक। ओकरा अवधिसँ पूर्वहि कारागारसँ मुक्त कऽ देल गेलैक। अन्ततः ओ अपन उजड़ल घरक अङ्गनइमे मरि गेल। मरवाक समय ओकरा मुँहसँ ई अस्पष्ट प्रलाप वहराइत रहलैक : 'छमाण आठ गुण्ठ, छमाण आठ गुण्ठ'। संगहि ओ अपन स्वर्गीया गुणवती पत्नीक तरंगनक सदृश ज्योतिर्मय मूर्त्तिकेँ अन्तकालमे स्मरण करैत रहल।

जहलमे वंद मंगराजक अनुपस्थितिक लाभ उठाकऽ चम्पा ओकर सभटा रुपैया-पाइ आ गाममे नुकाकऽ राखल वेस महग गहना सभ समेटि लेलक। ओकर योजना ई छलैक जे ओ मंगराजक हजाम नोकर गोविन्दाक संग कटक भागि जाय तथा ओतहि एकटा वेश्यालय खोलय। गोविन्दाकेँ ओ अपन भड़ुआ आ संरक्षकक रूपमे राखऽ चाहैत छलि। मुदा गोविन्दा विवाहित छल आ पिता वनि चुकल छल। ओ लूटिक मालमे अपन हिस्साटा चाहैत छल। एहि हिस्सासँ ओ अपन पैतृक व्यवसाय छोड़ि दोकान खोलऽ चाहैत छल तथा गामक लोकक वीच संभ्रान्त वनि कऽ रहऽ चाहैत छल। सड़कक कातमे बसल एकगोट वीरान धर्मशालामे ई दूनू रूकल। दूनूक वीच अपन विपरीत कार्यक्रमकेँ लऽ कऽ हिंसक मतभेद भऽ गेल छलैक। खिसिया कऽ गोविन्दा रूसि रहल आ भोजन करवाक मनाही कऽ वाहरवला वरंडा पर वैसि गेल। चम्पा भरि इच्छा भोजन कऽ लेलक आ निफिकिर भऽ कऽ फोंफ काटऽ लागलि। वहुमूल्य झोड़ाकेँ ओ अपन गेरुआक जगह पर राखि लेने छलि।

भूख आ थकनीसँ चूर गोविन्दा अपन वाधाकेँ समाप्त करवाक रस्ता ताकि लेलक। ओ अपन लोहखरसँ तेजगर अस्तूरा निकालि अन्हार धर्मशालामे घुसि गेल तथा सूतल चम्पाकेँ आरामसँ जवह कऽ देलक। आव ओ मूल्यवान झोड़ाकेँ लऽ कऽ निकटवर्त्ती घाट पर जा जूमल। घटवार एकटा यात्रीक लेल अपन निम्न खराव नहि करऽ चाहैत छल। वादमे ओ हकवकायल गोविन्दासँ अप्रत्याशित रूपें खूव मोट रकम पावि तैयार भऽ गेल। नाव जखन मझधारमे पहुँचल तँ प्रातःकालक लालिमा पसरऽ लगलैक। घटवार गोविन्दाक कपड़ा पर खूनक अनेक दग्गी देखलक आ ओकरासँ एहि सम्बन्धमे खोधवेध करऽ लागल। ठीक एही क्षण दोसर घाट पर डाकक हरकारा देखि पड़लैक। ओकरा लग डाकक अनेक बोरा छलैक। निश्चिते अपराध जगजाहिर भऽ जायत तथा पकड़ल जायव, ई सोचि डरे गोविन्दा मंगराजक पापक कमाइवला झोड़ा सहित नदीमे कूदि पड़ल आ डूबि गेल।

भारतीय साहित्यमे एहन कतेक रचना अछि जाहिमे गामक सामान्य लोककेँ आधार बनाकऽ एहन मार्मिक ओ चटपट दृश्यान्तरवला उदात्त दुःखान्त कथानकक सृजन भेल अछि ? फकीरमोहनसँ पहिने कोनो एहन साहित्यकार नहि भेल छथि जे गामक फटीचर लोक ओ देहाती भुच्चड़ सभकेँ गरिमामय नायक-नायिकाक रूपमे

प्रतिष्ठित कयलनि। केवल एही पोथीमे नहि, व्यवहारतः हिनक समस्त गद्यरचनामे फकीरमोहनक सर्वाधिक प्रिय ओ जीवन्त पात्र सभ हजाम, जोलहा. कृषक मजूर आ अछूत स्त्री ओ पुरुषक वर्गसँ आयल अछि।

आश्चर्योमे आश्चर्य तँ ई अछि जे फकीरमोहन ***छमाण आठ गुण्ठ*** सन महत्वपूर्ण शीर्षकसँ उपन्यास रचनाक कोनो योजना नहि वनौने छलाह। अपन सम्पादक मित्र विश्वनाथ कार द्वारा ***उत्कल साहित्यक*** हेतु एकटा कथाक लेल बेर-वेर दवाव देला पर ओ एकरा लिखव शुरूह कयने छलाह। साहित्यक एहि विधामे वीस वर्ष वा अधिकेक अन्तराल पर हिनक ई दोसर रचना छल। मुदा ई दोसर कथा क्रमशः एकटा उपन्यासमे परिणत भऽ गेल।

अतएव एहिमे कोनो आश्चर्यक वात नहि जे ***छमाण आठ गुण्ठ*** उड़ीसाक साहित्य जगतमे तुरत सफलता प्राप्त कऽ लेलक। एकर सफलता संभवतः डिकेन्स द्वारा रचित ***पिकविक पेपर्सक*** धारावाहिक प्रकाशन जकाँ भेलैक। अंग्रेजीक ओहि शास्त्रीय ग्रंथहिक जकाँ इहो पोथी उड़ियालोकनिकेँ अपन ग्राम्य सांस्कृतिक जीवनक विचित्रता पर हँसीसँ लोटपोट करबैत रहल। एहिसँ पूर्वक कोनो रचना हुनकालोकनिकेँ एहन विशिष्ट रूपेँ आह्लादित नहि कयने छलनि। ई बात सवा सोलह आना सत्य अछि जे ***उत्कल साहित्य*** मे प्रकाशित एहि कथाक ओ पृष्ठ सभ जखन आवऽ लगलैक जाहिमे सारियाक मृत्यु ओ चम्पाक हत्यासँ सम्वद्ध पुलिस जाँचक वर्णन छलैक तँ सुदूर देहात सभसँ लोक न्यायालयक प्रक्रिया ओ वास्तविक रामचन्द्र मंगराजकेँ कठघरामे प्रत्यक्ष रूपेँ देखबाक लेल कटक आबऽ लागल छल। एहन कतेक औपन्यासिक कृति अछि जे एहि रचना जकाँ लोकक उत्सुकताकेँ जगा सकल अछि ?

अध्याय 12

आह्लादक आधुनिकता

छमाण आठ गुण्ठक ग्राम्य परिवेशक ठीक विपरीत फकीरमोहनक ***प्रायश्चित*** कटकक शहरी जीवनक पृष्ठभूमिमे रचित अछि। 19 म शताब्दीक अन्तिम चरणमे विश्वविद्यालयक नव शिक्षाप्राप्त तथा उच्चवर्गक स्त्रीपुरूप एकर मुख्य नायक-नायिका छथि। एहि उपन्यासक रचना धरि उड़ियालोकनिक एक वा दू पीढ़ी नव स्थापित विश्वविद्यालय ओ कालेजसँ प्राप्त पश्चिमक जमओड़सँ प्रभावित भऽ कऽ अस्तित्वमे आवि गेल छल। फकीरमोहन जखन तखन मजाकमे ई स्वीकार करैत छलाह जे पश्चिमी सोचकेँ ठीकसँ आत्मसात् नहि कऽ सकनिहार उत्थर विचारवला अँग्रेजी शिक्षाप्राप्त समुदायक तुलनामे ओ सर्वथा अज्ञानी छथि। आव माता-पिताक प्रति तिरस्कारक भाव वढ़ि रहल छलैक आ जातिप्रथाक अवरोध शुरू भऽ गेल छलैक। फकीरमोहनक सूक्ष्म दृष्टिसँ ई नुकायल नहि रहि सकल जे शीघ्रे ई असन्तुलित ओ अनुभवरहित युवकलोकनि समाजमे ओहिना कष्ट पावऽ लगलाह अछि जेना पुरना पीढ़ीक लकीरक फकीर लोकसभ अपन विवेकरहित आ सारहीन परम्परानिष्ठाकेँ रूढ़ समर्थन देलासँ पबैत रहलाह अछि। एहि दूनू वर्गक लोककेँ अपन कुसमंजन ओ असंतुलनक हेतु गंभीर प्रायश्चित सेनापतिक ***प्रायश्चित*** शीर्षक विशिष्ट उपन्यासमे करऽ पड़लनि अछि। कथानक एहि प्रकारेँ अछि :—

कटक जिलाक शंकरसण मोहन्ती अमीर वनि गेल छल। एकटा रियासति किनलाक वाद तँ ओ छोटछीन राजा सएह भऽ गेल छल। मुदा अपन निम्नकोटिक सामाजिक स्तर आ असंभ्रान्त तरीकासँ प्रगति करवाक मार्गकेँ ओ सभ दिन मोनमे जोगौने रहल।

ओकर रियासतिसँ सटले एकटा वास्तविक सामन्त वैष्णव पटनायकक रियासति छलैक। पटनायक नव रईस शंकरसणसँ घृणा करैत छल। शंकरसण पटनायके जकाँ सामाजिक प्रतिष्ठा पयवाक सपना पोसने छल। ई वात पटनायकोकेँ वूझल छलैक।

आधुनिक स्थितिक संग तालमेल करवाक प्रयासक रूपमे पटनायक अपन एकमात्र पुत्र गोविन्दचन्द्रकेँ अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करवाक हेतु कटक पठौलक, यद्यपि पटनायककेँ अपना एको अक्षर अंग्रेजी नहि अवैत छलैक। गोविन्दचन्द्र कुशाग्र वुकि

तँ नहि छल मुदा देखबामे सुन्दर छल आ बौद्धिक अनुकरणमे नीक अभिरुचि रखैत छल। जखन ओ महाविद्यालयमे प्रवेश कयलक तँ अपन संगी सभक द्वारा उदीयमान कविक रूपमे स्वीकार कऽ लेल गेल। ओकरा अपन परिवारे नहि अपितु सम्पूर्ण उड़िया जनताक आशाक केन्द्रक रूपमे जानल जाय लगलैक। उड़ीसाक आरंभिक स्नातक वर्गमे समाजसुधार सन राष्ट्रीय समस्याक प्रति पूर्ण उत्साह विद्यमान छलैक। एहि स्नातक वर्गमे गोविन्दचन्द्रो छल। एकरा सभक अपन आलोचना सभा छलैक जाहिमे तरुण, प्रियदर्शी, कवित्वपूर्ण आ रईस गोविन्दचन्द्र ध्रुवतारा जकाँ चमकैत छल।

एही गोष्ठी सभमे गोविन्दचन्द्र आ राजीवलोचनक बीच एक पान दू टुकड़ी भऽ गेलैक। नव धनाढ्य आ सामाजिक स्तरीयताक उत्थानक हेतु अत्यन्त इच्छुक राजीवलोचन शंकरसण मोहन्तीक भातिज छल। मोहन्तीकेँ इन्दुमती नामक सुन्दरी ओ विवाहयोग्या कन्या छलैक। अपन पित्तीसँ नीक जकाँ पुरस्कृत होयबाक कामनासँ तथा ओकर सामाजिक स्तरकेँ उपर उठयबाक प्रयासमे राजीवलोचन इन्दुमती आ गोविन्दचन्द्रक विवाहक व्यवस्था कएलक। मुदा ओ एहि तथ्यक जानकारी गोविन्दचन्द्रक माता-पिताकेँ नहि देलक। उदीयमान कविक रोमांचक भावनाकेँ जगयबाक हेतु राजीवलोचन अपन पितियौत बहिन इन्दुमतीकेँ अत्यन्त सुन्दरी आ उच्च प्रकृतिक उदीयमान कवयित्रीक रूपमे प्रचारित कयलक।

विकासवादी प्रपंच

पचास वर्ष पूर्वहि सूक्ष्मदर्शी फकीरमोहन एहि तथ्यकेँ नीक जकाँ देखि चुकल छलाह जे कृत्रिम अंग्रेजी शिक्षाक प्रसारक अवशेषक रूपमे शहरमे कोन तरहेँ दलाललोकनिक प्रादुर्भाव भऽ गेल छल जे सम्मान पयबाक हेतु किछु कऽ सकैत छल। भारतीयसमाजक एहि नव वर्गक उत्तम प्रतिनिधिक रूपमे ***प्रायश्चित*** उपन्यासक एक गोट पात्र कमललोचन देखि पड़ैत अछि। राजीवलोचन एहि कमलोचनकेँ मुड़लक। कमललोचन कनेक खुशामद कयला पर डार्विनक सिद्धान्त पर आधारित स्वयंवर पद्धति पर एकटा नीक आलेख तैयार कयलक। ई आलेख आलोचना सभाक गोष्ठीमे राजीवलोचन द्वारा पढ़ल गेल जकर अध्यक्षता तरुण राजकुमार गोविन्दचन्द्र कऽ रहल छल। हालेमे प्रकाशित तथा सम्पूर्ण संसारकेँ चमत्कृत करऽवला चार्ल्स डार्विन रचित ग्रन्थ ***ऑरिजिन ऑफ द स्पेशिज*** पर आधारित वैज्ञानिक विनिबन्धक पाठसँ जे भावनाक लहरि उदित भेल, तकर कारणेँ सभामे एकटा प्रस्ताव पारित कयल गेल जे युवकलोकनि अपन जीवनसंगिनीक चुनाव जाति भेद पर बिना ध्यान देने करथि।

ई प्रस्ताव तथा राजीवलोचन द्वारा इन्दुमतीक शारीरिक सौन्दर्य तथा कलात्मक गुणक चमत्कारीवर्णन गोविन्दचन्द्रकेँ मोहि लेलकैक। ई जनितो जे ओकर स्नेहशील ओ वृद्ध मातापिताक हृदय एहि सम्बन्धसँ टूटि जयतैक, ओ सामाजिक स्तरमे न्यून मोहन्ती परिवारमे विआह करबाक स्वीकृति दऽ दैलकैक। आ जखन एहि गुप्त विवाहक समाचार पटनायक परिवारकेँ भेटलैक तँ बूढ़ वैष्णव पटनायकक आत्मतुष्ट

आभिजात्येटा आहत नहि भेलैक अपितु ओकर सम्पूर्ण पारिवारिके जीवन अस्तव्यस्त भऽ गेलैक।

राजीवलोचनक ई प्रयत्न रहलैक जे गोविन्दचन्द्र अपन माता-पितासँ भेट नहि करय। मुदा कटकमे गोविन्दचन्द्रकेँ ई सूचना भेटलैक जे ओकर वृद्धा माय मृत्युशैय्या पर पड़लि छथिन आ अपन एकमात्र पुत्रक अन्तिम दर्शन करऽ चाहैत छथिन। ओ गाम जयबाक तैयारी करऽ लागल। राजीवलोचन शीघ्रे जा जूमल। ओ गोविन्दचन्द्रक योजनाकेँ विफल करऽ चाहैत छल। जल्दीए ओ अपन पित्ती लग पहुँचल आ हुनका चेतवैत कहलक जे जँ गोविन्द अपन माता-पितासँ भेट कऽ लेत तँ इन्दुमतीक भविष्य गड़वड़ा जयतैक। ओ निष्कपट तथा असहाय इन्दुमतीकेँ दवाव दऽ कऽ एकटा कविता पर हस्ताक्षर करयवामे सफल भऽ गेल। एहि कवितामे इन्दुमती अपन पतिकेँ यथाशीघ्र भेट करवाक भावपूर्ण निवेदन कयने छलि। नीक जकाँ गढ़ल ई काव्यात्मक पत्र ततेक भावोत्तेजक छल जे कोनो तरुण पति ओकर अवहेलना नहि कऽ सकैत छल। रोमांससँ भरल गोविन्दचन्द्र अपन माता-पितासँ भेट करवाक योजना रद्द कऽ देलक आ तुरत इन्दुमतीसँ भेट करवाक हेतु चलि देलक।

गोविन्दचन्द्र जखन अपन सासुर पहुँचल तँ मानसूनक समय छलैक।अन्हरिया राति छलैक। निकटवर्त्ती इलाकामे किछु डकैतीक घटना सेहो घटल छलैक। गोविन्दकेँ एहि वातक कनेको भनक नहि छलैक। ओ इन्दुमतीकेँ आकस्मिक रूपेँ भेट करवाक कल्पनामे डूबल छल। ओकरा वूझल छलैक जे इन्दुक कोठली नदीक कछेड़मे पड़ैत छैक। सामाजिक शिष्टताक अवहेलना कऽ ओ नदीक कछेरवला खुरपैरिया पकड़ि लेलक। मध्यरात्रिक समय ओ इन्दुक खिड़कीकेँ ढकढकौलक। हालेमे भेल डकैतीक ताजा घटनाक स्मरण कऽ इन्दुमतीक खवासनी केवाड़केँ ढकढकयवाक एहि रात्रिकालीन ध्वनिसँ आतंकित भऽ गेलि ओ भयसँ चिकरऽ लागलि। सौंसे हवेलीमे खलवली मचि गेलैक। दर्जनो खवासनी सभ जोर जोरसँ चिकरऽ लागलि। अन्हारमे प्रतीक्षारत प्रेमी आ रोमांससँ भरल जमायकेँ लोक डकैत वूझि लेलक। मोहन्तीक आदमी सभ शीघ्रे नदीक कछेड़मे चारू कात छिरिआ गेल आ गोविन्दकेँ पकड़ि लेलक। ओकर खूब नीक जकाँ मरम्मति कऽ देल गेलैक आ हाथ पैर वान्हि कऽ एकटा बन्द कोठलीमे फेकि देल गेलैक जाहिसँ भिनसर भेला पर ओकर भविष्य पर विचार कयल जा सकितैक।

भोरमे गरानिसँ भरल संकटक उद्घाटन भेल। गोविन्दचन्द्रकेँ शीघ्र कटकक अस्पतालमे चिकित्साक हेतु पठाओल गेलैक। स्वास्थ्य लाभेक अवधिमे ओकरा अपन माइक मृत्युक सूचना भेटलैक। संगहि ओकरा इहो सूचना भेटलैक जे अपन प्राणप्रिय पतिक अपमानकेँ सहि सकबामे असमर्थ इन्दुमती अपना घरक पछुअतिवला नदीमे डूवि कऽ आत्महत्या कऽ लेने छलैक। वयोवृद्ध पटनायक (गोविन्दचन्द्रक पिता) जनिका अपना संभ्रान्त होयबाक गुमान छलनि आ वयोवृद्ध मोहन्ती (गोविन्दचन्द्रक ससूर), जे आभिजात्यक हेतु इच्छुक छलाह, दूनू अपन स्वप्नकेँ माटिमे मिलैत देखि एकदोसराकेँ विनु जनौने घर-दुआरि छोड़ि सन्यास ग्रहण कऽ लेलनि। तरुण गोविन्दचन्द्र सेहो कटकक अस्पताल एही उद्देश्यकेँ मोनमे राखि छोड़ि देने छल।

मथुरामे एहि तीनू गोटेक भेट भेलनि। तीनू गोटे गेरुआ वस्त्र धारण कयने छलाह आ अपन अपन जीवनमे कयल गेल त्रुटिक हेतु पश्चात्ताप कऽ रहल छलाह। पटनायक आ मोहन्ती दूनू सामाजिक प्रतिद्वन्द्वी आव एक दोसराक भावापन्न मित्र आ संगी भऽ गेल छलाह। ओ दूनू गोटे मथुरेमे रहि गेलाह आ गोविन्दचन्द्रकेँ रियासतिक ताकछेमक हेतु घर विदा कऽ देलथिन। घुरलाक वाद गोविन्दचन्द्र दूनू रियासतिक आमदकेँ जनकल्याणक विविध परियोजनामे लगा देलक। ओ दोसर विवाह नहि कयलक आ युवावस्थामे कयल अपन गलती सभक दीर्घ ***प्रायश्चित*** स्वरूप पूर्ण परोपकारी जीवन वितवऽ लागल। एहि तरहेँ ***प्रायश्चितक*** कथानक समाप्त भेल अछि। फकीरमोहनक ई अन्तिम उपन्यास हुनक मृत्युसँ तीन वर्ष पूर्व प्रकाशित भेल छल।

ई अत्यन्त आश्चर्यजनक गप्प अछि जे व्यवहारतः स्कूली शिक्षासँ रहित फकीरमोहनक मोन कोन तरहेँ अपन समसामयिक घटनाक जानकारी रखैत छल आ अद्यतन वैज्ञानिक सिद्धान्त ओ राजनीतिक पद्धति पर्यन्तकेँ ओ अपन रचनामे अन्तर्भुक्त कऽ लैत छलाह। डार्विनक सिद्धान्त पर कमललोचनक लेख ***प्रायश्चितक*** कथानककेँ यथेच्छ परिपूर्णता प्रदान कयलक अछि। ई लेख भारतीय समाजमे सुधारक दृष्टिकोणसँ लिखल गेल छल। समाजसुधारक एहि प्रक्रियामे उपन्यासक तरुण नायक अपन सामाजिक स्तरसँ न्यून स्तरमे विवाह करव स्वीकार कऽ लेलक। ई विश्वविद्यालय शिक्षा प्राप्त तरुणवर्गकेँ समाजसुधारक हेतु सक्रिय वनयवाक सर्वाधिक आधुनिक तरीका छल जे कथाकेँ समुचित उपसंहार धरि पहुँचौलक अछि। ***प्रायश्चित*** उपन्यासमे वर्णित मनपसन्द वर ओ कन्याक चुनाव पर रचित विनिवन्ध ततेक रोचक ढंग सँ उपस्थापित कयल गेल अछि जे ई लेखकक जन्मजात, सहज, ओ चमत्कारपूर्ण प्रवृत्तिकेँ सावित करैत अछि जकरा माध्यमे ओ अपन रचनावृत्तिमे ओहि समस्त ज्ञानक प्रयोग करैत रहलाह जकरा ओ समेटि सकल छलाह।

अपरिष्कृतसँ उत्कृष्ट धरि

केवल एही रचनामे नहि अपितु अपन समस्त अन्य उपन्यास ओ अधिकांश कथामे फकीरमोहन पाठकक मोनकेँ अपरिष्कृत स्थितिसँ उत्कृष्ट स्थिति धरिक ऊर्ध्वगामी यात्रा करवैत छथि। एहिसँ हिनक रचनामे गंभीरता ओ उच्चता जुटैत चल जाइछ। तथापि हिनक रचनाक जड़ि सामाजिक यथार्थसँ दृढ़तापूर्वक जुड़ल रहल अछि। उदाहरणक हेतु ***प्रायश्चितक*** घटनावलीमे हमरालोकनि गोविन्दचन्द्रकेँ कटकक अस्पतालमे स्वास्थ्यलाभ करैत देखैत छी। एहूठाम ओ निरीक्षणक हेतु आयल चिकित्सकक संग सहज मुदा महत्वपूर्ण कथोपकथनमे डूवल रहैत अछि। ई कथोपकथन मृत्यु, आत्मा आदि जीवनक गहन समस्या सभ पर विमर्शक रूपमे होइत अछि जे निकटक वार्डमे कोनो रोगी मृत्युक उपरान्त उठलैक अछि। ***मामू*** शीर्षक अपन उपन्यासमे चतुर लेखक एकटा पंडितसभाक आयोजन कयलनि अछि। ई आयोजन वस्तुतः मृत्युक एगारहम दिन अर्थात् शुद्ध होयवाक दिनक अवसर पर उड़ीसाक सामन्तवर्गक वीच प्रचलित रूढ़िसँ गृहीत भेल अछि। तरुण नायकक दुःखद मृत्युक कष्टकर वर्णनक पश्चात् आयोजित ई परिष्कृत वाद-विवाद अद्भुत

शान्तिप्रदायक होइत अछि। एकर तुलना सोनक आभूषणमे जटित हीरासँ कयल जा सकैत अछि जाहिमे प्रत्येक एक दोसराक प्रभावकेँ गुणित करैत छैक। नर ओ नारीक भीड़ भरल रंगभूमिमे जतऽ एक दोसराक आशा ओ आकांक्षा निरन्तर टकराइत रहैत छैक, श्रेष्ठ पंडितलोकनिक आत्मा ओ परमात्माक प्रकृतिसँ सम्बद्ध ई वाद-विवाद वस्तुतः एकटा अनुपम निबन्ध थिक। मुदा प्रतिभाशाली फकीरमोहन एहनो आध्यात्मिक वार्त्तालापमे हास्यक पुटकेँ खीचि कऽ लऽ अबैत छथि। तेलगू पंडित रंगा भट्ट वेंकट पन्तुलु एकटा गेय संस्कृत श्लोकक माध्यमे एहि तरहेँ कहैत देखाओल गेलाह अछि :

'हम चाहैत छी जे ***वेद ओ दर्शनक*** संगहि हमरा सभकेँ जन्म जन्मान्तर धरि मेरचाइ, तेतरि तथा घोरक तीन गोट दिव्य वरदान पर्याप्त रूपें भेटैत रहय।'

सेनापतिक औपन्यासिक कृति सभमे एकटा दोसरो महत्वपूर्ण पक्ष अछि। हिनक समस्त कृतिमे नीक आ अधलाह दूनू प्रकृतिक लोक दुःख भोगैत अछि। ई दुःखकेँ जीवनक अहस्तान्तरणीय अंग मानलनि अछि जे वस्तुतः ई अछियो। हिनक उपन्यासमे नीक लोक दुःख पावि कऽ विकास करैत अछि आ दुष्ट प्रकृतिक लोक दुःख पावि कऽ पवित्र भऽ जाइत अछि। ई कोनो प्रकारक नैतिक विपथगमनक प्रति गंभीर नहि छथि। तथापि ओहि समस्त वस्तुमे सुधारक अपेक्षा रखैत छथि जे पुरातनपंथी, हानिकारक तथा अनुचित अछि। हिनक दृष्टिमे पाप कुसमंजन थिक। हिनक तथाकथित पापी चरित्र अपन जीवनवृत्तिक अन्त सामान्यतः पश्चात्तापक द्वारा पापमुक्तिसँ करैत अछि। ओ चरित्र सभ विशुद्ध मोनसँ पश्चाताप कयनिहार लोकक प्रति ईश्वरीय कृपा निश्चित रूपसँ भेटवाक नियमक अर्न्तदृष्टिसँ सम्पन्न भेटैत अछि।

एहि तरहेँ फकीरमोहनक औपन्यासिक कृति सभ अपनामे सम्पूर्ण आ समरसतायुक्त अछि। उड़ीसाक जीवन तथा समाजक विश्वस्त दर्पण होयवाक संगहि ई सभ मनोरंजक, नैतिक ओ वौद्धिक विकासकारक तथा आध्यात्मिक प्रेरणासँ सम्पन्न अछि। किछुए कलापूर्ण रचनामे यथार्थ ओ आदर्शक एहन परस्परानुमोदित सामरस्य भेटि सकैत अछि। खास कऽ जखन हमरालोकनिकेँ ई वुझवामे अबैत अछि जे एहि पुरुष लग उपन्यासकारक रूपमे चमकवाक कोनो योजना नहि छलनि आ ई केवल अवसरक अनुकूल मांग अयले उत्तर रचना करैत छलाह तँ हिनका वास्तवमे एक गोट महान लेखक मानवामे कनेको असौकर्य नहि होइत अछि आ इच्छा होइछ जे हिनक अभिनन्दन करी।

छमाण आठ गुण्ठ, मामू तथा ***प्रायश्चित*** फकीरमोहनक सामाजिक कृति थिक आ ***लछमा*** एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास। ई समस्त कृति एहि कुशल रचनाकारक सहज ओ वस्तुनिष्ठ प्रवृत्तिक चमत्कारपूर्ण उदारहण थिक।

अध्याय 13

यथार्थ भारतीय चरित्रक अभ्युदय

छमाण आठ गुण्ठहिक जकाँ *लछमा* सेहो *उत्कल साहित्य* मे 1901 सँ 1903 धरि धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित होइत रहल। ओहि वर्ष उड़ीसामे अँग्रेजक प्रभुत्वक ठीक सए साल वाद उड़ियाभाषी सम्पूर्ण क्षेत्रसँ कटकमे प्रतिनिधिलोकनि जमा भेल छलाह। ईलोकनि उड़ियाभाषी समुदायकेँ एक प्रशासनक अन्तर्गत सम्मिलित करबाक मांग रखने छलाह। एहि तथ्यक अछैतो जे ई एकगोट ऐतिहासिक उपन्यास थिक आ राष्ट्रीय भावनासँ ओतप्रोत वातावरणमे लिखल गेल अछि, फकीरमोहनक *लछमा* अभद्र ओ प्रदर्शनपरक अन्धदेशभक्तिक दिस कनेको उन्मुख नहि करैछ।

यद्यपि *लछमाक* लेखक हिन्दू छथि तथापि एकर अन्तमे उत्पीड़क हिन्दू वार्गी समुदाय पर मुस्लिम नवाव अलीवर्दी खाँक विजय देखाओल गेल अछि। एहिमे फकीरमोहनक रचनात्मक वस्तुनिष्ठता चरम विन्दु पर अछि। एहि उपन्यासमे हिन्दू आ मुसलमान केवल पात्रेक रूपमे अवैत जाइत छथि आ एक दोसरा पर प्रतिक्रिया करैत छथि। ई लोकनि परस्पर विरोधी हिन्दू आ मुस्लिम सम्प्रदायक विश्वास आ पद्धतिक प्रतिनिधिक रूपमे चित्रित नहि भेलाह अछि। संकटमे पड़ल मुसलमानलोकनिकेँ जाहि गंभीर सहानुभूतिक संग ई हिन्दू लेखक चित्रित कयलनि अछि, से वस्तुतः अद्‌भुत अछि। दोसर दिस भारतवर्षक पूर्ण कल्याणक उद्‌देश्यसँ लेखक जतऽ आवश्यक वुझलनि, हिन्दू आ मुसलमान दूनू समुदायक लोककेँ हुनक अधलाह कर्मक हेतु दंडितो चित्रित कयलनि अछि।

एहि समस्त तथ्य पर विचार कएला उत्तर एहि लेखकक अभिमतमे *लछमाकेँ* आधुनिक भारतीय साहित्य मध्य अखिल भारतीय स्तर ओ प्रकृतिक किछु वास्तविक रचनामे प्रथमे स्थान पर परिगणित कयल जा सकैछ। जँ आजुक भारतीय वुद्धिजीवीलोकनि अपन तथा अपन रचनाकेँ वास्तविक वस्तुनिष्ठताक संग विश्लेषित करथि तँ ई वूझव कनेको कठिन नहि होयतनि जे भारतमे लिखित किछुए ग्रन्थ वस्तुतः भारतीय अछि। कालिदास आ वाल्मीकिक परम्परामे किछुए लेखककेँ भारतीय कहल जा सकैत छनि। हमरा लोकनि श्रेष्ठ बंगाली, तेलुगूभाषी आ मराठीभाषी भऽ

सकैत छी। मुदा हमरालोकनिमे किछुए गोटे सर्वोत्कृष्ट दृष्टि, क्षमता आ लक्ष्यक माध्यमे भारतीय कहयवा जोगर प्रभाव रखैत छी। वंकिमचन्द्रक तँ कोनो गप्पे नहि, रवीन्द्रनाथो वहुत हदधरि वंगाली अथवा हिन्दुत्वक स्तरसँ उपर नहि उठि सकलाह। एहि परिप्रेक्ष्यमे देखला पर आइसँ सत्तरि वर्ष पूर्व रचित ***लछमा*** आधुनिक भारतीय साहित्यक उत्कृष्ट रचना कहल जा सकैत अछि। एहि उपन्यासक कथासार निम्न प्रकारक अछि :

अठारहम शताव्दीक अन्तिम चरणमे तीर्थाटन करऽवला पुरुप ओ स्त्रीलोकनिक एकटा दल जगन्नाथ तीर्थक पैघ दूरीक श्रमसाध्य यात्रा समाप्त कऽ वंगाल ओ उड़ीसाक उत्तरी-पूर्वी सीमा दऽ कऽ जा रहल छल। दलक सभ गोटे घोड़ा पर सवार छलाह। सभक लग आक्रामकलोकनिक संभाव्य गुप्त आक्रमणक प्रतिरोधक हेतु पर्याप्त हथियार छलनि। ओहि अराजक समयमे आक्रमणक घटना ओहि क्षेत्रमे सर्वसामान्य छल।

यात्रादलक दुर्भाग्यें जखन ई दल वंगाल-उड़ीसाक सीमा पार कऽ चुकल छल, तखनहि मराठा घोड़सवारक एकटा झुण्ड एकरा सभ पर आक्रमण कऽ देलकैक। एहि भिड़न्तमे तीर्थयात्रीलोकनि पूर्णतः परास्त कऽ देल गेलाह। हिनकालोकनिक पाइकौड़ी आ सामान सभ लूटि लेल गेलनि। सभगोटे परस्पर अलग-थलग भऽ गेलाह। रातिक वढ़ैत अन्हारमे यात्रीलोकनि इहो ने वूझि सकलाह जे हुनक आन संगी सभ कोम्हर गेलथिन आ हुनकालोकनिक संगे की घटित भेलनि।

लूटिक एहि स्थलसँ सटले थोड़ेक दूर पर रायवनिञाक किला छलैक। एकर जंगलाह खण्डहर एखनो विद्यमाने अछि। ई किला वालासोर जिलाक आधुनिक शहर जालेश्वरसँ दू माइल पर अछि। ओहि समय ओहि किला पर वैरीगंजन मान्धाता सामन्तराय राघवरतसिंहक अधिकार छलनि। ई एकगोट शक्तिशाली खण्डायत प्रमुख छलाह जकरासँ मुसलमान ओ मराठा दूनू सन्धि करवाक हेतु खूव इच्छा रखैत छल। ***राजा*** आ ***रानी*** दूनू अपन प्रजाक वीच खूव लोकप्रिय छलाह। ओहि हिंसा ओ लूटिक परिवेशमे ईलोकनि दयालुता ओ सुसंस्कारक हेतु प्रख्यात छलाह। मुख्यतः रायवनिञाक वहादुर पाइकेक सहायता पावि अलीवर्दी कुख्यात ***वार्गी*** नेता भास्कर पंडितकेँ सुवर्णरेखा नदीक कछेरक लगपास धरि भगा देने छल।

एक दिन प्रातःकाल रायवनिञामे स्थित राघवरतसिंहक दरवारीलोकनि अत्यन्त चकित रहि गेलाह। ओ लोकनि देखलनि जे जंगलसँ राजाक आदमी सभ एकटा रूपवती ग्राम्या वालाकेँ पकड़ि कऽ अनलनि आ ***राजाक*** समक्ष ठाढ़ कऽ देलनि। कन्या घवरायलि छलि आ ककरो प्रश्नक कोनो जवाव नहि दऽ पवैत छलि। तैँ ओकरा ताकछेमक हेतु वत्सला ***रानी*** लग अन्तःपुर पठा देल गेलैक। क्रमशः ई स्पष्ट होइत छैक जे तरुणीक नाम लछमा छलैक आ ओ मराठा वार्गीलोकनिक दल द्वारा तीर्थयात्री दल पर निकट अतीतमे कयल गेल आक्रमणक फलस्वरूप दुर्भाग्यसँ वचि गेल लोकसभमे एक छलि।

एहन लगैछ जे सौन्दर्यसम्पन्न ओ सद्गुणसँ युक्त लोककेँ दुःख पछोड़ धयनहि रहैत छैक। वेचारी लछमाकेँ रायवनिञाक किलामे पैतृक संरक्षण ओ सुविधा भेटला किछुए दिन भेल छलैक आ कि मराठा दूत पंडित शिवशंकर मल्लवीर शक्तिशाली खण्डायत राजा लग पहुँचल। ओकर उद्देश्य छलैक राजाकेँ अलीवर्दीक विरोधमे नागपुरक भोंसलाक संग सन्धिवार्त्ताक हेतु तैयार करव।

एहि उपन्यासक एकगोट सम्पूर्ण अध्याय सर्वाधिकार सम्पन्न मराठा राजदूत, जे पाठकलोकनिकेँ शिवाजीक विद्वान ब्राह्मण राजदूत हनुमंतेक स्मरण करा दैत अछि, आ रायवनिञाक वैरीगंजन मान्धाताक दरवारक प्रतिनिधि धाराप्रवाह व्याख्याता विद्वान वनमाली वाचस्पतिक वीच अत्यन्त मनोरम वादविवादकेँ समर्पित अछि। जगन्नाथक तीर्थयात्री लोकनिक निःसहाय दल पर करुणाजनक वर्वर हमलाक कथा जे हुनक स्मरणशक्तिमे एकदम ताजा छलनि तथा लछमाक दुःखद छवि जे हिन्दू पर हिन्दूएलोकनिक अत्याचारसँ उत्पीड़नक करुण अवशेष छल, किलाक भीतर वाचस्पतिकेँ शिवशंकरक इस्लामविरोधी तर्क सभकेँ निरस्त करवामे समर्थ वनबैत अछि । ओ सावित कऽ देलनि जे स्थानविशेषक सामान्य नर ओ नारीक हेतु कल्याणकारी प्रशासनक आगाँ धर्मक स्तवन पूर्णतः निराधार होइत छैक। हुनक इहो कहव रहनि जे मराठा लुटिहारा सभ उड़ीसाक पैघ ओ असुरक्षित ग्राम्य प्रदेशकेँ पूर्वहि खाकमे मिला देने छल। आगू ओ इहो जनौलनि जे अत्याचारकेँ कखनो माफ नहि कयल जा सकैछ, खाहे ओ अपने धर्मावलम्बीलोकनि द्वारा किएक ने कयल गेल हो ? ततःपर ओ वुझौलनि जे नवद्वीपक अपन हालेक यात्रामे ओ एकटा श्वेत प्रजातिक क्रिस्चियन पुजेगरीसँ कलकत्तामे गप्प कयने छलाह। ओकर मानवतावादी दृष्टिकोण आ भगवद्भक्तिसँ ओ अत्यन्त अभिभूत भऽ गेल छलाह। सात समुन्दर पारसँ आयल ई नवीन प्रजाति अपन नैतिक श्रेष्ठताक कारणेँ हिन्दू आ मुसलमान दूनूकेँ असगरे अपन अधीन कऽ सकैत अछि जखन कि ई दूनू समुदाय एक दोसराक प्रति अमानवतावादी क्रियाकलापमे लागल रहलासँ दुःख पावि रहल अछि आ नष्ट भऽ रहल अछि।

मराठा राजदूत रायवनिञाक दरबारसँ खाली हाथ घुरि गेल मुदा ओ ओलि सधेबाक निश्चय कऽ लेलक। बदला लेवाक समय आवऽमे सेहो देरी नहि भेलैक। हठधर्मी खण्डायत राजाकेँ राजनीतिक सवक सिखयबाक लेल नागपुरसँ एक गोट पैघ सैन्य अभियान कूच कऽ देलक किएक तँ ओ शक्तिशाली भोंसला द्वारा प्रस्तावित दोस्तीक बढ़ाओल हाथसँ हाथ मिलयबाक कार्यकेँ अस्वीकृत करबाक उद्दंडता प्रदर्शित कयने छल। अप्रत्याशित रूपेँ मराठा सैनिकलोकनि तखने रायबनिञा जूमि गेलाह जखन हुनक प्रतिरोधी शक्ति सर्वथा अव्यवस्थित छल। वस्तुतः रायवनिञाक सेना बंगालक कोनो सुदूरवर्त्ती युद्धक्षेत्रमे अलीवर्दीक सहायताक हेतु पठा देल गेल छलैक।

परिणामतः ऐतिहासिक किला दुश्मनक हाथमे चलि गेलैक। एकर स्वाभिमानी राजा आ वनमाली वाचस्पति मराठालोकनिक वन्दी वना लेल गेलाह। वादमे राजा वीरतापूर्वक मृत्युकेँ वरण कयलनि। रानी नदीमे कूदि कऽ प्राणत्याग कऽ लेलनि। मुदा मरवासँ पूर्व ओ लछमाकेँ मराठा अत्याचारीक पहुँचसँ दूर कऽ देने छलीह तथा ओकर वाह्य वस्त्रमे किछु सोनाक मोहर सेहो वान्हि देने छलीह। ब्राह्मण रक्त होयबाक कारण वनमाली वाचस्पतिक गर्दनि नहि उतारल गेल।

युद्धक स्थिति आव मराठालोकनिक अनुकूल वदलि गेल छल। अलीवर्दीक सेना क्रमशः वंगालक अन्तःप्रदेशमे स्थित कटवा धरि खेहारि देल गेल छलैक। मुदा तावत् धरि दूनू दिसुक सेना तीन वर्षक निरन्तर युद्धसँ थाकि चुकल छल। सन्धिवार्त्ताक हेतु भेटघाँट आव केवल औपचारिकते धरि सीमित भऽ गेल छलैक। भास्कर पंडित ओ अलीवर्दी खाँ दनू गोटे सेनाक युद्धरेखाक मध्यमे स्थापित रेशमी मण्डपमे भेट करव स्वीकार कऽ लेलनि।

एहि बीच एकटा तरुण ओ सुन्दर पानवला मराठा कैम्पक प्रत्येक व्यक्तिक प्रिय भऽ गेल छल। ई एक युद्धक्षेत्रसँ दोसर युद्धक्षेत्र धरि मराठालोकनिक पाछू लागल रहैत छल। अलीवर्दीक खीमामे वादलसिंह नामक एकगोट सैनिक नवे वहाल भेल छलैक। इहो अत्यन्त लोकप्रिय भऽ गेल छल। कोनो संकटकालीन क्षणमे ओकर साहस ओ त्यागभावना अलीवर्दीक गर्दनि पर्यन्तकेँ वचा लेने छलैक। एही कारणेँ ओकरा तुरत पदोन्नति दऽ कऽ नवाबक व्यक्तिगत संरक्षकक उत्तरदायी पद पर आसीन कऽ देल गेल छलैक। एहिसँ सभटा मुसलमान अधिकारीलोकनि आत्मग्लानिमे पड़ल रहैत छलाह।

नियत समय ओ दिनमे भास्कर पंडित कटवाक रेशमी खीमामे स्वागतक हेतु प्रवेश कयलक। नवाब अलीवर्दी स्वयं ओकर स्वागत कयलकैक। अपन नीक भावनाकेँ प्रदर्शित करवाक हेतु ओ भास्करपंडितकेँ आलिंगनवद्ध कऽ लेलकैक। मुदा जखन ई दूनू उच्चाधिकारी अपन एहि कूटनीतिक आलिंगनसँ फराक भऽ रहल छलाह, तखने दू गोटे भास्कर पंडितकेँ लपकि कऽ धऽ लेलकैक आ संयुक्त चपल आक्रमण कऽ ओकरा मारि देलकैक। ई दूनू गोटे आन क्यो नहि अपितु मराठा कैम्पक तरुण ओ सुन्दर पानवला तथा अलीवर्दीक विश्वसनीय अंगरक्षक युवक हवलदार बादलसिंह छल। वादलक संकेत पर नबावक प्रतीक्षारत घोड़सवार सेना अनवधान मराठा सेनाकेँ नीक जकाँ पीसि देलकैक।

मोने मोन अत्यधिक प्रसन्न रहलाक वादो महान नबाव पहिने तँ एहि राजनीतिक हत्यासँ आश्चर्यचकिते रहि गेल। ओ वादलसिंहकेँ वंगालक वाणविष्णुपुर परगनाक नवीन बादशाह घोषित कऽ देलकैक। ओ पानवलाकेँ सेहो पुरस्कृत करऽ चाहैत छल। मुदा पानवला पुरस्कारक रूपमे अपन वहिनिक विवाहक स्वीकृति हत्याक सहभागी मित्रसँ लेबाक अतिरिक्त किछु नहि चाहैत छल। एहि पर समस्त उच्चाधिकारी लोकनिक महत्वपूर्ण सभा अकचकायले रहि गेल।

आश्चर्यक चरम अवस्था तँ तखन आर सान्द्र भऽ गेलैक जखन तरुण बादलसिंह एहि उत्तेजक प्रस्तावकेँ दृढ़तापूर्वक नकारि देलकैक। ओ बाजल जे ओकर बिआह सुन्दर आ गुणवती महिलासँ भेल छलैक। ओहि महिलाकेँ ओ जीवनभरि दृढ़तापूर्वक एकपत्नीव्रत रहवाक वचन देने छलैक। यद्यपि ओकर ओ तरुणी पत्नी बहुत पहिने मरि गेलि छैक तथापि अपन प्रतिज्ञाकेँ ओ एखनो अक्षुण्ण राखऽ चाहैत अछि।

नबाव ओ आन सभ गोटेकेँ ई जानि आश्चर्य भेलनि जे पानवला आ बादलसिंह दूनू रातारातो मुर्शिदाबादसँ पड़ा गेल। किछु दिनक वाद गयामे पवित्र फल्गू नदीक वालु पर दूटा वूढ़ महिला कोनो पंडाक वातकेँ दोहरवैत एहि अस्पष्ट शब्दावलीकेँ अकानि आश्चर्यमे पड़ि गेलीह :'हम लछमा देवी, धेओंकनाल सिंह वर्माक पुत्री...'

ठीक तखने ओलोकनि दोसर दिससँ अबैत ई आवाज सुनलनिः 'हम, बादल सिंह, हरिभजन सिंह वर्माक पुत्र ...'

ई दूनू महिला आव एहि तरुण आ तरुणीक पछोड़ धऽ लेलनि। हिनका लोकनिक घोकचल गाल पर प्रसन्नताक नोर चूबि रहल छल। ई दूनू विह्वलतापूर्वक अपन उद्गार प्रकट करैत कहलथिन : 'हे भगवान ! हम कतेक भाग्यवान छी। की ई हमर प्रियदर्शिनी लछमा नहि थिकी ! ' 'अरे वाह! वस्तुतः ई हमर जीवनधन, अतिप्रिय बादले थिक।'

धेओंकनाल सिंह आ हरिभजन सिंह उत्तरप्रदेशक रूहेलखंड क्षेत्रक दुइ गोट राजपूत छलाह। अपन जवानीक दिनमे ईलोकनि मुसलमान डकैतलोकनिक संगी बनि गेल छलाह। हिनकालोकनिक पत्नी पवित्रात्मा हिन्दू महिला छलथिन। ईलोकनि अपन पतिक कुकर्मकेँ कहियो स्वीकृति नहि दैत छलथिन। हिनकालोकनिक पुत्र ओ पुत्री क्रमशः बादल ओ लछमाक जखन विआह भऽ गेलनि तकर बादेसँ दूनू गोटे आत्मीय बहिनपा भऽ गेलि छलीह। दूनू महिला क्रमशः अपन-अपन पतिकेँ कान्तासम्मित उपदेशपूर्वक बुझवैत-सुझवैत रहलीह आ हुनकालोकनिक अधलाह प्रवृत्ति पर क्रमशः विजय प्राप्त करैत गेलीह। दूनू अपन अपन पतिकेँ अपराध ओ पापक मार्गसँ हटबैत रहलीह। प्रायश्चितक रूपमे ई दूनू अपन अपन पतिकेँ अखिल भारतीय तीर्थयात्रा पर चलबाक लेल तैयार करा लेने छलीह। मुदा दूनूक पति बंगाल ओ उड़ीसाक सीमाक निकट गोदीखालमे हिन्दू बार्गीलोकनिक संग भिड़न्तमे मारल गेलाह। एहि तथ्यक वर्णन पूर्वहि कयल जा चुकल अछि। रूहेलखंडस्थित हिनक गाममे हिनकालोकनिक अनुपस्थितिक अवधियेमे हिनकासभक सभटा सम्पत्ति मुसलमान डकैत सभ लूटि लेलकनि। लछमा आ बादल पूर्वकथित भिड़न्तमे बचल खुचल भाग्यशाली व्यक्तिमे छलाह। ई दूनू गोटे व्यक्तिगत रूपेँ मराठालोकनिक द्वारा अपना पर कयल गेल जुलुमक बदला लेवाक प्रण कयलनि। रायबनिञा किला ध्वस्त भेलाक बाद लछमा पुरुष पान बेचनिहारक रूप धऽ मराठा सेनामे मिझरा गेलि । एहि कार्यमे हुनका रायवनिञाक रानी द्वारा वाह्यवस्त्रक कोनमे गुप्त रूपेँ वान्हल सोनाक मोहर सेहो लगबऽ पड़लनि। क्रमशः घाओ छुटि गेला पर बादल अलीवर्दीक मुसलमान सेनामे

भर्त्ती भऽ गेलाह। एहि वीच ई दूनू यैह सोचैत रहल छलाह जे हिनकालोकनिक गामसँ दू वर्ष पूर्व जे तीर्थयात्री दल चलल छलैक ताहिमे वैहटा एहन अभागल छथि जे जीवित बचि गेल छथि। फकीरमोहन एहि उपन्यासमे नाटकीय औत्सुक्यक अद्‌भुत सामर्थ्यक प्रदर्शन कयलनि अछि। एकर उदाहरणक रूपमे एहि घटनाकेँ देखल जा सकैत अछि। लछमा, हुनक माय आ सासु एके गाममे भरि राति वितौलनि मुदा एक दोसरासँ भेट करवाक हेतु तरसैत रहलीह। स्वभावतः गयामे हिनकालोकनिक अन्तिम पुनर्मिलनक हर्षकेँ नीक जकाँ अनुभव कयल जा सकैत अछि।

उपसंहार मे फकीरमोहन रोमांससँ ओतप्रोत ओ पुरुषार्थमय युगल लछमा ओ वादलकेँ अपन जीवनक वचल समय वाणविष्णुपुरक ***राजारानीक*** रूपमे वितवैत चित्रित कयलनि अछि। नवाव अलीवर्दी रायवनिञाक किला लछमाकेँ दान दऽ देलथिन। अपन मानवीय सद्‌गुण, नीक प्रशासन ओ उदारताक कारणेँ ई नव ***रानी*** आ ***राजा*** लोकगाथापरक नायक-नायिका भऽ गेल छथि।

तथापि रायवनिञा ओ मुर्शिदावादहिक जकाँ वाणविष्णुपुरक समृद्धि ओ कीर्त्ति सेहो रानी लछमा आ राजा वादलसिंहक मृत्युक वाद समाप्त भऽ गेल। तेँ ई महान लेखक संसारक शाश्वत परिवर्त्तनशीलता पर एकगोट तर्कसंगत टिप्पणी करैत एहि उपन्यासकेँ समाप्त कयलनि अछि। प्रसिद्ध संस्कृत श्लोकमे उद्धृत ओहि टिप्पणीक अर्थ अछि :—

त्यागि देल यादवपति जकरा
कतऽ आइ ओ मथुरा धाम ?
उत्तर कोशल सौभाग्यो कत
विगत जखन अपने श्रीराम ??
मानव ! शान्तचित्त भऽ वैसू
देखू नित प्रकृतिक ई खेल।
सव किछु क्षरणशील अछि जग मे
शाश्वत की कहियो किछु भेल ??

अध्याय 14

मेघओन जीवनसन्ध्या

फकीरमोहनक प्रशंसित आत्मचरितक अन्तिम अंशमे कहल गेल अछि : 'जीवनक एहि अन्तिम दिवस सभमे देशवासीलोकनि विनम्र राष्ट्रसेवा तथा कथित रूपेँ अपन भाषाकेँ समृद्ध करऽवला रचना सभक हेतु हमरा खूब पुरस्कृत कयलनि अछि। सन् 1916 मे सुसंस्कृत वामड़ा रियासति हमरा ***सरस्वतीक*** उपाधिसँ विभूषित कयने छल। 1917 ई. क उड़ियाभाषी कांग्रेसक शीतकालीन अधिवेशनमे हमरा अध्यक्षताक हेतु आमंत्रित कयल गेल छल। अपन देशवासीलोकनिक द्वारा देल एहि अपूर्व सम्मानसँ बेसीक हमरा कहियो इच्छो ने रहल। आब हम अत्यन्त आदरपूर्वक अपन स्त्रीपुरुष पाठक तथा समस्त देशवासीक प्रति प्रणति निवेदन करैत विदा होइत छी।'

शीघ्रे ई विनीत वृद्ध प्रतिभा बालासोरक एकान्त गार्डेन हाउसमे 14 जून 1918 केँ गोलोकवासी भऽ गेलाह। तथापि अपेक्षित सम्मान ओ कीर्त्तिक अछैतो फकीरमोहनक ई दुर्भाग्य छल जे हुनक वृद्धावस्था निरन्तर शारीरिक ओ मानसिक यातनासँ भरल रहल।

एहिठाम ओहि वृद्ध नायकक व्यक्तिगत कष्टसँ सम्बद्ध एकगोट एहन सजीव घटनाक वर्णन करैत छी जकरा सुनि कऽ ककरो हुनका प्रति सहानुभूति भऽ सकैत छनि। ई घटना हुनक आत्मचरितक अन्तिमसँ पूर्ववला परिच्छेदसँ गृहीत अछि।

"1915 ई. क अन्तिम समयमे उड़ीसाक निःस्वार्थ सेवक गोपवन्धुदास दुइ दिन धरि हमरा संगे रहलाह। ओहि समय ओ बिहार ओ उड़ीसाक गवर्नर काउन्सिलक सदस्य छलाह। पटनासँ घुरैत काल ओ बालासोरमे यात्राकेँ विराम देने छलाह। जाहि दिन ओ विदा होइतथि तकर प्रातःकाल हम हुनका अपन रोगशयूया लग चुपचाप ठाढ़ देखलियनि। हुनक दृष्टि हमरा पर जमल छलनि आ आँखिसँ नोर चूवि चूवि कऽ गाल पर होइत नीचा वहि रहल छलनि। अपन भावना पर नियंत्रण करैत ओ मन्द स्वरेँ बजलाहः 'अपन एहि दूइ दिनुक सहवासमे हम अहाँक परिस्थितिसँ पूर्णतः अवगत भऽ गेल छी। अहाँ आब कमजोर, असहाय आ असगर छी। अहाँ केँ ओतवे

सुख उपलब्ध अछि जे अहाँक नोकर अहाँ कें दऽ पवैत अछि। उचित ताकछेमक हेतु कोनो निकट सम्बन्धीक अहाँक लग रहब परमावश्यक अछि'।''

फकीरमोहनक अन्तिम किछु वर्ष गंभीर शारीरिक कष्टक श्रृंखला सभसँ भरल छलनि। हुनक नस सभ स्थायी रूपसँ फुलि गेल छलनि, जकर कारणें हुनका सदिखन ओछाओन पकड़ने रहऽ पड़ैत छलनि आ अपार कष्ट होइत रहैत छलनि। एक वेर धोखासँ ओ गंधकाम्लक संतृप्त खोराक पीवि लेने छलाह आ लगभग मरिये गेल छलाह। एहि यातनापूर्ण स्थितिमे अनेक सप्ताह धरि रहलाक बाद जखन ई स्वस्थ भेल छलाह कि टीस आ वेचैनीसँ भरल अत्यन्त कष्टदायक विषाह घाओ भऽ गेल छलनि।

जीजीविषा

अपार मानसिक पीड़ासँ ग्रस्त ई वीमार वृद्ध समय समय पर आश्चर्यजनक उत्साहक प्रदर्शन करैत रहैत छलाह। जीवनक प्रति हिनक उत्साह लगभग ओहिना बनल रहल, जेना कोनो वच्चाकें रहैत छैक। ओहि समस्त वस्तुक संग ई अपन समीकरण वना लैत छलाह जे स्फूर्त्तिदायक ओ आशापूर्ण रहैत छल, जे राष्ट्रीय प्रगतिक व्याख्या करैत छल किंवा मानवक दैन्य घटयवाक कारण भऽ सकैत छल।

एहि शताब्दीक प्रथम दशकमे पंडित गोपवन्धुदासक प्रेरक नेत्तृत्वमे विश्वविद्यालय शिक्षाप्राप्त उड़िया वुद्धिजीवी वर्गक एकटा समूह पवित्र पुरी शहरसँ एगारह माइल उत्तर साखीगोपाल नामक गाममे एक गोट ग्राम्य विद्यापीठक स्थापना कयने छल। उच्च शिक्षाप्राप्त शिक्षकलोकनि एतऽ अत्यल्प वेतन पावियो कऽ अत्यन्त संतुष्ट रहैत छलाह। कारण ई छल जे ओ सभ अपन राष्ट्रक पुनर्निमाणमे लागल छलाह। एक दशक अथवा किछु अधिक काल धरि ई विद्यापीठ उड़ीसाक जीवन्त सांस्कृतिक केन्द्र बनल रहल आ समस्त उड़ियाभाषी क्षेत्रमे अत्यधिक आशाक संचार करैत रहल।

फकीरमोहन मृत्युसँ एक वर्ष पूर्व अर्थात् जखन ओ 75 वर्षसँ अधिक आयुक भऽ गेल छलाह, सत्यवादी स्कूलमे देखि पड़ैत छथि। यद्यपि शिक्षकलोकनि हिनका प्रति गहन सम्मानक भाव रखैत छलथिन तथापि एतऽ ओ सैकड़ो छात्रक बीच एकटा छात्रक सदृशे व्यवहार करैत देखि पड़ैत छथि। ओ धियापुताक संग खेलैत छलाह, काव्यपाठ प्रतियोगितामे भाग लैत छलाह, पलथी मारि कऽ ओकरे सभक संग भोजन करैत छलाह तथा अत्यधिक प्रसन्नताक संग अपन ऐंठ बासन सेहो धो लैत छलाह।

ओ ओहि विद्यालयमे तीन दिन धरि रहल छलाह। प्राकृतिक वातावरण तथा राष्ट्रीय उद्देश्यक हेतु युवावर्गक समर्पण भाव देखि कऽ ओ वेस प्रभावित भेल छलाह। एक वेर ओ शिक्षकलोकनिक संग मसखरी करैत वाजल छलाह, 'अपनेलोकनिकें वूझल अछि जे हम निरक्षर आदमी छी। एहिठाम अँग्रेजी भाषाक प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु हम पाटी धऽ सकी आ अपनेलोकनिक चरणक छत्रच्छायामे अन्तेवासी छात्र बनि सकी, ताहि सम्बन्धमे अपनेलोकनिक की विचार अछि ?'

ओहिठामसँ विदा होइत काल जे शब्द ओ कहलनि से वस्तुतः एकगोट महान राष्ट्रभक्त भविष्यवक्ताक कथन अछि। ओ कहने छलाहः 'अहाँ सभ गोटे एतऽ स्वतंत्रताक एकगोट वास्तविक गाछ रोपलहुँ अछि। हम कल्पना करैत छी जे ओ गाछ शीघ्रे वढ़त, ओहि पर फूल अओतैक आ खूव फऽड़ो धरतैक। गोपबन्धु सर्वाधिक निःस्वार्थ राष्ट्रभक्त छथि। हिनका राष्ट्रसेवाक सुदीर्घ अनुभव छनि। यैह कारण अछि जे ओ अहाँसभकेँ पुनर्निर्माणक हेतु आवश्यक समस्त प्रकारक नीक परियोजना सभमे लगा देलनि अछि। हमरा दुःख अछि जे हम आव अधिक दिन धरि नहि रहव जाहिसँ अपन देशकेँ स्वतंत्र देखि सकितहुँ। मुदा हमरा विश्वास अछि जे ई संसार छोड़बासँ पहिने अहाँ सभ स्वतंत्रताक फऽड़केँ चीखि सकव।'

शान्तिकाननक संत

वालासोरमे विताओल हुनक अन्तिम वर्षसभमे समस्त प्रकारक क्लेशक अछैतो फकीरमोहनक छवि एकगोट एहन संतक छल जे प्रकृति ओ समाजक संग तादात्म्य स्थापित कऽ लेने छल। वालासोरेक श्रीमती वेला घोष ई वर्णन छोड़ि गेल छथि।

ओ लिखने छथिः ''ई वात हम अपन वाल्यावस्थाक स्मृतिक आधार पर कहि रहल छी। ओहि समय हम नओ अथवा दस सालक रहल होयव। हम अपन माइक संग वालासोरक कोनो विशिष्ट सज्जन पुरुष लग गेल रही। घर एकदम साधारण आ आधुनिक तामझामसँ रहित छल। मुदा हम ओहि घरक चारूकात लागल सुन्दर फुलवाड़ीकेँ देखि कऽ अत्यन्त अभिभूत भऽ गेल रही। ओहिमे अनेक प्रकारक सर्वथा असाधारण विदेशी गाछ-वृक्ष सभ लागल छल। वाटिकाक नक्शा अत्यन्त चतुरतासँ बनाओल गेल छलैक। विभिन्न रंगक फूल ओ लत्तीक संगहि अनेक प्रकारक औषधीय तथा सजावटिवला गाछक कारणेँ ओ फुलवारी वहुत आकर्षक छल। सम्पूर्ण वातावरण तीक्ष्ण सौन्दर्यसँ चमचमा रहल छल। यावत् हमर वाल मन चारूकातक गाछ-वृक्षक विभिन्न सुन्दर-सुन्दर रंगक एकत्र सौन्दर्यमे नीक जकाँ रमि गेल छल, तावत् एकटा अत्यधिक नाम व्यक्ति शनैः शनैः टहलैत हमरालोकनिक सोझाँमे आवि गेल छलाह। हमरा वुझना गेल जेना एहि जंगल-झाड़क वीचमे मानवरूपमे एकटा गाछे आवि गेल अछि। ओहि मानवक सम्पूर्ण व्यक्तित्वमे ओहिठाम व्याप्त प्रकृतिक संग अद्भुत सामरस्य छलैक। सूर्योदयकालीन पृथ्वी माताक सदृश ओहि पुरुषक मस्तिष्क पर पसरल शान्ति जेना सर्वाधिक आकृष्ट कऽ रहल छल। हम दूनू गोटे हुनक गपशप आ व्यवहारसँ शीघ्रे अत्यन्त मुग्ध भऽ गेल छलहुँ। ओ हमरालोकनिकेँ वाटिकामे घुमवय लगलाह। ओ प्रत्येक गाछक इतिहास, नाम, प्राकृतिक निवासस्थान, कोना ओ ओकरा अनने छलाह, ओकर औषधीय तथा आन आन गुणक वर्णन करैत रहलाह। गाछीमे चारूकात घुमलाक वाद हमरालोकनि घुरलहुँ आ हुनक मकानक एकटा कोनमे जा कऽ वैसि रहलहुँ। ओ निरन्तर गप्प करैत रहलाह मुदा एहि वृहत्तर समयावधिक वाद ई मोन नहि पड़ैत अछि जे कोन कोन विषय पर की सभ गप्प भेल। मुदा जखन हम हुनक आशीष ग्रहण करवाक हेतु पैर छुलियनि तँ जे अन्तिम शब्द ओ कहने छलाह से एखनहुँ हमरा ओहिना मोन अछि : 'हे हमर बाला

मातृदेवी, अपन मातृभूमि आ मातृभाषा दूनूकें जनवाक प्रयास करू।' जखन हमरालोकनि घर घुरि रहल छलहुं तँ मायसँ वुझवामे आयल जे ओ फकीरमोहन सेनापति छलाह।''

वालासोरक शान्तिकाननक एहि संतक देहावसान 14 जून 1918 कें भेलनि। यद्यपि 'शान्ति कानन' एखन खण्डहर तथा जीर्णशीर्ण अवस्थामे अछि तथापि उड़ियालोकनिक हेतु ई तीर्थस्थल वनल अछि। जे भारतीयलोकनि राष्ट्रीय समन्वयक हेतु जोर शोरसँ हल्ला करैत रहैत छथि, हुनकालोकनिकें ***शान्तिकाननक*** ओहि छोट छीन मंडपक अवश्ये सफल यात्रा करक चाहियनि। एहिठामक कर्त्ताधर्त्ता उदार तथा मानवतावादी संत छलाह आ प्रतिदिन भजन करैत रहैत छलाह। ओकर देवाल सभ पर विश्वक समस्त धर्मग्रन्थक नीक नीक उद्धरण सभ रेखांकित अछि। अर्द्धशिक्षित वालश्रमिक ओ उपेक्षित सामाजिकक रूपमे जीवन आरंभ कयनिहार ओहि व्यक्तिक जीवनक ई अवश्ये उपयुक्त सफलता छल। वस्तुतः सेनापतिक जीवन मानवीय सामथ्र्यक असंदिग्ध वीरगाथाक अतिरिक्त किछु नहि थिक। आधुनिक शिक्षासँ रहित तथा मध्यकालीन वातावरणसँ वाहर भऽ मार्ग वनौनिहार ई व्यक्ति अपना समयमे कमसँ कम उड़ीसामे अपन दृष्टिकोण आ चिन्तनमे सर्वाधिक आधुनिक रूपमे परिणत भऽ गेल छलाह। यद्यपि ई गरीवीमे सम्पोषित भेल छलाह, अस्तित्वरक्षाक हेतु केवल कठिन श्रमक मार्गेटाकें जनने छलाह, दीर्घ अवधि धरि वेरोजगार वनल रहवाक अभ्यस्त रहल छलाह, तथापि अपन जीवनक उत्तरकालमे सर्वाधिक उदार ओ हितकारी मानवक रूपमे सावित भेल छलाह। ओ एकटा एहन घरसँ आयल छलाह जतऽ इर्ष्या, अनैतिकता ओ चारित्रिक पतनकारक नीचताक वास छल। तथापि एहि समस्त महत्वहीन विचारधारासँ ओ अपनाकें ऊपर उठौने रहलाह। अपन चारूकात वेइमानीसँ भरल दुराचारक अछैतो ओ अपना पर आयल दायित्वक निर्वाहमे पूर्णतः कर्त्तव्यनिष्ठ रहलाह। ई अर्द्धशिक्षित आ अर्द्धवुभुक्षित वालश्रमिक अपन कठिन परिश्रमक वल पर परवर्त्तीकालमे अत्यन्त समृद्ध आ सम्मानित व्यक्ति वनि गेल छल। ई सुविधापूर्ण जीवन वितवैत रहल आ मुइलाक वाद प्रचुर सम्पत्ति तथा वहुमूल्य गार्डेन हाउस सेहो छोड़ि गेल। मुदा जे वस्तु एहि केवल डेढ़ साल धरि विद्यालयीय शिक्षा प्राप्त उपेक्षित वालकक हेतु आश्चर्यजनक अछि से ई थिक जे ओ अपन भाषामे नवीन युगक प्रवर्त्तन कयने छल आ एखनो ओही आधार पर अपन भाषाभाषीक दृष्टिमे चिर आधुनिक बनल अछि। वस्तुतः ई हांस एंडरसनक कथा अगली डकलिंगक मानवीकरण अछि। एहि कथामे कखनो तँ ओ सुन्दर वत्तख वनि जाइत अछि आ कखनो रूपांतरित भऽ रूक्ष कोशसँ वाहर भऽ सुन्दर तितलीक रूप धऽ लैत अछि। एही तरहक अद्‌भुत कायान्तरण बालासोरक जहाजघाटक कहियोक कुली बालकमे भेल छल आ अपन ओही कायान्तरणक फलस्वरूप ओ अपन भाषा, साहित्य ओ राष्ट्रीय जागरणकें नवीन जीवन आ आकार प्रदान कयने छल।

* * * * *

117123
9.12.04

पछिला शताब्दीक छठम दशकमे उड़ीसाक तीन गोट उदीयमान बुद्धिजीवी लोकनिक बालासोरमे भेट-घाँट भेल छलनि आ तीनू गोटे आजीवन मित्र बनि गेल छलाह । हिनका लोकनिमे प्रत्येक उड़िया साहित्यमे नव प्रवृत्तिक सूत्रपात कयने छलाह । हिनका लोकनिमे राधानाथ राय ओ मधुसूदन राव उच्चकोटिक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कयलनि आ जीवनमे नीक स्थानो पओलनि । मुदा एहि त्रयीक तेसर सदस्य फकीरमोहन सेनापति (१८४३-१९१८)कैं नीक प्राथमिको शिक्षा नहि भेटि सकल छलनि । जीवन हिनका लेल अस्तित्वक हेतु दीर्घ संघर्ष रहल छल ।

मुदा दुर्भाग्यसँ आधुनिक उड़िया साहित्य ओ उड़िया राष्ट्रवादक प्रवर्त्तकक एकोटा श्रेष्ठ जीवनी उड़ियो भाषामे उपलब्ध नहि अछि । उड़ियामे लिखित हुनक अतिविशिष्ट आत्मचरितक आधार-सामग्रीसँ स्व. डा. मायाधर मानसिंह द्वारा संकलित ई पांडित्यपूर्ण विनिबन्ध फकीरमोहनक साहित्यिक ओ मानवीय छविकैं यथासंभव वस्तुनिष्ठ रखैत रेखांकित करबाक अग्रणी प्रयास थिक ।

फकीरमोहन सेनापतिक जीवनक
जीवन ओ १९म शताब्दीक उड़िया सा
थिक ।

Library IIAS, Shimla
MT 891.451 092 Se 55 M
00117123

Website : http://www.sahitya-akademi.org

ISBN 81-260-1010-X

25 टाका